ISSN 2349-6614

अप्रेल 2022

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

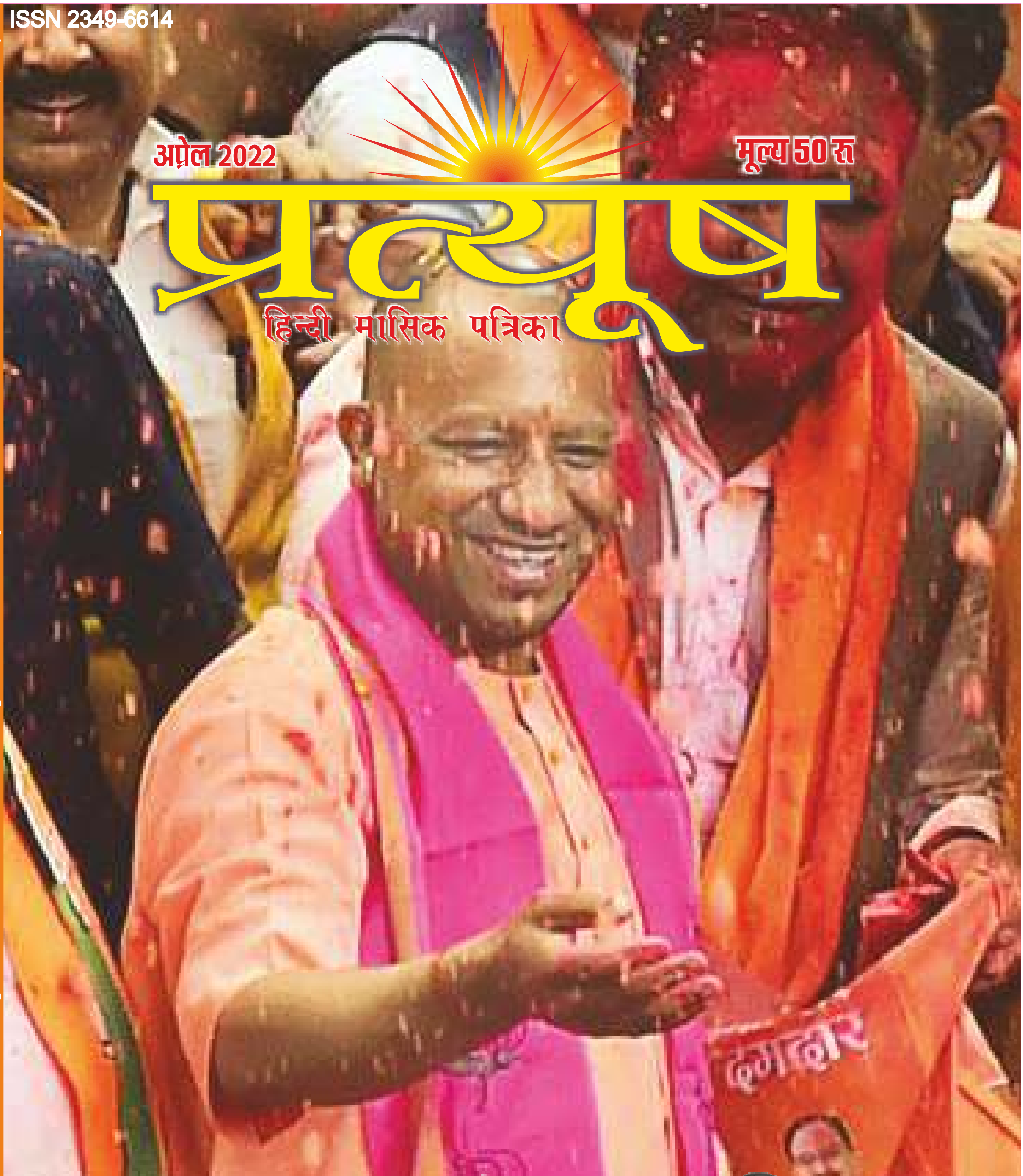

भाजपा ने बचाए चारों गढ़

'आप' ने जीता पंजाब

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 19 अंक 12, Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2021-23 Posting Date: 27th-28th of Every Month RNI No. RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur

Technology Services
ARCGATE
The convergence of Big Data, Cloud, Mobile and Artificial Intelligence (AI)
is transforming enterprises, industries, and the world. And it is just the start.
The products that we have helped build over the years are probably in your pocket.
Dictionary.com is the top reference app in the world
Moneycontrol.com is the top financial app in India
Firstpost iPad app is a Webby Award winner News app
We leverage technology to create solutions that make a true impact.
We build a range of applications leveraging the full benefits of modern architectures,
continuous delivery practices and cloud-enabled platforms.
We are an experienced development partner that you can rely on to deliver
cost-effective full-cycle custom software development services.
G1-11, I.T.Park, M.I.A. (Extn.)
Udaipur – 313003 Rajasthan, India
Contact : +91 77420 92381, +91 77420 92382Rajasthan

नवरात्रि और रामनवमी की हार्दिक शुभकामनाएं

अप्रैल 2022

वर्ष 19, अंक 12

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

कम्प्यूटर ग्राफिक्स Supreme Designs
विकास सुहालका

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डागी
कुलदीप इन्दौरा, कृष्णकुमार हरितवाल
धीरज गुर्जर, अभय जैन
लालसिंह झाला, ओम शर्मा
अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुंदरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

अंदर के पृष्ठों पर...

बढ़ते कदम

जनसेवा ही प्रमुख ध्येय 10

आशंका

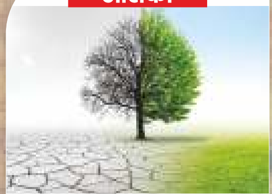

दुनिया कहीं बाढ़ तो कहीं आग से जूझेगी 14

पुरोधा

सामाजिक क्रांति के वाहक अम्बेडकर 16

स्वास्थ्य

दूर रहेगी गर्मी की बीमारियां 22

अलविदा

चला गया लेग स्पिन और गुगली का बादशाह 36

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

TO RISE ABOVE
STEP BY STEP
HIGH SCHOOL
CBSE Affiliation No. : 1730602
STEP BY STEP HIGH SCHOOL
A Coeducational English Medium School
CLASSES FROM PLAY GROUP TO 12TH
New Feature - Play Group, Nursery, Lkg, Hkg at Sector 14
• SECTOR 11, UDAIPUR-313002
Phone : 0294-2483932, 2481567
Email : contact@stepbystephighschool.org
• JOGI KA TALAB, SECTOR 14, UDAIPUR-313002
Phone : 9680520421
Website : stepbystephighschool.org
ADMISSION
OPEN
FOR 2022
"A School where Learning is Fun"

नया जनादेश, नए समीकरण

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव नतीजों से देश में गैर-भाजपा व गैर-कांग्रेस विकल्प खड़ा करने की मुहिम को झटका लगा है। लोकसभा चुनाव के पहले राष्ट्रीय स्तर पर विकल्प तैयार करने की कोशिश में जुटे क्षत्रपों-तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी प्रमुख शरद पवार एवं टीआरएस प्रमुख के चंद्रशेखर राव की महत्वाकांक्षाओं को करारा झटका लगा है।

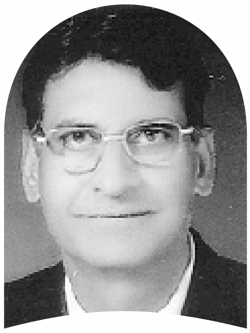

भाजपा ने चार राज्यों में शानदार जीत दर्ज की है। जिसका फायदा जहां उसे भावी चुनावों में मिलेगा, वहीं तत्काल इसका फायदा जुलाई में होने वाले राष्ट्रपति चुनावों में भी होगा। अब एनडीए सरलता से अपनी पसंद के उम्मीदवार को राष्ट्रपति बना सकेगा, जबकि यूपीए इस लड़ाई में भी कमजोर होता नजर आ रहा है। कुछ दल पिछले कई मौकों पर एनडीए के ही संकटमोचक बनकर उभरे हैं। इसलिए राष्ट्रपति चुनाव में मतों की जो थोड़ी कमी रह भी जाएगी, तो इन दलों की मदद से एनडीए उसकी भरपाई कर लेगा। उत्तर प्रदेश में भाजपा की जीत के तीन बड़े कारण रहे। समाजवादी पार्टी के महंगाई और बेरोजगारी जैसे चुनावी विलाप के खिलाफ भाजपा ने कानून-व्यवस्था को मुद्दा बनाया। हर चरण में इसका जिक्र किया गया कि अगर सपा की सरकार आती है, तो राज्य में कानून-व्यवस्था बिगड़ जाएगी। सपा की पिछली सरकार से लोगों की आशंकाओं को बल मिला। दूसरा कारण है, केंद्र व राज्य सरकार की योजनाएं। जिन लाभार्थियों, विशेषकर वंचित तबकों को इन योजनाओं का लाभ मिला, उन्होंने भाजपा पर भरोसा किया। 2017 की तुलना में भाजपा की पैठ गरीबों में ज्यादा दिखी , जिसका अर्थ है कि दलित समुदाय के वोटर बसपा से छिटककर इसकी तरफ आए हैं। भाजपा की जीत की तीसरी वजह डबल इंजन की सरकार है। मतदाताओं ने माना कि केंद्र में मोदी और राज्य में योगी की सरकार होनी चाहिए। राज्य के विकास-कार्यो ने लोगों के इस भरोसे को बढ़ाने का काम किया। केवल उत्तर प्रदेश ही नहीं, उत्तराखंड, मणिपुर और गोवा में भी वोटिंग का लगभग यही पैटर्न रहा। चारों राज्यों में मोदी और भारतीय जनता पार्टी ब्रांड को आधी आबादी का भी जबर्दस्त समर्थन मिला है। इन चारों राज्यों के लोगों ने विकास गतिविधियों को पिछली सरकारों की तुलना में कहीं ज्यादा गंभीरता से धरातल पर उतरते देखा है। उत्तराखंड की सरकार ने जिस तरह रेल कॉरीडोर बनाने की शुरूआत की है, केदारनाथ को जिस तरह संवारा या फिर सड़कें सुधारी इसके साथ ही केंद्र सरकार की प्रधानमंत्री आवास योजना शौचालय, किसान सम्मान निधि आदि का भी असर हुआ है। उत्तराखंड में 2012 के विधानसभा चुनाव से शुरू हुआ मुख्यमंत्रियों के हारने का सिलसिला लगातार जारी है। इस बार भी सत्तारूढ़ पार्टी भाजपा के मौजूदा मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी चुनाव हार गए। राज्य में भाजपा धामी के चेहरे से नहीं बल्कि नरेंद्र मोदी के चेहरे से चुनाव जीती। मोदी ने उत्तराखंड चुनाव के अंतिम चरण में लगातार चार सभाएं कर बाजी को पलट दिया। भाजपा ने जीते गए चारों राज्यों में नेतृत्व परिवर्तन कर कमान पुन: पूर्व मुख्यमंत्रियों को ही सौंपी है।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी खटीमा विधानसभा सीट से प्रदेश कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष भुवन चंद कापड़ी से चुनाव हारे। इसके बाद भी भाजपा 48 सीट हासिल करके फिर से सत्ता में आ गई। उसने 20 सालों का राज्य का यह रेकार्ड तोड़ दिया कि जो पार्टी एक बार सरकार बना लेती है, वह दूसरी बार सरकार नहीं बना पाती। दिल्ली के बाद अब पंजाब में भी आम आदमी पार्टी (आप) का जादू चला है। सत्ता के इस जादुई आंकड़े के बाद आम आदमी पार्टी देश की इकलौती ऐसी क्षेत्रीय पार्टी बन गई है, जिसकी दो राज्यों में सरकार है। पंजाब में पार्टी ने भगवंत सिंह मान को मुख्यमंत्री पद का चेहरा बनाया । हालांकि, यह पूरा चुनाव दिल्ली विकास मॉडल प्रचार के आसपास ही रहा। मतदाताओं ने कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी और शिरोमणिअकाली दल के दावों पर झाड़ू फेर कर पहली बार आम आदमी पार्टी को सत्ता सौंपी है। दिल्ली के विधान सभा चुनाव में अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में आम आदमी पार्टी ने जीत की हेट्रिक बना कर महज अपने कामकाज के बूते पंजाब में मतदाताओं को प्रभावित किया और राष्ट्रीय पार्टी का तमगा लिए बैठे दलों को ध्वस्त कर दिया। पहली बार में ही पंजाब में बहुत बड़ी जीत दर्ज की। कृषि बिलों के खिलाफ लम्बी लड़ाई लड़ चुके पंजाब के किसानों के वोट न तो कांग्रेस को गए और न ही अकाली दल को। किसानों को पता था कि शिरोमणि अकाली दल कृषि बिल लाने के बाद भाजपा से अलग हुआ और कप्तान अमरिन्दर सिंह कांग्रेस से अपमानित होकर निकलने के बाद भाजपा की गोद में जा बैठे थे। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष सिद्धू के बड़बोलेपन से अन्दरूनी लड़ाई में ही उलझी रही। इसी बीच 'आप' जमीन पर छा गई। पंजाब का गढ जीतने के बाद केजरीवाल का अगला लक्ष्य गुजरात होगा, जहां कुछ ही माह बाद चुनाव होने हैं। वहां प्राय: भाजपा-कांग्रेस में सीधी टक्कर रहती आई है। अब वह टक्कर आप और भाजपा में रह सकती है। जो लोग वहां भाजपा से नाराज हैं, उनकी मजबूरी कांग्रेस को वोट देने की थी, लेकिन अब उन्हें कांग्रेस का भी विकल्प मिल जाएगा। यदि गुजरात में 'आप' की जमीन तैयार हो जाती है तो हरियाणा को जीतना भी उसके लिए मुश्किल न होगा। इन चुनावों में अगर किसी की सबसे अधिक दुर्गति हुई तो कांग्रेस की। वह चुनावी राज्यों में अपने दिग्गज नेताओं को चुनाव नहीं जिता पाई। जहां उसकी पहले से सरकार थी या मुख्य विपक्षी दल के रूप में थी, वहां उसे क्षेत्रीय दलों से भी नीचे के पायदान पर रूक जाना पड़ा। उत्तर प्रदेश में जिस तरह प्रियंका गांधी ने अपनी ताकत झोंकी और हर चुनाव क्षेत्र में पहुंच कर जनसंपर्क किया, उससे लगा था कि कांग्रेस इस बार अपनी जड़ें फिर से रोपने में कामयाब हो पाएगी। मगर सारे कयास, सारी उम्मीदें धरी की धरी रह गईं। बावजूद इसके कांग्रेस निराश नहीं दिख रही। उसने हौसले के साथ इन नतीजों की समीक्षा करने, और कमियों पर मंथन करने की घोषणा की है। परिणाम के एक सप्ताह के भीतर सोनिया गांधी ने पांचों राज्यों के पार्टी अध्यक्षों से इस्तीफा मांग कर यह संकेत तो दे दिया है कि वे कुछ कठोर फैसले लेने के मूड में हैं। उन्होंने पांच राज्यों में पार्टी की हार के आकलन के लिए भी प्रभारी भेज दिए है। इससे पार्टी को कितना फायदा होगा, यह तो समय ही बताएगा।

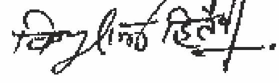

‘मोदी मैजिक’ के आगे हर दांव नाकाम, गठबंधन ध्वस्त पंजाब में कांग्रेस ने खोई सत्ता, ‘आप’ राष्ट्रीय पार्टी बनने की ओर अग्रसर, भाजपा ने बचाए अपने चारों गढ़

राष्ट्रीय क्षितिज पर योगी नया सितारा

उत्तरप्रदेश

274 -48	124 +72	02 -05	01 -18	02
भाजपा	सपा	कांग्रेस	बसपा	अन्य

भाजपा को पिछले चुनाव के लगभग बराबर मत मिले | 11 फीसदी ज्यादा वोट पाकर भी सपा पीछे रह गई | कांग्रेस-बसपा का अब तक का सबसे खराब प्रदर्शन

उत्तराखंड

48 -09	18 +07	02 -02	00 00	02
भाजपा	कांग्रेस	बसपा	आप	अन्य

पहली बार सत्ताधारी पार्टी ने फिर से सत्ता में वापसी की | भाजपा ने बड़ी जीत तो दर्ज की पर धामी अपना ही चुनाव हारे | कांग्रेस का चेहरा रहे हरीश रावत को भी हार झेलनी पड़ी

पंजाब

92 +72	18 -59	04 -11	02 -01	01
आप	कांग्रेस	शिअद+	भाजपा	अन्य

बदलाव की चाहत के बल पर ‘आप’ ने पंजाब में चलाई झाड़ू | ‘आप’ के अनजान चेहरों से हार गए सीएम समेत कई | ‘आप’ का यह उभार विपक्षी खेमे के लिए चिंता का सबब बना

गोवा

20 +07	11 -09	02 -01	02 +02	05
भाजपा	कांग्रेस	एमजीपी	आप	अन्य

भाजपा राज्य में तीसरी बार सरकार बनाने की ओर | आम आदमी पार्टी को पहली बार सीटें मिली | कांग्रेस की सारी कोशिश नाकाम,नहीं मिला मौका

मणिपुर

32 +11	05 -23	06 +06	07 +04	10
भाजपा	कांग्रेस	जदयू	एनपीपी	अन्य

पहली बार भाजपा अपने दम पर यहां सरकार बनाएगी | जदयू ने पहली बार यहां छह सीट जीत सबको चौंकाया | कांग्रेस एनपीपी से भी पीछे छूटी और चौथा स्थान पाया

फिर संभाली कमान

पुष्करसिंह धामी, उत्तराखंड

प्रमोद सामंत, गोवा

बीरेन सिंह, मणिपुर

भगवंत सिंह मान, पंजाब

राज्यों में जनता ने भाजपा की नीतियों, नीयत और निर्णय पर अपार विश्वास जताया, तो पंजाब में कांग्रेस को बेदखल कर आम आदमी पार्टी को मौका दिया। दिल्ली के बाहर इस पार्टी की यह पहली जीत है और उसका कारवां अब गुजरात की ओर बढ़ेगा। यूपी, गोवा, और मणिपुर में सरकार होने के बावजूद भाजपा का वोट शेयर बढ़ा है। उत्तराखंड में भी लगातार दूसरी बार लगातार कोई पार्टी सत्ता में आई है। कांग्रेस के लिए यह चुनाव बड़ा सबक है। गुजरात, हिमाचल में इस साल के अन्त में होने वाले चुनावों से पहले कांग्रेस को अपनी कमजोर होती जमीन को संभालना होगा।

पांच राज्यों में सम्पन्न विधान सभा चुनावों ने अपने में ही नहीं समा रहे दिग्गजों को धूल चटा दी है। कई तो उम्मीद के विपरीत चुनावी मैदान में चारों खाने चित्त हो गए। हारने वालों में मौजूदा मुख्यमंत्रियों और पूर्व मुख्य मंत्रियों से लेकर सत्ता की मलाई चाटने के आदी दलबदलू भी शामिल हैं। चारों राज्यों मे भाजपा की वापसी मोदी के नेतृत्व पर 'मुहर' के रूप देखी जा सकती है। उत्तरप्रदेश में दूसरी बार किसी दल की सरकार का आना 37 साल बाद हुआ है। यह मोदी में विश्वसनीयता के साथ योगी आदित्यनाथ के करिश्माई मुख्यमंत्रित्व की जीत है। कांग्रेस ने न सिर्फ पंजाब में सत्ता खो दी है, बल्कि उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर जैसे राज्यों में भी वह कुछ नहीं कर पाई। उत्तरप्रदेश में प्रियंका गांाधी के चुनाव अभियानों से एक उम्मीद बनी थी, पर नतीजा निराशाजनक रहा। उत्तराखंड में उसके लिए मौका हो सकता था, पर मुख्यमंत्री पद के दावेदार हरीश रावत भी चुनाव हार गए। गोवा में कांग्रेस को जीतना चाहिए था जबकि मणिपुर में उसने पूरा जोर नहीं लगाया। पांच राज्यों के चुनावों में निराशाजनक प्रदर्शन कांग्रेस के लिए सर्वाधिक चिंता का विषय है।

मत देने मे किसकी कितनी भागीदारी

राज्य	2022 (प्रतिशत में)		2007 (प्रतिशत में)	
	महिला	पुरुष	महिला	पुरुष
उत्तरप्रदेश	62.3	60.2	41.9	49.4
पंजाब	71.9	72.0	75.5	75.4
उत्तराखंड	67.2	62.6	59.5	58.9
मणिपुर	90.0	88.0	86.8	85.9
गोवा	80.9	78.2	70.3	69.7

पांच राज्यों के चुनाव में महिलाओं का मत प्रतिशत 2007 के मुकाबले 2022 में औसतन 8.66: बढ़ा।

उत्तरप्रदेश

यूपी में भाजपा ने जीत का चौका लगाया है। भाजपा राज्य में 2014 के लोकसभा चुनाव से अनेय बनी हुई है। तब से अब तक दो विधानसभा और दो आम चुनाव एकतरफा जीते हैं। इस राजनीतिक चमत्कार के साथ भाजपा 1985 के बाद लगाातर दूसरी बार सत्ता हासिल करने वाली पार्टी बन गई। मोदी मैजिक, योगी की कानून व्यवस्था, बुलडोजर, विकास और मुफ्त राशन की दोहरी डोज ने भाजपा को विधानसभा चुनाव में दूसरी बार बड़ी जीत दिला दी। पश्चिमी यूपी के सबसे कठिन फेज की कमान खुद गृहमंत्री अमित शाह ने संभाली थी। विधानसभा चुनाव में बसपा व कांग्रेस अपने दम चुनाव लड़ रही थी। सपा ने छोटे दलों (अपनानुल-के, दभासपा, जनवादी पार्टी) के गठबंधन के साथ भाजपा को चुनौती दी थी। चुनाव के ठीक पहले भाजपा सरकार के तीन मंत्रियों स्वामी प्रसाद मौर्य, दारा सिंह चौहान व धर्म सिंह सैनी के अलावा 11 विधायकों ने पार्टी छोड़ दी थी। यह सभी सपा में शामिल हुए थे, जिससे सपा गठबंधन के पक्ष में माहौल बनता नजर आया। लेकिन स्वामी प्रसाद व धर्म सिंह सैनी चुनाव हार गए। दारा सिंह कम वोटों से जीत सके। उप्र में भाजपा की दूसरी बार प्रचंड जीत के पीछे बसपा व कांग्रेस के वोट बैंक खिसकने को माना जा रहा है। तमाम कोशिशों के बाद भी बसपा सिर्फ12 प्रतिशत वोट ही पा सकी। 2017 में यह 22 प्रतिशत से अधिक था। उत्तर प्रदेश की जनता का भाजपा पर लगातार दूसरी बार भरोसा जताना मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के लिए राहत और संतोष की बात है। पर पिछली बार के मुकाबले सीटें कम होने को अनदेखा नहीं किया जा सकता। यूपी में भाजपा की जीत को सिर्फयोगी राज पर जनता की मुहर नहीं कहा जा सकता, क्यों कि इसमें कई अन्य घटकों की बड़ी भूमिका है- पीएम नरेंद्र मोदी का चेहरा, राममंदिर का निर्माण, केंद्र का यूपी पर ध्यान व योजनाओं का जनता को सीधे लाभ। विपक्ष भी एकजुट नहीं था। समाजवादी पार्टी (सपा) मुकाबले में दिखी पर बसपा सहित अन्य जातीय दलों की प्रासंगिकता पर अब सवाल उठेंगे।

उत्तराखण्ड

उत्तराखंड में भाजपा को झटका लगने के कयास थे। मुख्यमंत्रियों को लगातार बदलने से यह संदेश निकला था कि सरकार के प्रदर्शन को पार्टी भी आशानुरूप नहीं मान रही है। इसीलिए यहां अगर फिर से भाजपा सत्ता में लौटी है, तो इसका श्रेय प्रधानमंत्री मोदी को जाएगा। 'मोदी मैजिक' की वजह से राज्य सरकार के प्रति नाराजगी को लागों ने दरकिनार किया। हालांकि, यहां भाजपा और कांग्रेस के बीच मत-प्रतिशत में बहुत ज्यादा अन्तर नहीं है, जिसका अर्थ है कि केन्द्र सरकार की लोकप्रियता अगर साथ न देती, तो राज्य सरकार का जाना तय था। कांग्रेस को यहां काफी उम्मीदें थीं, पर मुख्यमंत्री के चेहरे की घोषणा में लगा लंबा वक्त और कार्यकर्ताओं का ठंडा उत्साह संभवत: पार्टी के खिलाफ गया है। यहां भी बिजली , पानी और सड़क जैसे मुद्दों पर लोगों ने भाजपा के पक्ष में वोट डाले। यहां कार्यवाहक मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को फिर से मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित किया गया था, लेकिन वे चुनाव हार गए। कांग्रेस नेता एवं पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत को उम्मीद थी कि कांग्रेस यहां सत्ता लायक बहुमत पा लेगी, लेकिन वे स्वयं अपनी सीट नहीं बचा पाए। धामी को फिर से मुख्यमंत्री बनाया गया है।

गोवा

गोवा में भाजपा ने अपनी सत्ता बरकरार रखी है। चुनाव के शुरू में माना जा रहा था कि सत्ता के खिलाफजाने वाले वोटों का फायदा कांग्रेस को मिलेगा, लेकिन भाजपा अपनी सधी रणनीति और विपक्ष के वोटों के बिखराव से फायदा उठाने में सफल रही। गोवा में भाजपा ने अपने मतदाताओं को साथ रखकर एंटी इनकम्बेंसी की संभावना को मात देकर जीत हासिल की। विपक्षी कुनबे में मतों का बंटवारा कांग्रेस के खिलाफऔर भाजपा के पक्ष में गया। प्रभारी बनाकर भेजे गए महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस का हर चुनावी दांव सफल रहा। यह माना जा रहा था पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर पर्रिकर के बेटे निर्दलीय और 'आप' के मुख्यमंत्री का चेहरा रहे। अमित पालेकर सांताक्रूज से चुनाव हार गए। यह माना जा रहा था कि भाजपा और कांग्रेस में कांटे की टक्कर होगी। लेकिन, ऐसा नहीं हुआ। भाजपा, कांग्रेस से बहुत आगे निकल गई। भाजपा को तीन निर्दलीय उम्मीदवारों का समर्थन भी मिल रहा है। भाजपा 40 में से 20 सीटों पर आगे रही और कांग्रेस 11 सीटों पर ही सिमट गई। ममता बनर्जी की पार्टी टीएमसी भी दो सीटों पर जीत हासिल करने में सफल रही। आम आदमी पार्टी ने भी अपनी मजबूत उपस्थिति छह फीसदी से ज्यादा वोट और दो सीट के साथ दर्ज कराई है। हालांकि आप के उसके सीएम पद के उम्मीदवार अमित पालेकर को जनता ने खारिज कर दिया। भाजपा ने प्रमोद सामंत में विश्वास जताते हुए पुन: मुख्यमंत्री की कुर्सी सौंपी है।

मणिपुर

भाजपा मणिपुर की सत्ता दोबारा हासिल करने में कामयाब रही है। भाजपा को जितनी सीटें मिली हैं, उसके आसपास भी कोई दल फटक नहीं पाया। कांग्रेस दहाई का आंकड़ा पार नहीं कर पाई है। आश्चर्यजनक रूप से जदयू को छह सीटें मिली हैं। राज्य में शांति लाने के साथ घाटी के लोगों के बीच की दरार को कम करने का श्रेय सीएम एन बीरेन सिंह को जाता है। मणिपुर के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने स्पष्ट बहुमत हासिल कर पूर्वोत्तर में अपनी जड़ें और मजबूत की हैं। बीरेनसिंह ने पुन: मुख्यमंत्री पद की शपथ ली है। कांग्रेस को यहां पर करारा झटका लगा है। वह महज पांच सीट ही जीत सकी है। क्षेत्रीय दलों नागा पीपुल्स फ्रंट, एनपीपी और जदयू को कांग्रेस से कहीं ज्यादा सीटें मिली हैं। तृणमूल कांग्रेस को भी मणिपुर में कोई सफलता नहीं मिली है। 60 सदस्यीय विधानसभा वाले मणिपुर में भाजपा की स्पष्ट बहुमत के साथ सरकार आना इस पूरे क्षेत्र के राजनीतिक समीकरणों में आ रहे बदलाव का एक बड़ा उदाहरण है। यहां पर भाजपा ने बीते 2017 के चुनाव में भी सरकार बनाई थी, पर तब उस बहुमत नहीं मिला था। लेकिन छोटे दलों के साथ गठबंधन बना कर उसने पूरे पांच साल तक सरकार चलाई है। इस बार उसने 32 सीटों के साथ पूर्ण बहुमत हासिल किया है। पांच साल पहले भाजपा ने जब यहां गठबंधन सरकार बनाई थी, उस समय कांग्रेस 28 सीटों और 35 फीसदी वोटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी के साथ उभरी थी, पर सरकार बनाने के लिए जरूरी तीन और विधायकों का समर्थन भी नहीं जुटा पाई थी। दूसरी तरफ, भाजपा ने 21 सीटें जीतने के बावजूद क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन कर अपनी सरकार बनाई थी। यहां भाजपा ने पूर्व उप. मुख्यमंत्री यू. जॉय कुमार सिंह को हराया।

दिग्गज हारे

केशव प्रसाद मौर्य

हरीश रावत

पुष्कर सिंह धामी

स्वामी प्रसाद मौर्य

नवजोत सिंह सिद्धू

सुखबीर सिंह बादल

चरणजीत सिंह चन्नी

पंजाब

पंजाब में धमाकेदार जीत के साथ आम आदमी पार्टी ने इतिहास रच दिया। 'आप' की ऐसी सुनामी चली, जिसमें मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू, पूर्व मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह व प्रकाश सिंह बादल समेत सारे दिग्गज आप उम्मीदवारों से हार गए। 30 साल में ऐसा पहली बार है जब बादल परिवार विधानसभा से बाहर है। आम आदमी पार्टी पहली क्षेत्रीय पार्टी है, जिसकी दो राज्यों में सरकार है। जब कि पिछले चार चुनाव में कांग्रेस का पंजाब में सबसे खराब प्रदर्शन था। कांग्रेस को पंजाब में बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद थी। पार्टी को भरोसा था कि कैप्टन अमरिंदर सिंह की जगह चरणजीत सिंह चन्नी को मुख्यमंत्री बनाकर वह अपने खिलाफ सत्ता विरोधी लहर खत्म करने में सफल होगी। पर पहला दलित मुख्यमंत्री देने के बावजूद पार्टी कैप्टन अमरिंदर सिंह सरकार के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर को खत्म करने में विफल रही। चरणजीत सिंह चन्नी भदोड़ और चमकौर साहिब दोनों सीटों से हार गए। कांग्रेस के पूर्व मंख्यमत्री अमरिंदर सिंह, प्रदेश अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू, अकाली दल के प्रकाश सिंह बादल, उनके बेटे सुखबीर सिंह सहित विभिन्न दलों के कई दिग्गजों को शिकस्त मिली। नवजोत सिंह सिद्धू की बयानबाजी भी पार्टी पर भारी पड़ी। चुनाव के दौरान वे दूसरे प्रदेश नेताओं के साथ आपसी समन्वय नहीं बना पाए। पार्टी नेता सुनील जाखड़ के हिंदू वाले बयान ने भी पार्टी की हार में भूमिका निभाई। उन्होंने कहा था कि विधायकों का समर्थन होने के बावजूद वह हिंदू होने की वजह से मुख्यमंत्री नहीं बन पाए। जाखड़ के इस बयान ने हिंदू मतदाताओं को कांग्रेस से नाराज कर दिया। क्योंकि 2017 में हिन्दू मतदाताओं ने कांग्रेस की जीत में अहम भूमिका निभाई थी। अकाली दल भी 'आप' का मुकाबला करने में नाकाम रही। अकाली दल ने बसपा के साथ गठबंधन में चुनाव लड़ा था। पर वह चुनाव में कोई करिश्मा दिखाने में नाकाम साबित हुई। आम आदमी पार्टी कांग्रेस के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर का फायदा उठाने में सफल रही। भगवंत मान को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार बनाने से भी पार्टी को लाभ मिला। क्यों कि वह मालवा में लोकप्रिय हैं और इस क्षेत्र में 69 सींटे है। मालवा जीतने वाला ही अमूमन पंजाब जीतता है। भगवंत मान ने मुख्यमंत्री की शपथ लेते ही 25 हजार नौकरियों की पोटली खोल दी है। किसान आंदोलन के दौरान दिल्ली की सीमा पर धरना दे रहे किसानों को बुनियादी सुविधाएं मुहैया कराने से भी आम आदमी पार्टी को फायदा मिला। वहीं, दिल्ली मॉडल ने भी चुनाव में मतदाताओं को आकर्षित किया। क्योंकि, पंजाब में बिजली बहुत महंगी है और सरकारी शिक्षा का स्तर बहुत अच्छा नहीं है। इसलिए मतदाताओं ने चुनाव में 'आप' पर भरोसा जताया।

सोनिया गांधी में विश्वास

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के निराशाजनक प्रदर्शन पर कांग्रेस कार्यसमिति की 13 मार्च को दिल्ली में बैठक हुई। अध्यक्षता पार्टी की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी ने की। इसमें फैसला लिया गया कि सोनिया गांधी के नेतृत्व में ही पार्टी आगे बढ़ेगी। सबने एक साथ सोनिया गांधी के नेतृत्व में ही पार्टी को आगे बढ़ने पर हामी भरी। सोनिया गांधी ने कहा कि कुछ लोगों को लगता है कि गांधी परिवार की वजह से पार्टी कमजोर हो रही है। अगर आप लोगों को ऐसा लगता है तो हम किसी भी प्रकार का त्याग करने के लिए तैयार हैं। हमारा पहला मकसद कांग्रेस को मजबूत करना है । इसी कड़ी में हरीश चौधरी ने पंजाब हार की जिम्मेदारी ली। उन्होंने कहा कि हम नई रणनीति के साथ फिर लड़ेंगे।

राजिंदर कौर भट्ठल

प्रकाशसिंह बादल

अमरिंदरसिंह

धर्मसिंह सैनी

सुरेश राणा

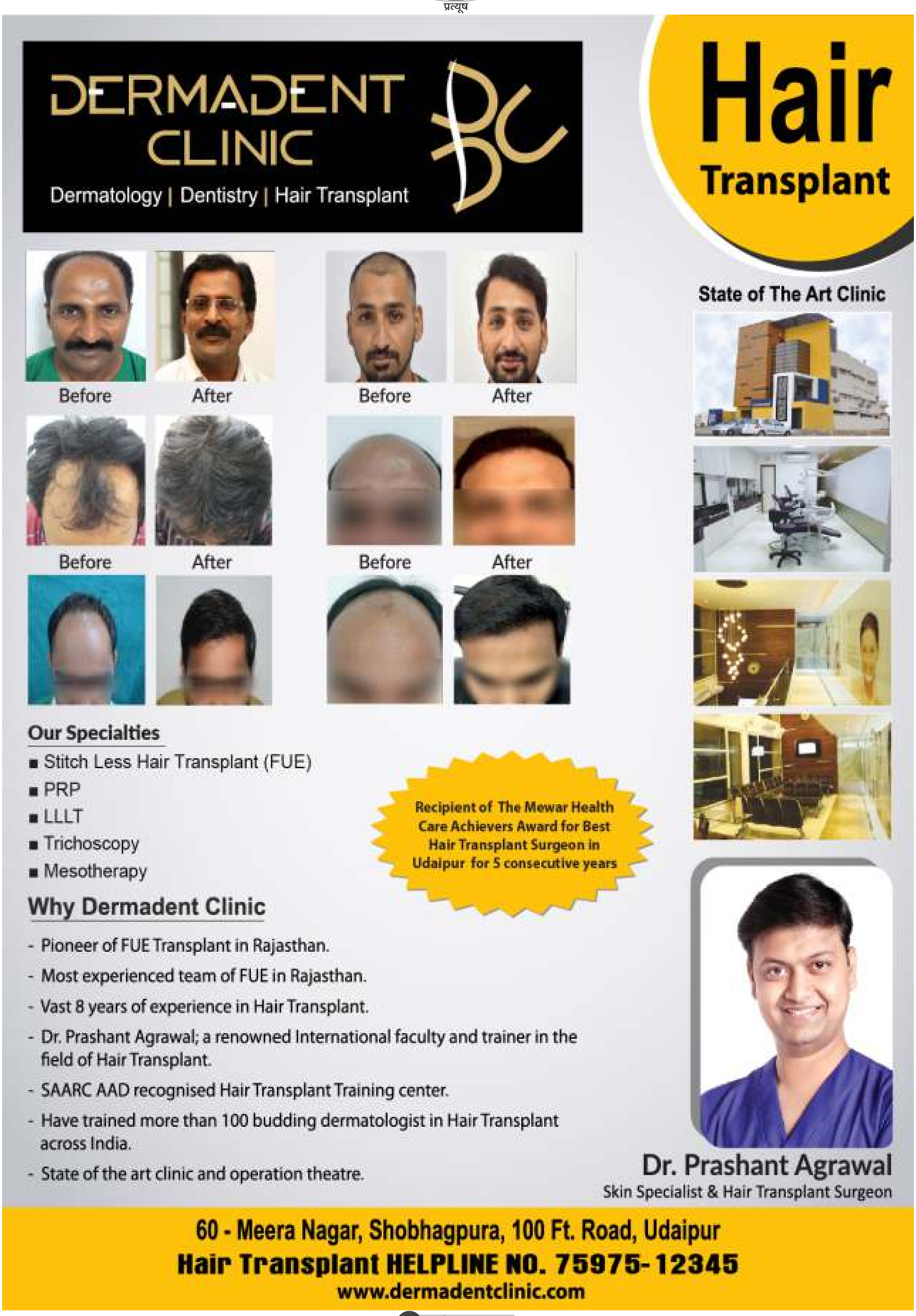
DERMADENT CLINIC
Dermatology | Dentistry | Hair Transplant
Hair
Transplant
Before
After
Before
After
Before
After
Before
After
State of The Art Clinic
Our Specialties
■ Stitch Less Hair Transplant (FUE)
■ PRP
■ LLLT
■ Trichoscopy
■ Mesotherapy
Recipient of The Mewar Health Care Achievers Award for Best Hair Transplant Surgeon in Udaipur for 5 consecutive years
Why Dermadent Clinic
- Pioneer of FUE Transplant in Rajasthan.
- Most experienced team of FUE in Rajasthan.
- Vast 8 years of experience in Hair Transplant.
- Dr. Prashant Agrawal; a renowned International faculty and trainer in the field of Hair Transplant.
- SAARC AAD recognised Hair Transplant Training center.
- Have trained more than 100 budding dermatologist in Hair Transplant across India.
- State of the art clinic and operation theatre.
Dr. Prashant Agrawal
Skin Specialist & Hair Transplant Surgeon
60 - Meera Nagar, Shobhagpura, 100 Ft. Road, Udaipur
Hair Transplant HELPLINE NO. 75975-12345
www.dermadentclinic.com

जन सेवा ही प्रमुख ध्येय

संवेदनशील, पारदर्शी और जवाबदेह शासन राजस्थान सरकार का मूल मंत्र रहा है। इसी को आधार मानकर योजनाओं, नीतियों और कार्यक्रमों को मूर्त रूप दिया गया है। हमने और कांग्रेस पार्टी ने जो कहा, वो किया। कोविड महामारी और तमाम आर्थिक चुनौतियों के बावजूद विकास कहीं भी रूकने नहीं दिया। अगले दो वर्ष विकास की दृष्टि से और भी बेहतरीन होंगे।

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

आज राजस्थान की पहचान देश के उन अग्रणी राज्यों में है, जो शिक्षा, चिकित्सा, सड़क, बिजली, पानी ,कृषि ,उद्योग, सामाजिक सुरक्षा, युवा एवं महिला कल्याण सहित सभी क्षेत्रों में तेजी से आगे बढ़ रहा है। स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में राजस्थान का देश में दूसरा स्थान है। प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण क्षेत्र में गरीबों को पक्की छत देने के मामले में राजस्थान पहले पायदान पर है। सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में भी राजस्थान अग्रणी है। हमारी सरकार ने विगत तीन वर्षों में आर्थिक मंदी, कोरोना महामारी एवं अन्य चुनौतियों के बावजूद प्रदेश को आगे बढ़ाने के लिए हरसंभव प्रयास किया है। शिक्षा, चिकित्सा, कृषि, सड़क बिजली , पानी हर क्षेत्र में विकास के नए कीर्तिमान बने हैं। पिछले चारों बजट प्रदेश के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से शानदार रहे हैं।

राजस्थान सौर ऊर्जा के क्षेत्र में सिरमौर बन गया है। भारत सरकार के नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय की ओर से हाल ही जारी रिपोर्ट में करीब 7800 मेगावाट की स्थापित क्षमता के साथ राजस्थान सौर ऊर्जा में देश में प्रथम स्थान पर है। वन-धन योजना में उभरते राज्य के रूप में राजस्थान को प्रथम पुरस्कार मिला है। उद्योगों की स्थापना एवं निवेश के लिए भी राजस्थान सर्वाधिक पसंदीदा डेस्टीनेशन के रूप् में स्थापित हो रहा है। इसके साथ-साथ सूचना प्रौद्योगिकी, निर्यात, खनन, पर्यटन के क्षेत्र एवं क्रूड ऑयल, दलहन, तिलहन, मसालों आदि के उत्पादन में भी राजस्थान अग्रणी राज्य है।

सरकार का सबसे बड़ा दायित्व और नैतिक जिम्मेदारी है कि वह जनता के दु:ख-दर्द को समझे और उन्हें दूर करने के लिए हर वो कदम उठाए, जिससे आमजन का जीवन खुशहाल हो। निरोगी राजस्थान बनाने की सोच को ध्यान में रखकर हमने चिकित्सा के क्षेत्र में एक से बढ़कर एक फैसले लिए। पिछली सरकार में मुख्यमंत्री नि:शुल्क दवा एवं जांच योजना शुरू करने जैसा कदम उठाया, तो इस बार मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना प्रदेश के हर परिवार को इलाज के भारी-भरकम खर्च की चिंता से मुक्त करने की दिशा में ऐतिहासिक प्रयास है। इस योजना का मूल उद्देश्य यही है कि गरीब से गरीब व्यक्ति को भी अच्छे से अच्छे अस्पताल में बेहतर उपचार मिले। पैसे के अभाव में किसी व्यक्ति की जान नहीं जाए। इस योजना पर राज्य सरकार करीब 3500 करोड़ रूपये वहन कर रही है। योजना में विभिन्न बीमारियों के 1579 पैकेज शामिल किये गए हैं और लगभग 1.34 करोड़ परिवार इसमें पंजीकृत हो चुके हैं। अब तक करीब 5 लाख रोगियों को 615 करोड़ रूपये की कैशलेस चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जा चुकी है। कई जरूरतमंद लोगों को इस योजना के कारण नया जीवन मिला है।

राज्य सरकार का प्रयास रहा है कि बच्चों को क्वालिटी एजुकेशन मिले ताकि वैश्विक प्रतिस्पर्धा के दौर में वे किसी से पीछे नहीं रहें। अंग्रेजी माध्यम के महात्मा गांधी स्कूल खोलना सरकार का अहम निर्णय रहा है। अब तक जिला एवं ब्लॉक स्तर पर अंग्रेजी माध्यम के करीब 550 स्कूल संचालित हो रहे हैं। लोगों के उत्साह एवं उनकी मांग को देखते हुए अब हम 5000 से

अधिक आबादी वाले गांवों और कस्बों में भी अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय खोल रहे हैं।

स्कूली शिक्षा के साथ-साथ उच्च एवं तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रतिबद्धता के साथ काम किया जा रहा है। विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए दूरस्थ स्थानों पर नहीं जाना पड़े, इसी उद्देश्य को लेकर विगत तीन वर्षों में 123 नए कॉलेज खोले गए हैं। इनमें 33 महिला महाविद्यालय हैं। प्रदेश के होनहार विद्यार्थियों को विदेश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों में अध्ययन के लिए 'राजीव गांधी स्कॉलरशिप फॉर एकेडमिक एक्सीलेन्स योजना प्रारम्भ की गई है।

कृषि एवं पशुपालन अर्थव्यवस्था की मुख्य धुरी है। ऐसे में किसान कल्याण हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। कर्ज माफी के साहसिक फैसले से प्रदेश के करीब 21 लाख किसानों को लाभ मिला है। राज्य सरकार ने इस वर्ष से किसानों के लिए अलग से कृषि बजट पेश किया है। मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्र के मीटर्ड एवं फ्लेट रेट श्रेणी के किसान उपभोक्ताओं को बिजली बिल पर प्रतिवर्ष 12 हजार रूपये तक का अनुदान दिया जा रहा है। इस योजना पर सरकार सालाना 1450 करोड़ रूपये की अतिरिक्त सब्सिडी मुहैया करा रही है।

कृषि प्रसंस्करण और निर्यात को बढ़ावा देने के लिए 'राजस्थान कृषि प्रसंस्करण, कृषि व्यवसाय एवं कृषि निर्यात प्रोत्साहन योजना' लागू की है। किसानों को उनकी उपज का सही मूल्य दिलवाने तथा कृषक कल्याण के विभिन्न कार्यो के लिए 2000 करोड़ रूपये से कृषक कल्याण कोष का गठन किया गया। मुख्यमंत्री दुग्ध उत्पादक संबल योजना के तहत पशुपालकों को दूध पर 2 रूपये प्रति लीटर अनुदान दिया जा रहा है। इसके अलावा कई ऐसे निर्णय किए गए हैं जो किसानों की समृद्धि और उनकी आय बढ़ाने की दिशा में अहम कदम साबित होंगे।

राजस्थान सरकार ने गरीब, पिछड़े, दलित, अल्पसंख्यक, दिव्यांगजन, वृद्धजन, महिला, विधवा सहित हर जरूरतमंद वर्ग की सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने का प्रयास किया है। आज राजस्थान में करीब 88 लाख व्यक्ति सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं।

इसके अलावा विमुक्त, घुमन्तू एवं अर्द्धघुमन्तू समुदाय के लिये विकास कोष का गठन , ट्रांसजेण्डर उत्थान कोष का गठन, मुख्यमंत्री अनुप्रति कोचिंग योजना, वाल्मीकि समुदाय के लिए विकास कोष का गठन , नई सिलिकोसिस नीति सहित कई ऐसे बड़े कदम उठाए गए हैं जो सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में राजस्थान को मजबूती दे रहे हैं।

विगत तीन वर्षों में 97 हजार से अधिक युवाओं को विभिन्न विभागों में नियुक्तियां मिली हैं। साथ ही, करीब 95 हजार पदों पर भर्ती की प्रक्रिया अभी चल रही है। विभिन्न विभागों में नए पदों का सृजन किया गया है। रिक्त पदों को नियमित रूप से भरने का प्रयास किया जा रहा है।

भर्तियों में न्यायिक विवादों और अन्य अड़चनों को दूर करने के लिए एक कमेटी का भी गठन किया गया है, ताकि भर्तियों की प्रक्रिया निर्धारित समय में पूरी हों। अभ्यर्थियों को प्रतियोगी परीक्षा के दौरान निःशुल्क यात्रा की सुविधा दी जा रही है। अदालतों से मुकदमे वापस लेकर या पुख्ता पैरवी कर करीब 28 हजार पदों पर युवाओं को सरकारी नौकरी दी गई। संभवतः ऐसा पहली बार हुआ होगा कि सरकार ने सुप्रीम कोर्ट से एसएलपी वापस ली हो, लेकिन युवाओं के हित में हमने ऐसा किया। रीट परीक्षा का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया, इसके माध्यम से 31 हजार अध्यापकों की भर्ती शीघ्र की जाएगी।

आर्थिक विकास और रोजगार की दृष्टि से उद्योगों का विशेष महत्व है। राज्य सरकार ने प्रदेश में उद्योगों को बढ़ावा देने तथा निवेश प्रोत्साहन के लिए बड़े नीतिगत बदलाव किये हैं। एमएसएमई एक्ट, वनस्टॉप शॉप, राजस्थान कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व (सीएसआर) प्राधिकरण का गठन, मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना, राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना-2019 सहित कई नीतिगत फैसले हुए हैं, जिनसे राजस्थान निवेश के पसंदीदा स्थान के रूप में उभर रहा है। पचपदरा में स्थापित हो रही रिफाइनरी सह पेट्रोकेमिकल कॉम्पलेक्स परियोजना तथा पीसीपीआईआर क्षेत्र विकसित होने से पश्चिमी राजस्थान में भी तेजी से औद्योगिक विकास होगा।

राज्य सरकार खेल एवं प्रतिभाओं को बढ़ावा देने के लिए नई सोच के साथ काम कर रही है। इसके लिए आउट ऑफ टर्न आधार पर राजकीय सेवाओं में नियुक्ति, खिलाड़ियों को राजकीय सेवाओं में 2 प्रतिशत आरक्षण, पुरस्कार राशि में बढ़ोतरी, ग्रामीण क्षेत्रों में खेल स्टेडियमों का निर्माण एवं राज्य खेलों के आयोजन जैसे नीतिगत निर्णय लिए गए हैं। इसी का परिणाम है कि राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर की खेल प्रतियोगिताओं में राजस्थान की खेल प्रतिभाओं का प्रदर्शन बेहतर हुआ है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सिद्धांत और जीवन मूल्य देश ही नहीं पूरी दुनिया के लिए धरोहर हैं। इनकी प्रासंगिकता युगों-युगों तक बनी रहेगी। समाज के वंचित एवं पिछड़े तबकों के उत्थान, ग्राम स्वराज, स्वदेशी, अहिंसा, सत्य, लोकतंत्र और जनसेवा को लेकर बापू की जो सोच थी, उसे अंगीकार कर लिया जाए तो सुशासन के हर मापदण्ड को पूरा किया जा सकता है। राजस्थान सरकार इस भावना के साथ जनता के ट्रस्ट के रूप में काम कर रही है। हमारा प्रयास है कि गांधीवादी चिंतन और उनकी शिक्षाएं शासन का अंग बनने के साथ-साथ जन-जन तक पहुंचे। इसके लिए प्रदेश में महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ गवर्नेन्स एंड गांधी दर्शन म्यूजियम की स्थापना की गई है। सर्वोदय विचार परीक्षा का आयोजन एवं अहिंसा एवं शांति निदेशालय की स्थापना की गई है।

बहुत खास हैं रमजान के दिन

डॉ. अमरसिंह राठौड़

खुशियों के इन्द्रधनुष उगाता माहे रमजान, मुकम्मल इंसानियत का पैगाम तो देता ही है लिहाजा इसका हर दिन कुछ खास होता है। रमजान में रोजा रखना और सेहरी का होना जरूरी है। इस्लाम के अनुयायी अल सुबह जाग जाते है और खास तौर से महिलाएं सेहरी की तैयारी के लिए पुरुषों से पहले जग जाती हैं। सामान्यत: सेहरी से पहले बचे वक्त में लोग तहज्जुद, सुबह से पहले पढ़ी जाने वाली विशेष नमाज अदा करते हैं। यह नमाज घरों में ही अदा की जाती है। हालांकि इन दिनों में देर रात तक जागना भारी तो लगता है, क्योंकि सुबह सेहरी के लिए जल्दी उठने की पाबंदी होती है। लेकिन खाने-पीने से लेकर नमाज पढ़ने तक का मुकर्रर वक्त मुस्लिम भाइयों की पूरी जिंदगी को अनुशासित कर देता है। पूरा वक्त इस तरह से मुकर्रर है कि खुदा के सच्चे बंदे को नेकियों के अलावा कुछ भी सोचने का कोई मौका ही नहीं मिलता। सेहरी के बाद मस्जिदों में फजर की नमाज की चहल-पहल एवं गहमागहमी शुरू हो जाती है। गौरतलब है कि आम दिनों में जहां इस नमाज के दौरान नमाजियों की तादाद बेहद कम होती है, वहां पाक महीने रमजान के दौरान फज़्र की नमाज के वक्त

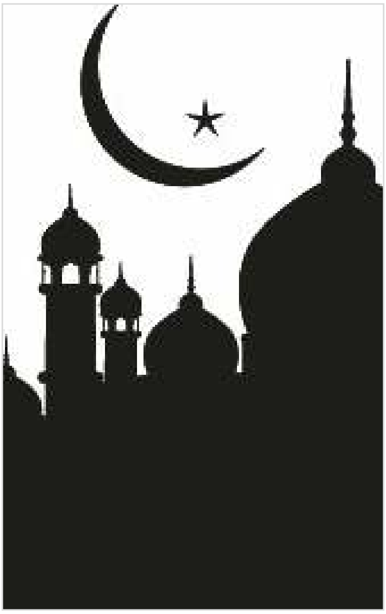

मस्जिद में नमाजियों को जगह मिलना भी मुश्किल हो जाता है। एक खास बात यह है कि रमजान के दौरान दिन में शहर के बाजारों में प्राय: सूनापन सा दिखाई देता है। आसपास नाश्ते और खाने के होटल-रेस्तरां में लोगों की आवाजाही भी कम हो जाती है। शहर की मुस्लिम आबादियों में स्थित खान-पान एवं नाश्ते की दुकानों पर तो पर्दे ही डाल दिए जाते हैं ताकि रोजादारों का अहतराम किया जा सके। रमजान की रवायत के मुताबिक इन बाजारों में रौनक का वक्त बदल कर देर शाम से देर रात तक बल्कि अलसुबह तक हो जाता है। इस दौरान बाजार गुलजार रहते हैं। चहल-पहल का नजारा भी देखने योग्य बन जाता है। शाम को अफ्तार का वक्त होने से बाजार में तरह-तरह के फल, मेवों, व्यंजनों एवं पकवानों की खरीद फरोख्त का सिलसिला परवान चढ़ जाता है। इन दिनों मुस्लिम घरों की रौनक भी शबाब पर रहती है। इन घरों में तरह-तरह के खानों की तैयारियां मुस्लिम मुहल्लों को सुहानी खुशबुओं से भर देते हैं। इस दौरान घर के सभी लोगों का एक साथ घर में मौजूद रहना और एक दस्तरखान पर बैठकर रोजा अफ्तार (भोजन करना) रमजान के दिनों को बहुत खास बनाता है। इसकी खास वजह यह भी है कि आज के वक्त में जिंदगी की भागम-भाग के कारण आम दिनों में लोगों को एक साथ बैठ कर खाने का वक्त ही नहीं मिलता। यह खास मौका परिवार की आपसी संवेदनाओं और एकता को बढ़ावा देने का सबब बन जाता है। यह माह गरीबों की मदद के लिए भी प्रेरणा देता है।

प्रत्यूष
प्रत्यूष पत्रिका में विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें
75979 11992, 94140 77697

प्रत्यूष

वीरेंद्र कुमार डांगी　　महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं　　रजनी डांगी

डांगी इण्डस्ट्रीज

सोप स्टोन पाउडर

डोलोमाइट　　चाइना क्ले

केल्साइट पाउडर के निर्माता एवं माइनिंग

- पर्ल मिनरल्स एंड केमिकल्स
- डांगी माइनिंग प्राईवेट लिमिटेड
- नेनो क्ले एंड मिनरल्स प्राइवेट लिमिटेड
- देवपुष्प माइनिंग इण्डस्ट्रीज, किच्छा (उत्तराखंड)

एफ-39 (ए) आई. टी. पार्क, रोड नं. 12, मादड़ी इण्डस्ट्रीयल एरिया, उदयपुर 313 003
फोन : 9649203061/9672203061, ईमेल: pearlmin@rediffmail.com, dangiindustries@rediffmail.com

प्रत्यूष

आईपीसीसी की रिपोर्टः भीषण गर्मी व घटनाओं में वृद्धि का अंदेशा

दुनिया कहीं बाढ़ तो कहीं आग से जूझेगी

हाल ही में जारी आईपीसीसी की रिपोर्ट में शहरीकरण को लेकर महत्वपूर्ण बातें कहीं गई हैं। अनियोजित शहरीकरण पर्यावरण पर नकारात्मक असर डाल रहा है, जिससे जलवायु प्रभावित होकर दुनिया में तबाही का कारण बनने जा रही है। अनियोजित शहरीकरण ने न सिर्फ गर्मी बल्कि एरोसॉल को बढ़ाने का भी काम किया है।

निशा शर्मा

28 फरवरी को जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकार पैनल (आईपीसीसी) ने अपनी छठी मूल्यांकन रिपोर्ट के दूसरे भाग को जारी करते हुए यह चेतावनी दी कि यदि कार्बन उत्सर्जन को जल्द नियंत्रित नहीं किया गया, तो वैश्विक स्तर पर गर्मी और आर्द्रता असहनीय हालात पैदा करेंगे और यह स्थिति भारत जैसे देशों को कहीं ज्यादा प्रभावित करेगी।

एडिनबर्ग विश्वविद्यालय के शोधकर्ता पीटर अलेक्जेंडर इस रिपोर्ट के मुख्य लेखक हैं। इसमें कहा गया है कि कुछ देश पिघलती बर्फ तो कुछ देश समुद्र के बढ़ते दायरे में समा जाएंगे। कुछ देश भीषण जंगल की आग तो कुछ देश भीषण गर्मी की चपेट में आ जाएंगे। वैज्ञानिकों ने किस महाद्वीप में जलवायु परिवर्तन का क्या असर पड़ेगा इसका अनुमान लगाया है।

यह रिपोर्ट 67 देशों के 270 से अधिक वैज्ञानिकों ने तैयार की है। 195 देशों ने इसको मंजूरी दी है। इससे पता चलता है कि बिगड़ता जलवायु परिवर्तन दुनिया के हर हिस्से में विनाशकारी है। यह रिपोर्ट आईपीसीसी की छठी मूल्यांकन रिपोर्ट की दूसरी किस्त है।

यह रिपोर्ट भारत को लेकर कोई अच्छी तस्वीर पेश नहीं करती। इसमें कहा गया है कि वादे के मुताबिक अगर उत्सर्जन कम कर लिया गया, तब भी उत्तरी और तटीय भारत के कई इलाकों में इस शताब्दी के अंत तक वेट बल्ब तापमान (गर्मी और आर्द्रता को एक साथ मापने वाला मापक) 31 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा रहेगा। हालांकि, नीतिगत मोर्चे पर हमारी सरकार ने काफी अच्छा काम किया है। हमने आबोहवा सुधारने को लेकर अच्छी कार्ययोजना भी बनाई है और उस पर संजीदगी के साथ आगे भी बढ़ रहे हैं। अक्षय ऊर्जा के लिहाज से अब 2030 के उस लक्ष्य की ओर हम बढ़ गए हैं। मगर दिक्कत यह है कि ये तमाम नीतियां कागजों पर जितनी मजबूत हैं, जमीन पर उतनी नहीं दिखती। जाहिर है, जनता के स्तर पर काफी काम किए जाने की जरूरत है। तंत्र को इस दिशा में सक्रिय होना पड़ेगा और आम लोगों को लगातार जागरूक करना होगा। अनियोजित शहरीकरण के उपाय जल्द से जल्द तलाशने भी जरूरी हैं।

क्या है आईपीसीसी

इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज संयुक्त राष्ट्र की एक संस्था है, जिसे जलवायु परिवर्तन के विज्ञान का आंकलन करने के लिए 1988 में स्थापित किया गया था। आईपीसीसी सरकारों को वैश्विक तापमान बढ़ने को लेकर वैज्ञानिक जानकारियां मुहैया कराती है। ताकि वे उसके हिसाब से अपनी नीतियां विकसित कर सकें। 1992 में जलवायु परिवर्तन पर इसकी पहली व्यापक मूल्यांकन रिपोर्ट प्रकाशित की गई थी।

> *आईपीसीसी की नई रिपोर्ट में शहरीकरण को लेकर महत्वपूर्ण बातें कहीं गई हैं। बताया गया है कि शहर और शहरी केन्द्र वैश्विक तापमान को बढ़ाने में लगातार योगदान दे रहे हैं। अनियोजित शहरीकरण पर्यावरण पर नकारात्मक असर डालता है। आंकड़ें भी तस्दीक कर रहे हैं कि शहर न सिर्फ अपने तापमान को वैश्विक गर्मी के लिहाज से अनुकूल बना रहे हैं, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी तापमान को प्रभावित कर रहे हैं। रिपोर्ट की मानें तो अनियोजित शहरीकरण ने न सिर्फ गर्मी, बल्कि एरोसॉल बढ़ाने का भी काम किया है। इनसे मौसम एवं जलवायु लगातार प्रभावित हो रहे हैं। शहरों में ऊंची–ऊंची इमारतें बन गई हैं, जिनमें इस्तेमाल होने वाली सामग्रियां 'री–रेडीएट' (विकिरण कोअवशोषित करने के बाद फिर से विकिरण करना) करती हैं। नतीजतन, रात का न्यूनतम तापमान बढ़ चला है। यह वृद्धि उन उपकरणों से भी हो रही है, जो सुविधा के नाम पर शहरों में दिन–रात इस्तेमाल किए जा रहे हैं या फिर हर वक्त सड़कों पर दौड़ने वाली गाड़ियों के कारण।*
>
> ***मंजू मोहन,** पूर्व प्रमुख, सेंटर फॉर एट्मस्फोरिक साइंस, आईआईसी*

भारतीय विशेषज्ञों की राय

जलवायु परिवर्तन पर आईपीसीसी के लेखक डॉ. अंजल प्रकाश ने कहा कि बढ़ती गर्मी के कारण देश के अधिक ऊंचाई वाले हिमालयी क्षेत्र में डेंगू एवं मलेरिया जैसी बीमारियां फैलने लगी हैं, जिससे एक नया खतरा पैदा हो रहा है।

रिपोर्ट की एक अन्य लेखिका डॉ. चांदनी सिंह के अनुसार हिमालय की नाजुक प्रणाली ग्लोबल वार्मिंग के कारण बहुत जल्द खतरे में आती है। यहां फिर से चमोली जैसी और भी आपदाएं हो सकती हैं। यदि उत्सर्जन में ऐसी ही वृद्धि जारी रहती है तो भारत के अधिकांश हिस्सों में वेट बल्ब तापमान 35 डिग्री सेल्सियस के खतरनाक स्तर पर पहुंच जाएगा।

रिपोर्ट में बताया गया है कि अगर उत्सर्जन में वृद्धि जारी रही तो लखनऊ और पटना 35 डिग्री सेल्सियस के वेट बल्ब तापमान तक पहुंच जाएंगे। इसके बाद भुवनेश्वर, चेन्नई, मुंबई, इंदौर और अहमदाबाद में वेट बल्ब तपमान 32-34 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचने का अनुमान है। रिपोर्ट के लेखकों में से एक इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ह्यूमन सैटलमेंट के निदेशक डॉ. अरोमर रेवी के अनुसार भारत और बांग्लादेश में जलवायु की समस्या बढ़ेगी।

पिछले दो दशकों में भारत में पीएम 2.5 प्रदूषण के कारण होने वाली मौतों में 2.5 गुना वृद्धि हुई है। यह बात एक अन्य संस्था सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट (सीएसई) की नई रिपोर्ट में कही गई है।

फरवरी में जारी इस रिपोर्ट में कहा गया है कि 2019 में वायु प्रदूषण से हर चार में से एक मौत भारत में हुई। रिपोर्ट की स्थिति में दिखाया गया है कि दुनिया में प्रदूषण के कारण 66.7 लाख लोग मारे गए। इनमें से 16.7 लाख मौतें भारत में हुई।

2019 में वायु प्रदूषण के जोखिम से जुड़े स्वास्थ्य प्रभावों से वैश्विक स्तर पर 4,76,000 बच्चों की मृत्यु हुई। इनकी उम्र एक महीने तक थी।

जलवायु परिवर्तन : कहां क्या असर

एशिया

हिमायल के ग्लेशियरों के पिघलने से चट्टान के पीछे पानी जमा हो सकता है। यह झील के जरिये जब चट्टान से होकर तीव्र वेग से आगे बढ़ेगा तो पर्वतीय समुदाय को अपनी चपेट में ले लेगा। उनकी जान जोखिम में पड़ सकती है। साथ ही मच्छर की वजह से डेंगू और मलेरिया का प्रकोप पूरे एशिया में फैल जाएगा। 2019 में पूरे एशिया में 90 लाख लोगों को अपना घर छोड़ना पड़ा।

अफ्रीका

अफ्रीका दुनिया का सबसे गर्म महाद्वीप है। इस महाद्वीप में रहने वाले लोगों को और अधिक गर्मी का सामना करना पड़ सकता है। इससे लोगों के तनाव में आने का खतरा बढ़ जाएगा। अगर ग्लोबल वार्मिंग 1.5 डिग्री सेल्सियस (2.7 डिग्री फारेनहाइट) से अधिक हो जाती है तो प्रति 1,00000 में कम से कम 15 अतिरिक्त लोग भीषण गर्मी की वजह से मारे जाएंगे। नाइजीरिया का लागोस वर्ष 2100 तक दुनिया की सबसे अधिक आबादी वाला शहर होगा।

ऑस्ट्रेलिया

जलवायु परिर्वन से ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप भी नहीं बचेगा। ऑस्ट्रेलिया के ग्रेट बेरियर रीफ और केल्प के जंगल भी गर्मी से झुलसेंगे। हीटवेव और गर्मी की वजह से पर्यटन राजस्व तेजी से गिरेगा। अल्पाइन राख, स्नोगम वुडलैंड्स और उत्तरी जराह के जंगल काफी हद तक सूखे की वजह से बर्बाद हो जाएंगे।

दक्षिण और मध्य अमेरिका

अमेजन के वर्षावन तथा इसके द्वारा समर्थित हजारों विविध पौधे और जानवरों के सूखे की चपेट में आने की आशंका है। जंगल की आग की वजह से किसानों द्वारा कृषि के लिए पेड़ों को साफ करने से स्थिति बदतर हो जाएगी। एंडीज, पूर्वोत्तर ब्राजील और मध्य अमेरिका के कुछ हिस्सो में सूखा, तूफान और बाढ़ से स्थिति खराब होगी। भू-राजनीतिक और आर्थिक अस्थिरता के साथ-साथ बीमारियां होने का भी अनुमान है।

यूरोप

वर्ष 2019 की गर्मी ने यूरोप के लिए एक झलक पेश की थी। अगर महाद्वीप में ग्लोबल वार्मिंग 3 डिग्री सेल्सियस तक पहुंची तो यहां कोहराम मच जाएगा। इससे गर्मी से होने वाली मौत तिगुनी नहीं तो दुगुनी जरूर हो जाएगी। साथ ही बाढ़ से नुकसान होने का अनुमान है। वेनिस के डूबने की आशंका है। यूरोप की सापेक्षित संपदा के बावजूद मौजूदा समय में इसके नियंत्रण को लेकर उपाय कम हो रहे हैं।

उत्तरी अमेरिका

बड़े जंगल की आग जंगलों को और जलाती रहेगी। साथ ही काले मेघ की वजह से पश्चिमी अमेरिका और कनाडा में भारी बारिश होगी। इससे बड़े पैमाने पर तबाही का अनुमान है। अगर ग्लोबल वार्मिंग को भले ही 1.5 डिग्री तक रखा जाए तो भी अमेरिका के कई हिस्सों में गंभीर तूफान की आशंका है। इसके साथ ही समुद्र के जल स्तर में वृद्धि होगी। आर्कटिक में समुद्री बर्फ पिघल रही है। इसी वजह से कई प्रजातियां विलुप्त होने की कगार पर पहुंच भी चुकी हैं।

क्या है पी.एम. 2.5?

पीएम 2.5 हवा में मौजूद वे सूक्ष्म कण होते हैं, जो शरीर में गहराई से प्रवेश कर जाते हैं और फिर फेफड़ों और श्वसन नली में सूजन को बढ़ा देते हैं। इसके असर से शरीर में रोगों से प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर हो जाती है और सांस से संबंधित कई तरह की समस्याओं का खतरा बढ़ जाता है। सन 2019 में खराब वायु गुणवत्ता दुनियाभर में जल्दी मौत का चौथा प्रमुख जोखिम वाला कारक था। यह केवल उच्च रक्तचाप, तंबाकू के उपयोग और खराब आहार से भी आगे निकल गया। सवाल है कि इतने लंबे समय से वायु प्रदूषण के इस पहलू और कारक के एक जगजाहिर समस्या होने और इसके बारे में सब कुछ ज्ञात होने के बावजूद इसकी रोकथाम के लिए कोई ठोस कदम क्यों नहीं उठाया जा सका।

सामाजिक क्रांति के वाहक अम्बेडकर

उच्च शिक्षा प्राप्त करके भी भीमराव अम्बेडकर दलितों की पीड़ा से मुंह न मोड़ सके। उन्होंने दलित एवं शोषित समुदाय के लोगों के लिए भेदभाव, ऊंच-नीच को समाप्त कर भारतीय समाज के दबे-कुचले, दीन-हीन लोगों के लिए समता पर आधारित न्याय दिलाने हेतु सामाजिक क्रांति का उद्‌घोष किया।

डॉ. ज्ञानप्रकाश पिलानिया

जिस युग में भीमराव रामजी अम्बेडकर का जन्म हुआ था, अछूत के सड़क पर से निकल जाने के तुरंत बाद पानी छिड़का जाता था, अछूत की छांह पड़ जाने पर स्वर्ण को स्नान करना पड़ता था, अछूत बालक का स्वर्ण जाति के बच्चों के स्कूल में प्रवेश वर्जित था, मंदिरों के पट उनके प्रवेश के लिए बंद थे, संस्कृत देव वाणी के पठन-पाठन का उनके लिए निषेध था। डॉ. अम्बेडकर ग्रेनेडियर रेजीमेंट के सूबेदार मेजर रामजी सकपाल और भीमा बाई की सबसे छोटी, चौदहवीं संतान थे। वे महाराष्ट्र में अछूत मानी जाने वाली बहादुर महार जाति में 14 अप्रेल सन 1891 को पैदा हुए थे। यूं तो महार जाति के लोग वीर, निर्भीक, प्रभावशाली और साहसी होते थे, किंतु अपनी वर्णता के कारण सवर्णों के सामने अच्छा खा-पी नहीं सकते थे और ना ही अच्छा ओढ़ सकते थे। खाट पर बैठना, सार्वजनिक स्थलों पर आना-जाना और आमोद-प्रमोद करना एवं पूजा करना उनके लिए निषेध था। मानव मूल्यों और गौरव को तिलांजलि देकर अछूत समुदाय पर नाना प्रकार के अत्याचार ढाए जाते थे। चूंकि डॉ. अम्बेडकर स्वयं इस समुदाय में जन्मे और पले थे, अत: उन्होंने स्वयं बाल्याकाल से जीवन पर्यन्त, उपेक्षित, प्रताड़ित और वर्जित जीवन जीया था। अछूत जगत के कष्टों का उन्हें व्यापक अनुभव था। उन्होंने कदम-कदम पर अस्पृश्यता की पीड़ा को भोगा, दलित की वेदना को सहा। परंतु उनके परिवार पर कबीर के दर्शन का गहरा प्रभाव था, शायद उसी का यह प्रतिफल हुआ कि उनमें कालांतर में कबीर की सी अक्खड़ता पनपी और वे कभी अन्याय तथा अत्याचार के आगे नहीं झुके।

बचपन में ही बालक भीम को स्कूल के वातावरण में भी महसूस हुआ कि उसे हिकारत की दृष्टि से देखा जाता है, न वह दूसरों के साथ बैठ सकता है, न उनके साथ घुल-मिल सकता है। एक बार प्यास से व्याकुल होने पर उसने कुएं से पानी पी लिया, तो निर्दयता से पीटा गया। नाई ने बाल काटने से इनकार कर दिया। सवर्ण बैलगाड़ीवान ने पता चलने पर नीचे उतार दिया। बचपन में स्कूल में, कॉलेज में, कॉलेज में डी लिट एवं बार एटली की उपाधि पासकर विदेश से स्वदेश लौटने पर भी पग-पग पर उन्हें समाज के छूआछूत के कटु अनुभवों से रू-ब-रू होना पड़ा, वे कदम-कदम पर प्रताड़ित किए गए। इसलिए वे उच्च शिक्षा प्राप्त करके भी दलितों की पीड़ा से मुंह न मोड़ सके। अत: उन्होंने उच्च शिक्षा ग्रहण करके दलित एवं शोषित समुदाय के लिए भेदभाव, ऊंच-नीच को समाप्त कर भारतीय समाज के दबे कुचले, दीन-हीन लोगों के लिए समता पर आधारित सामाजिक न्याय दिलाने हेतु सामाजिक क्रांति का उद्‌घोष किया। जन्मजात अछूत के कलंक, दलित की पीड़ा एवं अल्पज्ञ की वेदना को सहते हुए घोर विपन्नता एवं सामाजिक विषमता को झेलते हुए भी डॉ. अम्बेडकर, असीम जिजीविषा और अदम्य पौरुष के बल से स्वयं अपने भाग्य निर्माता बने। इसी कारण वह यह कहने को विवश हुए कि 'जहां व्यक्तिगत हितों और देश में टकराव होगा, वहां मैं दलित हितों को प्राथमिकता दूंगा।' डॉ. अम्बेडकर, ब्राह्मणवाद की दोषपूर्ण जाति व्यवस्था को हिन्दू समाज के मुख्य पतन का कारण मानते थे और इस पर आधारित शोषण को खत्म करना चाहते थे। वे कहते थे कि वर्ण व्यवस्था का आधार जन्म नहीं, कर्म होना चाहिए। जब तक जातिवाद नहीं हटेगा तब तक छूआछूत नहीं हट सकती। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी, मैं उन शोषितों की सेवा में अपने जीवन का उत्सर्ग कर दूंगा, जिनमें मैं पैदा हुआ, जिनके बीच रहकर मैं बड़ा हुआ और जिनमें मैं रह रहा हूं। मैं अपने उत्तरदायित्व से न एक इंच भी पीछे हटूंगा, न आलोचना की चिंता करूंगा। वे चाहते थे कि दलित वर्ग आगे आए, अपने पैरों पर खड़ा हो तथा आत्मप्रेरित होकर अन्याय का मुकाबला करे। डॉ. अम्बेडकर को गिडगिड़ाने से सख्त नफरत थी। वे सम्मान खोकर, दया के पात्र बनकर कुछ भी प्राप्त नहीं करना चाहते थे। उनका विश्वास था कि मनुष्य स्वयं अपना भाग्य निर्माता है। वे मानते थे कि अछूतों को स्वयं ही अपना उद्धार करना होगा और उसकी पहल भी उन्हें ही करनी होगी। उनके द्वारा प्रेरित आत्मसम्मान, गौरव और अधिकार बोध ने दलितों में नवीन चेतना पैदा कर दी। बहुतों ने मांगना छोड़ दिया, जूठन लेना बंद कर दिया और अपने स्टेट्स के प्रति ध्यान देना शुरू कर दिया। डॉ. अम्बेडकर ने दीन-हीन दलितों में नवजागरण का शंखनाद करते हुए मंत्र फूंका- शिक्षित बनों, संगठित होओं और संघर्ष करो। डॉ. अम्बेडकर का आदर्श था न दैन्य, न पलायन। दलितों के हितों का उद्‌घोष करते हुए सन 1930 में प्रथम गोलमेज सम्मेलन में सामाजिक क्रांति के पुरोधा डॉ. अम्बेडकर ने वेदनासिक्त शब्दों में कहा था 'अछूतों की स्थिति दासों और कुत्तों से भी बुरी है, उन्हें छूना भी पाप समझा जाता है।' वस्तुत: उनकी इस घोषणा में उनकी आपबीती दलित पीड़ा ही व्यक्त हो रही थी। यहीं नहीं, उन्होंने तो लंदन में यह भी कहा था कि बिना दलितों की दशा में सुधार के समाज का कोई अर्थ नहीं है।

RAHUL ENGINEERS LABORATORY

(An Independent Third Party Material Testing Laboratory)
ISO/IEC 17025: 2017 Accredited Laboratory by NABL (Quality Council of India)
ISO 9001: 2015 Certified Laboratory

Lalit Paneri (Propriter)
9829243949

A reliable and tested place for testing of chemical and mechanical parameters as under:

Facilities:

Cement	Aggregate	Bricks	Concrete
Paver Block	Soil	Rock	TMT Steel Bar
Bitumen	Bituminous Mix	Sand	Ores & Minerals
Water	Soapstone	Quartz	Feldspar
Limestone	Dolomite	China Clay	Iron Ore & Bauxite

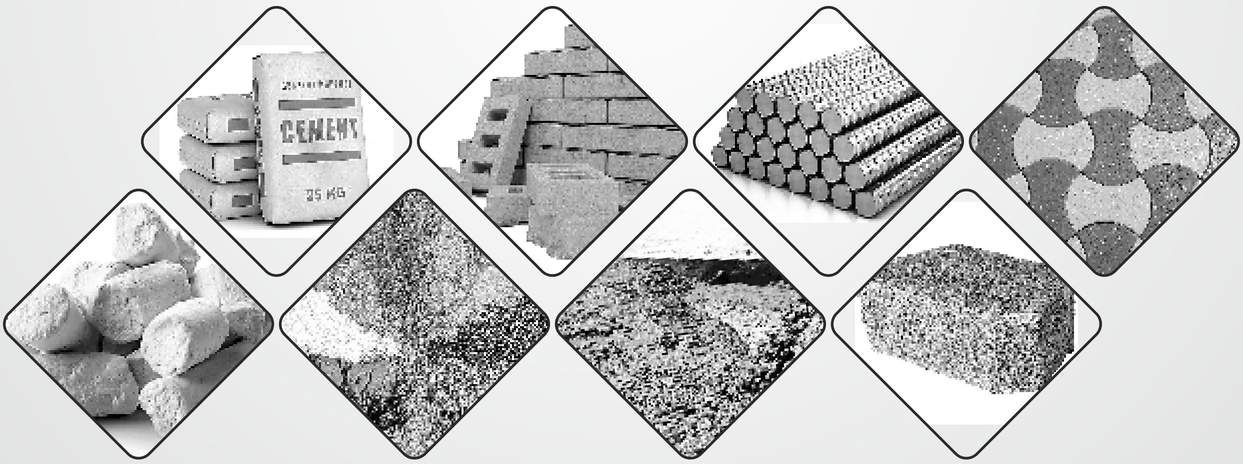

◗ Diatomaceous/ Siliceous Earth ◗ Cement Concrete Mix Design
◗ Bituminous Mix Design ◗ Geo-Tech Investigation of Soil
◗ Non Destructive Test on Concrete Structure ◗ Field Investigation
◗ Calibration of Pressure Gauges, CTM & UTM

5-A, Chitrakut Nagar, Bhuwana By-pass Road, Udaipur (Raj.) Pin- 313001 INDIA
Call: +91 98290-43949, +91 81073- 43935
Email: lab@rahulengineers.com, rahul.labudr@gmail.com, Website: www.rahulengineers.com

सृष्टि के जन्म का दिन प्रतिपदा

जो समय व्यतीत हो गया, वह हमारा भोगा हुआ यथार्थ था। उसकी अनेक कटु और मधुर स्मृतियां हमारे साथ हैं, जिन्हें विस्मृत तो किया जा सकता है, मगर बदला नहीं जा सकता। इसके विपरीत आने वाला प्रत्येक पल हमारे लिए अज्ञात है, जिसके साथ अनेक आशाएं और आशंकाएं जुड़ी होती हैं। आने वाला यह समय जब पूरे वर्ष की इकाई में आबद्ध होता है, तब हमारी ये आशाएं और आशंकाएं और भी अधिक बढ़ जाती हैं।

प्रो. योगेशचन्द्र शर्मा

ऋग्वेद में आए एक उल्लेख के अनुसार दीर्घात्मा ऋषि ने युगयुगों तक तपस्या करके ग्रह, उपग्रह, तारा नक्षत्र आदि की स्थिति का आकाश-मंडल में पता लगाया और इसके उपरान्त उनके आधार पर समय को विभिन्न कालखण्डों में विभाजित किया गया। ऋग्वेद की एक ऋचा (1.164.48) के अनुसार 12 भागों में विभक्त 360 अंशों के चक्र में सर्दी, गर्मी, वर्षा रूपी तीन नाभियां हैं। अथर्ववेद (10.8.4) में 360 अंशों को शंकु और खोला कहकर स्पष्ट किया गया है। महाभारत (वन पर्व अध्याय 133) में कालखण्ड को संवत्सर के रूप में स्पष्ट करते हुए लिखा है कि 24 पर्व (पक्ष) 12 घेरे (मास), 6 नाभि (ऋतु) और 360 आरे (दिन) का चक्र निरन्तर घूम रहा है। जैमिनीय ब्राह्मण (1.167) के अनुसार संवत्सर प्रजापति है, जो सर्दी में कुओं का पानी गर्म करके और गर्मी में उसे शीतल करके अपनी प्रजा की पालना करता है। ज्योतिष के प्राचीन ग्रन्थ 'सूर्य-सिद्धान्त' के अनुसार पृथ्वी, सूर्य का चक्कर लगाने में 365 दिन 15 घड़ी, 31 पल तथा 31 विपल का समय लेती है। सूर्य-सिद्धान्त के अनुसार यही एक वर्ष है। चन्द्र-सिद्धान्त में नक्षत्रों के आधार पर अधिक दिन और अधिक मास को जोड़कर वर्ष की यह अवधि पूरी की जाती है।

समय को कालखण्ड में विभाजित करने की यह प्रक्रिया सर्वप्रथम भारत में प्रारम्भ की गई, जो आज भी अपने वैज्ञानिक आधार के लिए हर कसौटी पर खरी उतरती है। इस तथ्य को विश्वभर के वैज्ञानिकों ने स्वीकारा है। जर्मन दार्शनिक मैक्समूलर ने भी यह स्वीकार किया है कि आकाश-मंडल आदि के बारे में भारतीय लोग मूल आविष्कारकर्ता हैं। अंग्रेज इतिहासकार डी-मार्गन ने भारतीय गणित और ज्योतिष को सबसे अधिक प्राचीन और मौलिक बतलाया। चीनी विद्वान लियांग चिचाव के अनुसार वर्तमान सभ्य जातियों ने जब हाथ पैर हिलाना भी प्रारम्भ नहीं किया था, तभी भारत ने मानव सम्बन्धी समस्याओं को ज्योतिष जैसे विज्ञान से सुलझाना प्रारम्भ कर दिया था।

जो समय व्यतीत हो गया, वह हमारा भोगा हुआ यथार्थ था। उसकी अनेक कटु और मधुर स्मृतियां हमारे साथ हैं, जिन्हें विस्मृत तो किया जा सकता है, मगर बदला नहीं जा सकता। इसके विपरीत आने वाला प्रत्येक पल हमारे लिए अज्ञात है, जिसके साथ अनेक आशाएं और आशंकाएं जुड़ी होती हैं। आने वाला यह समय जब पूरे वर्ष की इकाई में आबद्ध होता है, तब हमारी ये आशाएं और आशंकाएं और भी बढ़ जाती हैं। इसलिए विश्वभर में नए वर्ष के आगमन पर अनेक ज्योतिषीय भविष्यवाणियां की जाती हैं, राजनीतिक अनुमान लगाए जाते हैं तथा व्यक्तिगत स्तर पर एक दूसरे को शुभकामनाएं दी जाती हैं। इस अवसर पर व्यक्ति आगामी वर्ष के लिए अनेक योजनाएं बनाते हैं और कुछ ठोस कार्य करने का संकल्प भी लेते हैं। हम भारतवासियों के लिए नव वर्ष का यह दिन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को पड़ता है। अपनी प्राचीन संस्कृति और संस्कारों को भुलाकर शहरी संस्कृति में पले बढ़े भारतवासी अब प्रथम जनवरी को ही नया वर्ष मनाते हैं और उसी समय अंग्रेजी ढंग के शोरगुल के साथ नव वर्ष के स्वागत की औपचारिकताएं पूरी कर दी जाती हैं। अधिकांश ग्रामों में और कहीं-कहीं शहरों में भी हिन्दूजन अब भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को प्रारम्भ होने वाले नव संवत्सर के साथ जुड़े हुए हैं।

हमारा यह संवत्सर साधारण नहीं हैं। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार प्रजापति ने अपने शरीर से जो प्रतिमा उत्पन्न की, उसको 'संवत्सर' कहा गया। अत: संवत्सर की उपासना प्रजापति की उपासना है। वर्तमान में प्रचलित हमारे विक्रम-

संवत् का प्रारम्भ तो चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से हुआ ही है, इसके साथ पुराणों के अनुसार वर्तमान सृष्टि की रचना भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही प्रारम्भ हुई। ऋग्वेद के ऋत-सूक्त में इसका उल्लेख करते हुए कहा गया है:-

समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्रीणि विदधद् विश्वस्य मिषतो वशी।।

अर्थात् प्रजापति ने सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, स्वर्ग, पृथ्वी, अन्तरिक्ष की रचना की और उसी दिन से संवत्सर का भी कार्य प्रारम्भ हो गया। इस प्रकार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का दिन नव वर्ष प्रतिपदा के रूप में प्रारम्भ से लेकर अब तक मनाया जाता रहा है। इसी दिन से हमारा सृष्टि संवत् प्रारम्भ हुआ, जो विश्व का सबसे पुराना संवत् है और जो हमें अपनी सृष्टि की आयु की जानकारी देता है। तद्नुसार हमारी सृष्टि की रचना हुए अब तक अरब 96 करोड़ वर्ष से भी कुछ अधिक समय व्यतीत हो चुका है।

यह उल्लेखनीय है कि आज के वैज्ञानिक भी काफी घूमफिर कर इसी नतीजे पर पहुंचे हैं कि सृष्टि का निर्माण हुए लगभग दो अरब वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, जबकि हमारे ऋषि-महार्षियों ने इस तथ्य की जानकारी कई हजार वर्ष पूर्व प्राप्त कर ली थी।

उनके द्वारा निर्धारित प्रक्रिया से कालगणना में आज भी कहीं कोई चूक नहीं होती।

सृष्टि-संवत् के साथ ही हमारे यहां अन्य अनेक संवत् भी प्रचलन में रहे। उदाहरणार्थ परशुराम, वामन, मत्स्य, राम, रावण, युधिष्ठिर, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, हर्ष आदि के नाम पर संवत्सर चले। कलिसंवत् तो अब भी यत्र-तत्र प्रचलन में है। कतिपय सन्तों के नाम पर भी संवत् चले। इस समय हमारे यहां सबसे अधिक प्रचलन में विक्रम-संवत् है। विक्रम-संवत् सहित कुछ अन्य संवत् भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन प्रारम्भ हुए। पौराणिक आख्यानों के अनुसार अन्य अनेक धार्मिक घटनाएं भी इसी दिन के साथ जुड़ी हुई हैं। भगवान विष्णु का मत्स्यावतार तथा श्रीराम का राज्याभिषेक भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन ही हुआ था। कलियुग का प्रारम्भ भी इसी दिन से माना जाता है। वराहमिहिर की बृहत्संहिता तथा भास्कराचार्य के सूर्य सिद्धान्त का वार्षिक आधार भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होता है।

गौर ए गणगौर माता खोल किंवाड़ी

रमेश सर्राफ धमोतर

भारत धर्म प्रधान देश है। धर्म नियंत्रित एवं आस्तिक भाव से परिपूर्ण इसके धर्ममीरू प्रदेश राजस्थान को देवभूमि कहा जाय तो अनुचित न होगा। इसी कारण यहां सभी पौराणिक एवं वैदिक देवी-देवताओं के मंदिर पूजित हैं। उनके उत्सव अत्यन्त उल्लास व धूमधाम से मनाए जाते हैं। 'गणगौर' का लोकोत्सव भी प्रमुख है। जिसकी पृष्ठभूमि भी पौराणिक है। मुख्यत: यह कन्याओं का प्रमुख पर्व है। होली के दूसरे दिन से ही सोलह दिन तक कन्याएं प्रतिदिन 'ईसर-गणगौर' को पूजती हैं।

हमारा देश एक धर्म प्रधान देश है। धर्म नियंत्रित एवं आस्तिक भाव से परिपूर्ण धर्म भीरू राजस्थान को देव भूमि कहा जाए तो अनुचित नहीं होगा। प्राचीन काल से ही यह वीर भूमि सर्व धर्म शरणदायनी रही है। इसी कारण सभी पूजा पद्धतियों एवं सम्प्रदाय यहां वैचारिक दृष्टि से फले फूले हैं। उन सबमें परस्पर सहिष्णुता एवं एक दूसरे के उपास्य देवों के प्रति सहज सम्मान का भाव रहा है। सनातन धर्मी राजस्थानी शासकों ने प्राणी मात्र की सद्भावना की जागृति एवं विश्व कल्याण की मंगल भावना से अभिभूत होकर जनगण की लोक मान्यताओं का सदा सम्मान किया है। इसी कारण यहां सभी पौराणिक एवं वैदिक देवी देवताओं के मन्दिर पूजित हैं। उनके उत्सव भी ऐसा ही लोकोत्सव है, जिसकी पृष्ठ भूमि पौराणिक है। काल प्रभाव से उनमें शास्त्राचार के स्थान पर लोकाचार हावी हो गया है परन्तु भाव भंगिमा में कोई कमी नहीं आई है।

गणगौर का पर्व राजस्थान में अनादिकाल से ही एक प्रमुख लोकोत्सव के रूप में मनाया जाता रहा है। विवाहिता एवं कुवारी सभी आयु वर्ग की महिलाएं गणगौर की पूजा करती है। होली के दूसरे दिन से सोलह दिनों तक लड़कियां प्रतिदिन प्रात: काल ईसर-गणगौर को पूजती हैं। जिस लड़की की शादी हो जाती है वो शादी के

प्रथम वर्ष अपने पीहर जाकर गणगौर की पूजा करती है। इसी कारण इसे 'सुहागपर्व' भी कहा जाता है। कहा जाता है कि चैत्र शुक्ला तृतीया को राजा हिमाचल की पुत्री गौरी का विवाह शंकर भगवान के साथ हुआ। उसी की याद में यह त्यौहार मनाया जाता है। कामदेव मदन की पत्नी रति ने भगवान शंकर की तपस्या कर उन्हें प्रसन्न कर लिया तथा उन्हीं के तीसरे नेत्र से भस्म हुए अपने पति को पुन: जीवन देने की प्रार्थना की। रति की प्रार्थना से प्रसन्न हो भगवान शिव ने कामदेव को पुन: जीवित कर दिया तथा विष्णुलोक जाने का वरदान दिया। उसी की स्मृति में प्रति वर्ष गणगौर का उत्सव मनाया जाता है एवं विवाह के समस्त नेगचार होते हैं। होलिका दहन के दूसरे दिन गणगौर पूजने वाली बालाएं होली दहन की राख लाकर उसके आठ पिण्ड बनाती हैं एवं आठ पिण्ड गोबर के बनाती हैं तथा उन्हें दूब पर रखकर प्रतिदिन पूजा करती हुई दीवार पर एक काजल व एक रोली की टिकी लगाती हैं। शीतलाष्टमी तक इन पिण्डों को पूजा जाता हैं, फिर मिट्टी से ईसर गणगौर की मूर्तियां बनाकर उन्हें पूजती हैं। लड़कियां प्रात: ब्रह्ममुहुर्त में गणगौर पूजते हुए गाती हैं- 'गौर ये गणगौर माता खोल किवाड़ी, छोरी खड़ी है तन पूजण वाली।'

गीत गाने के बाद लड़कियां गणगौर की कहानी सुनती है। दोपहर को गणगौर के भोग लगाया जाता है तथा गणगौर को कुए से लाकर पानी पिलाया जाता है। लड़कियां कुए से ताजा पानी लेकर गीत गाती हुई आती हैं-

'ईसरदास बीरा को कांगसियो म्हे मोल लेस्यांराज,
रोंवा बाई का लाम्बा-लाम्बा केश,
कांगसियों बाईक सिर चढ्योजी राज।

'म्हारी गौर तिसाई ओ राज घाट्यारी मुकुट करो, बीरमदासजी से ईसर ओराज, घाटी री मुकुट करो, म्हारी गौरल न थोड़ो पानी पावो जी राज घाटीरी मुकुट करो।

लड़कियां गीतों में गणगौर के प्यासी होने पर काफी चिन्तित लगती हैं एवं वे गणगौर को शीघ्रतिशीघ्र पानी पिलाना चाहती हैं। पानी पिलाने के बाद गणगौर को गेहूं चने से बनी 'घूघरी' का प्रसाद लगाकर सबको बांटा जाता है और लड़कियां गाती हैं-

'म्हारा बाबाजी के माण्डी गणगौर,

दादसरा जी के माण्ड्यो रंगरो झूमकड़ो,
ल्यायोजी-ल्यायो ननद बाई का बीर,
ल्यायो हजारी ढोला झूमकड़ो।

रात को गणगौर की आरती की जाती है तथा लड़कियां नाचती हुई गाती हैं-

'म्हारा माथान मैमद ल्यावो म्हारा हंसा
मारू यही रहवो जीए'
म्हारा काना में कुण्डल ल्यावो म्हारा हंसा
मारू यहीं रहवोजी।

गणगौर पूजन के मध्य आने वाले एक रविवार को लड़कियां उपवास करती हैं। प्रतिदिन शाम को क्रमवार हर लड़की के घर गणगौर ले जाई जाती है, जहां गणगौर का बिन्दौरा निकाला जाता है तथा घर के पुरूष लड़कियों को भेंट देते हैं। लड़कियां खुशी से झूमती हुई गाती हैं- ईसरजी तो पेंचो बांध गोराबाई पेच सवार ओ राज म्हे ईसर थारी सालीछां।

गणगौर विसर्जन के पहले दिन गणगौर का सिंगारा किया जाता है, लड़कियां मेहन्दी रचाती हैं, नये कपड़े पहनती हैं, घर में पकवान बनाए जाते हैं। सत्रहवें दिन लड़कियां नदी, तालाब, कुए, बावड़ी में ईसर गणगौर को विसर्जित कर विदाई देती हुई दुखी हो गाती हैं- गोरल ये तू आवड़ देख बावड़ देख तन बाई रोवा याद कर। गणगौर की विदाई का बाद त्यौहार काफी समय तक रोवा याद कर। गणगौर की विदाई का बाद त्यौहार काफी समय तक नहीं आते इसलिए कहा गया है- 'तीज त्यौहार बावड़ी ले डूबी गणगौर' अर्थात् जो त्यौहार तीज, श्रावण मास से प्रारम्भ होते हैं उन्हें गणगौर ले जाती है। ईसर-गणगौर को शिव पार्वती का रूप मानकर ही बालाएं उनका पूजन करती हैं। गणगौर के बाद बसन्त ऋतु की विदाई व ग्रीष्म ऋतु की शुरूआत होती है। दूर प्रान्तों में रहने वाले युवक गणगौर के पर्व पर अपनी नव विवाहित प्रियतमा से मिलने अवश्य आते हैं। जिस गोरी का साजन इस त्यौहार पर भी घर नहीं आता वो सजनी नाराजगी से अपनी सास को उलाहना देती है- 'सासू भलो रे जायो, ये निकल गई गणगौर' मोल्यो मोड़ो आयो रे' राजस्थान की राजधानी जयपुर में गणगौर उत्सव दो दिन तक धूमधाम से मनाया जाता है। ईसर और गणगौर की प्रतिमाओं की शोभायात्रा राजमहलों से निकलती है इनके दर्शन करने देशी-विदेशी सैलानी उमड़ते हैं। सभी उत्साह से भाग लेते हैं। इस उत्सव पर एकत्रित भीड़ जिस श्रद्धा एवं भक्ति के साथ धार्मिक अनुशासन में बंधी गणगौर का जय-जयकार करती हुई भारत की सांस्कृतिक परम्परा का निर्वाह करती है जिसे देख कर अन्य धर्मावलम्बी इस संस्कृति के प्रति श्रद्धा भाव से ओतप्रोत हो जाते हैं। ढूंढाड़ की भांति ही मेवाड़, हाड़ौती, शेखावाटी सहित इस मरूधर प्रदेश के विशाल नगरों में ही नहीं बल्कि गांव-गांव में गणगौर पर्व मनाया जाता है एवं ईसर-गणगौर के गीतों से हर घर गुंजायमान रहता है।

हमें आवश्यकता है आज इस भक्तिमय, श्रद्धापूर्ण एवं लोक कल्याण के लिए संस्थापित लोकोत्सव को संज्ञान वातावरण में मनाए जाने की परम्परा को अक्षुण बनाए रखने की। इसका दायित्व है उन सभी सांस्कृतिक परम्परा के प्रेमियों एवं पोषकों पर जिनका इससे लगाव है और जो सिर्फ पर्यटक व्यवसाय की दृष्टि से न देखकर भारत के सांस्कृतिक विकास की दृष्टि से देखने के हिमायती हैं।

सोलहवीं पुण्यतिथि पर
हार्दिक श्रद्धांजलि

परम श्रद्धेय आदरणीय

आनन्दीलाल जी शर्मा

(उपाचार्य, लोकमान्य तिलक बी.एड कॉलेज डबोक, उदयपुर)
(पूर्व प्राचार्य आर. एम. वी. बी. एड, कॉलेज, उदयपुर)
(पूर्व, प्राचार्य हरिभाऊ उपाध्याय महिला बी. एड कॉलेज, हटून्डी, अजमेर)

|| श्रद्धानवत ||

पंकज-रेणु, नीरज-डॉ. अनिता (पुत्र-पुत्रवधु), अभिजय, मेघांश (पौत्र), आर्षेयी, प्रिशा (पौत्री) शोभा-सुरेन्द, सुधा-ओम, डॉ.वीणा-स्व. गौरव, अरुणा-पद्म, रश्मि-अनिल (पुत्री-दामाद) दोहित्र-दोहित्री :- प्रत्यूष, मोहित, स्व. चिन्मय, तन्मय, भार्गवि, नयन नारायण, पूर्वा, हार्दिक, चिर्कीषु, जिगिषा

जन्मः 28.11.1927
निधनः 05.04.2006

रक्षाबन्धन, धानमण्डी,उदयपुर

दूर रहेंगी गर्मी की बीमारियां

डॉ. सुनील शर्मा

गर्मियां शुरू होते ही सभी को यह चिंता सताने लगती हैं कि तपन में खुद को स्वस्थ और तरोताजा कैसे रखें। डॉक्टरों की मानें तो गर्मियों का मौसम बीमारियों का मौसम है। इसलिए बदलते मौसम के साथ जीवन शैली में बदलाव लाकर कुछ सावधानियां बरतने की बेहद जरूरत है। गर्मियों के मौसम में हॉस्पिटलों में रोगियों की संख्या बाकी दोनों मौसम के मुकाबले अधिक होती है। इसीलिए इसे बीमारियों का मौसम कहा जाता है। गर्मियों में सेहतमंद रहने के लिए विशेष सावधानियां बरतनी चाहिए। इसके लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि इस मौसम में कौन-कौनसी स्वास्थ्य समस्याएं होती हैं और इनसे कैसे निपटा जाए।

ठंडा–गर्म

तापमान में अचानक बदलाव लाने से सर्द–गर्म की समस्या हो जाती है। हम अक्सर गर्मियों में ऑफिस पहुंच कर या बाहर से घर आकर गर्मी से राहत पाने के लिए कम तापमान पर एसी चला देते हैं या फिर एकदम बर्फ का ठंडा पानी पी लेते हैं, जो सेहत के लिए काफी नुकसानदायक साबित हो सकता है। शरीर के तापमान में अचानक 7 डिग्री से अधिक बदलाव शरीर की प्रतिरोधक शक्ति को कमजोर कर देता है, जिस कारण बार–बार जुकाम, गला खराब होना, वायरल इन्फेक्शन जैसी समस्याएं हो सकती हैं।

कैसे बचें

- धूप से निकलकर तुरंत एसी या ठंडे स्थान पर न जाएं।
- एसी या ठंडे स्थान से निकलकर तुरंत धूप में न जाएं।
- गर्मी से आने के बाद तुरंत बाद ठंडा पानी न पिएं।
- गर्म खाने के साथ चिल्ड पानी न पिएं।
- फ्रिज में रखी चीजों को सामान्य तापमान पर लाकर खाएं।

अधिक पसीना आना

पसीना आना एक स्वाभाविक बायलॉजिकल प्रक्रिया है। गर्मियों में बाहर का तापमान बढ़ने से शरीर का तापमान भी बढ़ जाता है। इस ताप को स्थिर रखने के लिए शरीर से अधिक पसीना निकलता है और यह अधिक पसीना आना भी डी हाइड्रेशन का कारण बनता है। इसलिए जरूरी है कि शरीर में जल के स्तर को बनाए रखा जाए।

कैसे बचें

- रसीले फल, मौसमी सब्जियों, दही, छाछ, नींबू पानी का सेवन अधिक मात्रा में करें।
- तेज गर्मी और धूप में अधिक समय न बिताएं।
- बहुत अधिक शारीरिक श्रम करने से बचें और धूप में कठिन काप करने से भी बचें।
- कॉटन या लिनेन के हल्के रंग के आरामदायक कपड़े पहनें।

डी हाइड्रेशन

डी हाइड्रेशन गर्मियों की सबसे सामान्य समस्या है। गर्मियों में बाहरी तापमान बढ़ने से शरीर का तापमान भी बढ़ जाता है। ऐसे में शरीर के ताप को स्थिर बनाए रखने के लिए अधिक मात्रा में पसीना निकलता है। अत्यधिक पसीना आने के कारण डी हाइड्रेशन की समस्या हो जाती है। गर्मियों में लगातार एसी में रहने से भी कम पानी पी पाते हैं। इससे भी डी हाइड्रेशन की समस्या हो सकती है।

कैसे बचें

- तेज धूप और गर्मी में बाहर निकलने से बचें, क्योंकि इससे शरीर का तापमान सामान्य से अधिक हो जाता है, जो डी हाइड्रेशन का कारण बनता है।
- गर्मियों में डी हाइड्रेशन से बचने के लिए कम से कम 3–4 लीटर पानी पिएं।
- नारियल पानी, बेल का शरबत, नींबू पानी, आइस टी आदि का सेवन भी करें, क्योंकि इससे शरीर में शीतलता बनी रहती है।

फूड पॉयजनिंग

गर्मी के मौसम में बासी खाना खाने, दूषित जल पीने व बाहर के कटे–खुले खाद्य पदार्थों को खाने के कारण फूड पॉयजनिंग व अनेक प्रकार के संक्रमणों का खतरा बढ़ जाता है। फूड पॉयजनिंग गंभीर होकर घातक भी हो सकता है।

कैसे बचें

- उबला हुआ या फिल्टर किया हुआ पानी पीएं।
- ताजे और स्वच्छ भोजन का सेवन करें।
- आवश्यकता से अधिक खाना ना खाएं।
- कच्ची सब्जियों और फलों को धोकर खाएं।

अपच और भूख न लगना

गर्मियों में बाहरी और आंतरिक तापमान बढ़ने से कई लोगों को पाचन तंत्र से संबंधित समस्याएं हो जाती हैं। तापमान में बढ़ोतरी होने से एंजाइम्स की कार्य प्रणाली भी प्रभावित होती है। इससे भी खाना ठीक प्रकार से नहीं पचता। तैलीय, मसालेदार भोजन और कैफीन के अधिक मात्रा में सेवन से भी अपच की समस्या हो जाती है। गर्म और नम मौसम में सूक्ष्म जीव अधिक मात्रा में पनपते हैं। इनसे होने वाले संक्रमण से भी अपच की समस्या अधिक होती है। डी हाइड्रेशन के कारण कब्ज की समस्या भी हो जाती है।

कैसे बचें

- ताजे, हल्के और सुपाच्य भोजन का सेवन करें।
- कैफीन का अधिक मात्रा में सेवन न करें।
- तैलीय, मसालेदार भोजन का सेवन कम करें।
- ओवरइटिंग से बचें।

जल और खाद्य जनित रोग

डायरिया, टाइफाइड और पीलिया को खाद्य और जलजनित रोग माना जाता है। ये दूषित खाद्य पदार्थों और दूषित जल के सेवन से होते हैं। वैसे तो ये किसी को कभी भी हो सकता है, लेकिन गर्मियों में इन बीमारियों के मामले काफी बढ़ जाते हैं।

कैसे बचें

- जब भी जरूरी हो, हाथ अच्छी तरह साबुन से जरूर धोएं।
- बासी और प्रदूषित भोजन के सेवन से बचें।
- सड़क किनारे लगी रेहड़ियों से न खाएं।
- साफ पानी का सेवन करें।
- दही का सेवन अधिक मात्रा में करें, क्योंकि इससे पाचन तंत्र दुरुस्त रहता है।
- अधपके मांसाहारी खाद्य पदार्थों का सेवन न करें या करने से बचें।
- सब्जियों और फलों को अच्छा तरह धोने के बाद ही उपयोग में लाएं।

C.P. Mandot, Director
Gajendra Mandot, Director

महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं

Ph.: 0294-2420629 (S)
2420470, 2417026 (R)
9413663922, 9413812280 (M)

Madanlal Nandlal
(Nathdwara Wala)

All Type of Fancy Cloth Merchant

Shop: Maldas Street, Udaipur- 313001 (Raj.)
Resi.: 46/5, Ashok Nagar, Udaipur (Raj.)

भगवान महावीर के लोक-कल्याणकारी सिद्धांत

हीराचंद वैद

भगवान महावीर का जीवन और दर्शन विशाल व व्यापक था। वे सबके थे और सब उनके थे। उनके तीन लोक कल्याणकारी सिद्धांत थे। अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत। इनके बिना कोई समाज-राष्ट्र जीवित नहीं रह सकता। महावीर की अहिंसा का अर्थ है- स्वयं भी जीओ और दूसरों को भी जीने दो। अहिंसा से ही प्रेम, वात्सल्य, करूणा और सह अस्तित्व और एकत्व की भावनाएं पल्लवित-पुष्पित हो सकती हैं। 14 अप्रैल को भगवान महावीर का 2621वां जन्म कल्याणक उत्साह से मनाया जाएगा।

भगवान महावीर के उदय के पहले धार्मिक और सामाजिक चेतनाएं खत्म हो चुकी थीं। राष्ट्र की आत्मा को धार्मिक और सामाजिक रूढियों ने जर्जरित कर दिया था। अंत्यजों पर वर्ण भेद और जाति भेद के नाम पर अत्याचार हो रहे थे। मानव-मानव में भेद की खाइयां खोद दी गई थीं। अबलाएं सताई जाती थीं। कौशाम्बी जैसे नगरों के चौराहों पर सुंदरियों बिक्री होती थी और जबर्दस्ती उन्हें नगर वधू घोषित किया जाता था। चारों तरफ हाहाकार और चीत्कार थी। मानवता खत्म हो रही थी। ऐसे समय में महावीर जैसे महापुरूष का उदय इस वसुंधरा पर राजा सिद्धा और रानी त्रिशला के घर पर क्षत्रिय कुण्ड ग्राम में हुआ। महावीर जब बालक से युवा बने। उनसे राष्ट्र यह की स्थिति देखी नहीं गई। वे राष्ट्र निर्माण के लिए आगे बढ़े। उनके निर्णय को विशाल वैभव, सम्पत्ति और विशाल प्रासाद बदल नहीं सके और वे बैठ गए एकांत स्थल में। उन्होंने अध्ययन किया तत् युगीन समस्याओं का और सोचा कि इन का हल क्या हो? महावीर मानवतावादी विचारधारा के महापुरूष थे। वे चाहते थे विश्व के समस्त प्राणी समानता के आधार पर चलें। न उनमें वर्ग भेद हो और न जाति भेद। वे चाहते थे धार्मिक और सामाजिक क्रांति। उनकी क्रांति का अर्थ था सिर्फपरिवर्तन। जीवन में परिवर्तन, विचारों में परिवर्तन और आाचार में परिवर्तन। महावीर ने सबसे पहले धार्मिक क्रांति की। धर्म को मन्दिर और देवालयों की दीवारों से निकाला। कहा कि धर्म का संबंध वह स्वयं से है। वह स्वयं की चीज है। धर्म न स्वयं का हनन चाहता और न दूसरों का। धर्म चाहता है समानता का व्यवहार। जिसमें सह अस्तित्व की भावनाएं निहित हैं। महावीर ने धर्म को पथ भेदों व वर्ग भेदों की संकीर्ण दिवारों से नहीं बांधा। उनका जीवन और दर्शन विशाल व व्यापक था, इसलिए वे स्वयं भी किसी वर्ग विशेष व जाति विशेष के बंधन में नहीं आए। महावीर सबके थे और सब महावीर के। इसलिए महावीर प्राणी मात्र की आस्था के एक महान प्रतीक थे। महावीर की सभाओं में, उनके प्रवचनों में जन समुदाय तो जाता ही था, पशु पक्षी भी वहां जाकर शांति की श्वास लेते थे। भगवान महावीर के लोक कल्याणकारी तीन सिद्धांतों का सम्बन्ध प्राणी मात्र से है। इन सिद्धांतों के बिना राष्ट्र जीवित नहीं रह सकता। महावीर की अहिंसा का अर्थ था स्वयं भी जीयो और दूसरों को भी जीने दो। यदि जीवन का आधार अहिंसा न हो तो राष्ट्र जीवित ही नहीं रह सकता। अहिंसा से ही प्रेम वात्सल्य संगठन करूणा और सह अस्तित्व की भावनाएं पनप सकती हैं। नही तो कोई राष्ट्र जीवित नहीं रह सकता। इस अहिंसा की पूर्णता के लिए महावीर ने अपरिग्रह और अनेकांत विचार धारा को जन्म दिया क्यों कि जहां शोषण और विचारों में विभिन्नताएं होती हैं, वहां अहिंसा पनप नहीं सकती, इसलिए महावीर ने शोषणहीन जीवन के लिए अपरिग्रह को अनिवार्य बतलाया और राष्ट्र में भाषागत व जातिगत विवाद न हो इसके लिए अनेकांत चिंतन किया। इन तीनों सिद्धांतों के प्रचार के लिए महावीर ने अपना समस्त जीवन समर्पित कर दिया। उनके जीवन में विशाल त्याग और संयम था। उनका एक ही लक्ष्य था - पदयात्रा कर जन संपर्क करना, असहाय, असमर्थ और पतितों को सन्मार्ग दिखाना तथा राष्ट्र में नैतिकता का प्रचार करना। इस प्रचार में महावीर ने अत्यजों और नारी जाति को ऊंचा उठाया, उनको सही दृष्टि दी। उनकी दृष्टि में राजा रंक, कीट-पतंग सब एक समान थे। महावीर का आहार राजघरानों में शायद ही हुआ हो। पतिता चंदना जैसी महान सत्ती के घर तो अवश्य हुआ। आज मानव गुमराह हो रहा है। त्याग और संयम की जगह विलासिता को महत्व दिया जा रहा है। जिसकी पूर्ति के लिए अनैतिकताएं बढ़ती जा रही है। ऐसी स्थिति में समाज दायरे से बाहर निकल कर महावीर के सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प करे। तभी महावीर महोत्सव सार्थक हो सकता है।

महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं

Nirmal Ratodia, Director
9352521995, 0294-2484257

Rochin Ratodia, Director
9636814573, 8112208509

RATODIA ELECTRICALS

Cables, Wire, Pipe, Band Switches & Domestic Fitting Accessories

LEGEND CAB® Wires & Cables

Building Wires | Multi Strand Wire

HT/LT Powered Control Cables

ISO 9001:2008

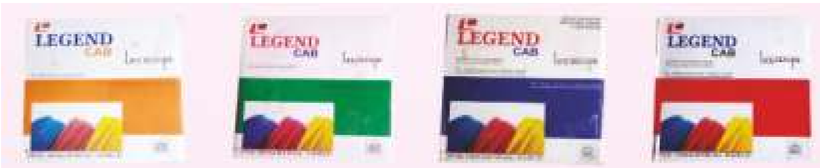

4- Hotel Payal Building, Udaipole, Udaipur - 313 001

NABL* प्रमाणित लेब

मेडिसेन्टर
सोनोग्राफी एण्ड क्लिनिकल लेब

जब हम हैं **आपके पास**
तो मिलेगा **सटीक जांच**
से सम्पूर्ण इलाज

*Clinical Biochemistry

- **4 वर्षों से** लगातार गुणवत्तापूर्ण एवं सटीक जांचों के लिए NABL* द्वारा प्रमाणित
- **14 वर्षों से** सभी प्रकार की जांचों के लिए विश्वसनीय संस्थान
- **10 लेब का** दक्षिणी राजस्थान में नेटवर्क
- **200 से** अधिक सम्बंधित अस्पताल व लेब

अत्याधुनिक मशीनों का विश्वास
GE, E-10. Roche C 311, E411, Backman DXI 800

बाहरी, श्रेष्ठतम गुणवत्ता नियंत्रण
AIIMS (Delhi) And RANDOX (USA)

विश्वसनीय डॉक्टरों का भरोसा
कुशल प्रशिक्षित एवं अनुभवी टीम

एक छत्र तले उत्कृष्ट सेवाएं
रेडियोलॉजी और पैथोलॉजी की सभी जांच

एम.आर.आई • सी.टी.स्कैन • सोनोग्राफी • मैमोग्राफी • एक्स-रे • बी.एम.डी
उत्कृष्ट बायोप्सी एवं कैंसर जांचें • ऑटोमेटेड पैथोलॉजी लेब

मुख्य शाखा-गोकुल-1, अलंकार ज्वेल्र्स के पास, कोर्ट चौराहा, उदयपुर

शाखा 1 - श्रीनाथ प्लाजा, M.B. हॉस्पिटल के सामने, उदयपुर | डूंगरपुर - एल.आई.सी बिल्डिंग के पीछे, पुराने आर.टी.ओ. के सामने, हॉस्पिटल रोड़
शाखा 3 - हिरण मगरी, सेक्टर 14, सी.ए. सर्कल रोड़, उदयपुर | बांसवाड़ा - प्लाट नम्बर 15, महादेव कॉलोनी, एमजी हॉस्पिटल के पास | भीलवाड़ा - सेवा सदन रोड़
शाखा 2 - हिरण मगरी, सेक्टर 6, सैटेलाइट हॉस्पिटल के सामने, उदयपुर | चित्तौड़गढ़ - ग्राउंड फ्लोर, सम्राट प्लाजा, सेती मैन रोड़ नम्बर 5 के पास

Contact Us
0294-2422800 | 7665000234
www.medicentre.co.in
Follow us on

Designed By : Midinnings

सुनिए, देवी हमसे कुछ कहती हैं

नवरात्रि का सम्बंध हमारी शारीरिक और मानसिक ऊर्जा से है। देवी के जितने भी पाठ, मंत्र और पूजा विधान हैं, वे सभी ऋतुओं के साथ मिलकर व्यक्ति को संतुलन की ओर ले जाते हैं। नवरात्रि और दुर्गासप्तशती के महात्म्य पर सूर्यकांत द्विवेदी का आलेख।

देवी केवल मूर्तिस्वरूप नही हैं। हम उनका अर्चन अवश्य करते हैं, लेकिन देवी शास्त्र तो कुछ और ही कहता है। देवी का अर्थ प्रकाश है। वह शक्तिस्वरूपा हैं। दुर्गा सप्तशती को ध्यान से पढ़ें तो उसमें तीन अवस्थाओं, तीन प्रकृति, तीन प्रवृत्ति की व्याख्या है। हमारा धर्म, कर्म और राजतंत्र तीन चरणीय व्यवस्था का स्वरूप है। धर्मशास्त्रों में भी तीन ही देवी हैं। तीन ही देव हैं। तीन ही सृष्टि हैं- जल, थल और नभ। हमारा शरीर भी तीन हिस्सों में विभक्त हैं। इसमें ही समस्त शक्तियां निहित हैं। क्यों ? उत्तर है- यही शक्ति है। चैत्र और शारदीय नवरात्रि ऋतु परिवर्तन के पर्व हैं। चैत्र सृष्टि का उत्सव है। इसी से सृष्टि, गर्भधारण, जन्म-मृत्यु, काल गणना, परिवार, नर-नारी, प्रकृति, प्रवृत्ति आदि की नींव पड़ी। यूं नवरात्रि चार बार आती है। चैत्र, आषाढ़, आश्विन, और माघ दो नवरात्रि गुप्त होती है। चैत्र नवरात्रि से नव वर्ष प्रारंभ होता है। कलियुग का एक साल पूरा होता है और दूसरे में प्रवेश करता है। इस तरह नवरात्रि शक्ति पर्व को परिभाषित करता है।

शक्ति है क्या

शक्ति को हम भले ही देवी के रूप में लें, लेकिन शक्ति को परिभाषित करना कठिन है। श्री दुर्गा सप्तशती में देवी कहती हैं... शक्ति सभी में होती है। हर जीव और जंतु में ताकत होती है। मनुष्य इसलिए श्रेष्ठ है, क्योंकि उसमें अपनी शक्ति को परिभाषित करने और उसका विवेक के साथ इस्तेमाल करने का गुण होता है। हर प्राणी में बुद्धि और शक्ति है, लेकिन उसके पास विवेक नहीं है। विवेक केवल मनुष्य के पास है। इसी की अभिव्यक्ति और अनुगूंज सब जगह दिखाई देती है। अर्थात, देवी कहती हैं कि अपने अंदर की शक्ति को पहचानों और उसके बाद अपनी दिशा तय करो। निस्तेज मत बनो। शक्तिमान बनों। शक्ति महामाया सृष्टि की तीन अवस्थाओं का तीन रूपों में संचालन करती हैं। पहला है प्रकृति (पार्वती) संरक्षण। दूसरा है स्वास्थ्य (महाकाली) और परिवार। तीसरा है विकास (महालक्ष्मी और सरस्वती)। प्रकृति, परिवतज़्न और विकास यही तीन शक्तियां मुख्यतया महागौरी, महालक्ष्मी और महाकाली हैं।

अर्गलास्तोत्र

कवच से आगे अर्गलास्तोत्र है। देवी चंडिका को समर्पित। इसमें तो समस्त सांसारिक प्रार्थनाएं हैं। घर, परिवार, सुख, शांति, आरोग्य, शत्रु और समस्त भय-तापों को हरने की प्रार्थनाएं।

कीलक मंत्र

इसको मन ही मन करने का विधान है। मौन भी आवश्यक है। कुछ चीजें शांति, धैर्य और मूक निर्णय से तय होती हैं। रणनीति हो या प्रबंधन, सबको बताकर नहीं होते। किसी भी रण में जाएं तो उसका खुलासा नहीं किया जाता। रण के साथ नीति बनाई जाती है और उसका पालन किया जाता है। देवी को साथ लेकर देवता भी असुरों के साथ रण में जा रहे हैं, इसलिए, शांति, धैर्य और मूक निर्णय अपेक्षित थे। देवी का यही संदेश सभी का है।

वर्ष प्रतिपदा का महत्व

- नव पंचांग का प्रारम्भ। प्रतिपदा से सूर्य की काल गति परिवर्तित होती है और इसी से काल गणना होती है,
- चैत्र प्रतिपदा से सृष्टि का प्रारम्भ माना गया है।
- इसी दिन ब्रह्माजी ने जगत की रचना प्रारंभ की थी।
- आद्य शक्ति मां भवानी का प्राकट्य उत्सव। कहते हैं कि कार्तिकेय के रूप में भगवती ने प्रसूत-पुत्र उत्पन्न किया था। इससे पहले गर्भ धारण नहीं था। सृष्टि की उत्पत्ति यहीं से हुई नर और नारी के रूप में।

देवी का अर्थ

देवी का भाव भी यही है। देवी का अर्थ प्रकाश है। जो त्रितापों को हर ले, वह देवी है। देवी का आद्य नाम आल्ह: है। इसका अर्थ प्रकाश ही है। प्रकाश क्यों? सभी धर्मों में सृष्टि की उत्पत्ति ज्योतिपुंज से मानी गई है। इसी प्रकाश को एकाकार ब्रह्म माना गया है। देवी के सभी नौ स्वरूप (मूलत: तीन) और दश महाविद्या प्रकाश को अभिव्यक्त करते हैं। प्रकाश का अर्थ केवल विद्युतीय प्रकाश नहीं है। यह आत्मिक, आध्यात्मिक, शारीरिक, मानसिक और प्रगति का प्रकाश है। इसी में शक्ति निहित है।

श्री दुर्गा सप्तशती

श्री दुर्गा सप्तशती भगवती का अतुल्य ग्रंथ है। इसका प्रारम्भ देवी कवच से होता है। चारों ओर का प्राकृतिक और सांसारिक आवरण हमको कहीं न कहीं से रोगी कर देता है। कवच न हो तो कोई भी चीज सुरक्षित नहीं रहती। रोग है तो निदान आवश्यक है। वस्तु है तो उसकी देखभाल आवश्यक है। ह्रास होना प्राकृतिक गुण है। शरीर भी यही है। इसलिए, हम देवी से प्रार्थना करते हैं कि वह तीनों मंडलों में हमारी रक्षा करें। देवी नाना रूपों में रक्षा करती हैं। देवी कवच स्वास्थ्य का अमोघ कवच है। इसमें देवी के समस्त रूप शरीर के अवयवों के संरक्षण के ही संदेशवाहक हैं। दुर्गा सप्तशती धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का प्रतीक है। वेदों की तरह इसे भी अनादि कहा गया है। इसमें 700 श्लोक और तेरह अध्याय हैं। पहला चरित्र महालक्ष्मी, मध्यम चरित्र महालक्ष्मी और उत्तम चरित्र महासरस्वती का है। महाकाली की स्तुति एक अध्याय में, महालक्ष्मी की तीन अध्याय में और नौ अध्यायों में महासरस्वती की स्तुति है।

सबके मानस में हैं राम

विश्वनाथ त्रिपाठी

श्री राम के व्यक्तित्व की विशेषता यह है कि वह प्रत्येक युग के महानायक हैं। लोकचित्त ने उनके व्यक्तित्व को एतिहासिक स्थितियों के अनुकूल गढ़ लिया है। वे प्रत्येक युग की सामाजिक-ऐतिहासिक स्थितियों के ही नहीं, उस युग के व्यक्ति की मानसिकता की द्वंद्वात्मकता और औदात्य का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। राम भारतीय संस्कृति के प्रतीक रहे हैं। महात्मा गांधी के राम तो विश्व संस्कृति के प्रतीक हैं। आराध्य की मूर्ति आराधक से बनती है। महात्मा गांधी भारत के थे और विश्व के भी। उनके आराध्य बनकर राम वैश्विक संस्कृति के प्रतीक हो गए।

राम के जीवन पर आधारित वाल्मीकि का 'रामायण' हमारा आदिकाव्य है। वेद-पुराण देवताओं की गाथा बखानते हैं, रामायण मनुष्य की, इसलिए वह काव्य है। वह इसी लोक और अपने ही काल की गाथा कहता है- कोन्वस्मिन् साम्प्रतं लोके। सच पूछिए, तो काव्य का आधार प्रत्येक युग में अपना समय और अपना लोक, अपना देश-काल होता है। काव्य और उसके चरित्रों-पात्रों में प्रतीक होने की क्षमता होती है, इसलिए वह कालजयी हो जाता है। राम का जनप्रिय रूप उनके व्यक्तित्व का विशेष गुण रहा है। भगवान के सभी अवतार आराध्य हैं, किंतु राम सर्वाधिक जनप्रिय हैं। वाल्मीकि रामायण में तो उनकी जनप्रियता बार-बार रेखांकित की जाती है-

रामो नाम जनैः श्रुतः।

राम को मर्यादा पुरूषोत्तम और कृष्ण को लीला पुरूषोत्तम कहा जाता है। यह मर्यादा पुरूषोत्तम का सम्बोधन राम को यूंही नहीं मिला है। भगवान के शायद किसी अन्य अवतार रूप ने आजीवन इतना संघर्ष नहीं किया। कृष्ण की लीला याद आती है बरबस, और राम का वनवास। राम कथा के महान गायकों ने राम की इस आजीवन संघर्ष-गाथा को अनेकश: रेखांकित किया है। वाल्मीकि के राम कहते हैं- वसुंधरा पर मेरे समान दुखी और कोई नहीं, मेरे ह्रदय और मन को शोक की परंपरा बेधती रहती है। भवभूति के राम का दुख तो ऐसा है कि पत्थर को भी रूला दे।

राम के व्यक्तित्व की विशेषता यह है कि वह प्रत्येक युग के महानायक हैं। लोकचित्त ने उनके व्यक्तित्व को ऐतिहासिक स्थितियों के अनुकूल गढ़ लिया है। वह प्रत्येक युग की सामाजिक-ऐतिहासिक स्थितियों के ही नहीं, उस युग के व्यक्ति की मानसिकता की द्वंद्वात्मकता और औदात्य का भी प्रतिनिधित्व करते हैं।

आज भारतीय समाज में राम का जो रूप सामान्य जनता में मान्य है, वह तुलसीदास के राम का है। महात्मा गांधी से जब हिंदी भाषा और साहित्य के बारे में बात की गई, तो उन्होंने कहा- जिस भाषा में तुलसीदास हुए हैं, उसका पुजारी तो मैं अपने आप हूं। तुलसी के राम सर्वशक्तिमान हैं। वह दुखी नहीं, दुख तो उन्हें व्याप ही नहीं सकता, लेकिन उनका संबंध मध्यकालीन भारत की जनता के दुख से है। तुलसी ने उन्हें 'करूणा निधान', 'गरीब नेवाज' और रामराज का संस्थापक कहा है। उनके राज में दैहिक , दैविक और भौतिक ताप से जनता मुक्त है-

दैहिक, दैविक भौतिक तापा।राम राज नहिं काहुहि व्यापा।

तुलसी की कविता में मध्यकालीन समाज के अनेक-विध भौतिक, दैविक, दैहिक तापों की दारूण कथा है- अकाल, भुखमरी, रोग, स्त्री-पराधीनता, क्रूर शासन, अत्याचार, काम, क्रोध, मोह, लोभ , बेरोजगारी का दारूण चित्रण है, तो दूसरी ओर इन सबसे मुक्त परम सुखद रामराज का स्वप्न विजन है। प्रकृति और मनुष्य, दोनों एक-दूसरे के सहयोगी हैं। बादल किसान की इच्छा से जल की वर्षा करते हैं। समुद्र अपनी मर्यादा में हैं। वे तट पर रत्न डाल देते हैं, मनुष्य उनका उपभोग, उपयोग करते हैं।यह मर्यादा राम के व्यक्तित्व का परम रूप है। उनके कारण यह मर्यादा व्यवस्था में, प्रकृति में भी आ गई। इसीलिए राम मर्यादा पुरूषोत्तम हैं। हमारे युग नायक गांधी का स्वप्न यही रामराज है। तुलसी के राम का रामत्व जनता के दुख-सुख के सरोकारों से प्रतिफलित है।

राम का व्यक्तित्व ऐसा है कि वह समाज के निम्नतम स्तर पर पड़े हुए आदमी के साथ खड़े हैं। उसके हर प्रकार के दुख की उन्हें चिंता है- राम गरीबनेवाज ! भए हौं गरीबनेवाज गरीब नेवाजी। राम गरीबों को नेवाजकर, उन पर कृपा करके गरीब नेवाजी हुए हैं। तुलसीदास के काव्य का औदात्य इस बात में है कि उन्होंने मध्यकाल में निम्नतम जनता के सारे दुखों को राम के हवाले कर दिया है। राम ही नहीं, अन्य देवताओं को भी जहां उनकी जरूरत है, वहां पहुंचा दिया है। उदाहरण के लिए, अन्नपूर्णा को राज महलों से निकालकर कंगालों के बीच, राम को भूखे, रोगी, काम से पीड़ित जनों के पास। रामवन गमन एक विशाल, सर्वसंग्रही उदात्त बिंब और प्रतीक भी है कि राजकुमार राजमहल छोड़कर जनता के बीच आता है, वन में जाकर साधु-संतो की रक्षा करता है। राम का वन गमन वस्तुत: रामराज्य का आधार है। दोनों में प्रधान सामान्य जन की हित-चिंता है। सर्वजन हित चिंता में ही राम का मर्यादा पुरूषोत्तमत्व झलकता है। राम का असाधारणत्व, आज की भाषा में उनकी क्रांतिकारिता उनकी सहजता में है। यह सहजता ही उनकी शक्ति, शील और सौंदर्य की आधार भूमि है-

सहजहिं चले सकल जग स्वामी। मत मंजु बर कुंजर गामी।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते थे कि राम विभाव पुरूष हैं। अभाव इतिहास में विभाव का निर्माण करता है। जिसकी जरूरत होती है, उसकी कमी महसूस होती है, तब वह विचार कल्पना और संवेदना का विषय बनता है। स्वाधीनता आंदोलन में हम एक ऐसी विदेशी शक्ति से जूझ रहे थे, जो हमसे अधिक शक्तिशालिनी थी। इसलिए इस युग के रामकथा के महान गायक निराला के राम शक्ति की पूजा करते हैं। निराला के राम का दुखधिक् जीवन जो पाता ही आया विरोध, उन्हीं का दुख नहीं है। वह इतिहास का दुख है, विभाव पुरूष राम का दुख है। राम का यही व्यक्तित्व हमारे संघर्ष और स्वप्न का सनातन प्रतीक है। राम हमारे मानस में हैं। हम कोई भी काम शुरू करते हैं, तो राम का नाम लेकर करते हैं। राम का नाम लेकर शत्रु से युद्ध तो कर सकते हैं, लेकिन किसी असहाय को पीड़ित नहीं कर सकते।

लक्ष्यराज सिंह को राज्यपाल ने नवाजा

उदयपुर। मेवाड़ के पूर्व राजपरिवार के सदस्य और राज्यपाल के सलाहकार लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ को राज्यपाल कलराज मिश्र ने पिछले दिनों राजस्थान गौरव अलंकरण से नवाजा। लक्ष्यराज सिंह को यह अलंकरण संस्कृति युवा संस्था ने समाजसेवा, शिक्षा, महिला स्वच्छता प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण आदि क्षेत्र में लगातार किए जा रहे सेवा कार्यों के लिए प्रदान किया। मेवाड़ को 3 साल पहले ब्रिटिश पार्लियामेंट में भारत गौरव सम्मान से भी नवाजा जा चुका है। पिछले 4 वर्षों में मेवाड़ समाजसेवा में 6 गिनीज बुक ऑफवर्ल्ड रिकॉर्ड हासिल कर चुके हैं।

रघुवीर मीणा बने वर्कर्स फैडरेशन के संरक्षक

उदयपुर। हिंदुस्तान जिंक वर्कर्स फैडरेशन के कार्यलय में कार्यसमिति की बैठक में पूर्व सांसद एवं कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्य रघुवीर सिंह मीणा को आम सहमति से हिन्दुस्तान जिंक वर्कर्स फैडरेशन इंटक के संरक्षक पद पर मनोनीत किया गया। इस अवसर पर केजी पालीवाल ने तिलक लगाकर, फैडरेशन के महामंत्री के एस शक्तावत ने माल्यार्पण एवं साफा पहनाकर मीणा को सम्मानित किया। सहायक महामंत्री एमके लोढा, मांगीलाल अहीर, घनश्याम सिह राणावत, प्रकाश श्रीमाल, लालूराम मीणा , एमके सोनी ने माला पहनाकर स्वागत किया।

मालखाने का लोकार्पण

उदयपुर। मेवाड़ पॉलीटेक्स लिमिटेड के सहयोग से डबोक पुलिस थाने में जनहित में निर्मित माल-खाना बनाया गया है। जिसका लोकार्पण संभागीय आयुक्त राजेंद्र भट्ट, पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार चौधरी , मुकेश सांखला, मेवाड़ पॉलीटेक्स लिमिटेड के चेयरमैन बीएच बापना व डिप्टी कैलाश कँवर ने फीता खोलकर किया। इस दौरान डायरेक्टर शिल्पा बापना, एमडी संदीप बापना, सौरभ बापना, शिविका बापना, सुनील दुग्गर, पंकज जोशी डबोक थाना अधिकारी योगेन्द्र व्यास आदि मौजूद थे।

'हृदय सम्पर्क' का विमोचन

उदयपुर। भारतीय जनता पार्टी शहर जिला उदयपुर के 3000 से अधिक कार्यकर्ताओं से युक्त टेलीफोन डायरेक्टरी 'हृदय सम्पर्क' का पिछले दिनों विमोचन हुआ। विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया ने कार्यक्रम में कहा कि कार्यकर्ता हृदय स्पर्शी बनें। आम जन के दिलों में प्रवेश करें। इससे हमें और संगठन को मजबूती मिलेगी। बांसवाड़ा-डूंगरपुर क्षेत्र के सांसद एवं शहर जिला प्रभारी कनक मल कटारा अध्यक्षता ने की। उदयपुर सांसद अर्जुन लाल मीणा ने कहा कि पार्टी की विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए हम सब कटिबद्ध हैं। शहर जिला महामंत्री गजपाल सिंह राठौड़ ने अतिथियों का स्वागत किया। शहर जिला अध्यक्ष रविंद्र श्रीमाली ने डायरेक्टरी को भाजपा के शीर्ष नेतृत्व की सोच दिशा एवं प्रेरणा बताया। इस अवसर पर डॉ. किरण जैन, ग्रामीण विधायक फूल सिंह मीणा, महापौर गोविंदसिंह टांक, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष शांतिलाल चपलोत, भाजपा महिला मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष डॉ अलका मूंदड़ा आदि मौजूद थी।

महिला सशक्त तो राष्ट्र सशक्त

उदयपुर। राजस्थान पत्रिका समूह के 67वें स्थापना दिवस पर 7 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के क्रम में रोटरी बजाज भवन में आयोजित एक विशेष समारोह में विशिष्ट क्षेत्रों में कार्य करने वाली महिलाओं को सम्मानित किया गया। जिनमें प्राकृतिक धरोहर को संवारने में मदद के लिए नंदिता सिंघल , बेस्ट मैनेजमेंट में उल्लेखनीय कार्य व प्रकाशन के लिए प्रो. आरती प्रसाद, लेखिका विमला भण्डारी, सामाजिक कार्यकर्ता मधुसरीन, चिकित्सा सेवा में अग्रणी डॉ. संगीता बोर्दिया, डिजाइनर पल्लवी दोशी, संस्कृत शिक्षिका शीला शर्मा व इनरव्हील क्लब की प्रसिडेंट रश्मि पगारिया शामिल हैं। कार्यक्रम को बतौर अतिथि एकलिंग गढ छावनी परिवार कल्याण संगठन की अध्यक्ष नित्या अय्यर, संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट ने सम्बोधित किया। पत्रिका के उदयपुर संस्करण के संपादक संदीप पुरोहित ने कहा कि राजस्थान पत्रिका समूह हमेशा महिलाओं के लिए तत्पर रहा है। उन्होंने कहा कि बेटे तो जमीन बांटते हैं, लेकिन बेटियां दर्द बांटती हैं। कविता बड़जात्या व आशा कुणावत ने भी विचार रखे। संचालन सीमा चम्पावत ने किया।

सिंघल अध्यक्ष, बागला उपाध्यक्ष बनें

गौरांग सिंघल

कुणाल बागला

उदयपुर. भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई), उदयपुर जोन के वार्षिक सत्र 2022-23 के लिए वोल्केम इंडिया लिमिटेड के डायरेक्टर गौरांग सिंघल को राजस्थान उदयपुर जोन का अध्यक्ष तथा आर्कगेट के संस्थापक और सीईओ कुणाल बागला, को सीआईआई उदयपुर जोन का उपाध्यक्ष नामित किया गया है। कुणाल बागला, 2000 लोगों की मजबूत आईटी और बीपीओ कंपनी आर्कगेट के संस्थापक और सीईओ हैं, जिसका मुख्यालय उदयपुर, राजस्थान में है।

Pankaj Dugar, CMD
99508-22222

With Best Compliments

KEC

Kamal Engineers & Contractors (P) Ltd.

Regd. Office
D-36, Subhash Marg, C-Scheme,
Jaipur (Raj.) 302 001
E-mail: kec1.udaipur@gmail.com

Udaipur Office
380- Shree Niketan,
Ashok Nagar, Opp. Lakecity Mall
Udaipur (Raj.)

'शब्द मरते नहीं, मनुष्य हारता नहीं'

वेदव्यास

साहित्य, समाज और समय के इतिहास में जो भूमिका मीरां, महादेवी और महाश्वेता देवी ने स्थापित की। उसी परम्परा को डॉ. सावित्री डागा ने अपने जीवन सृजन में पूरी ईमानदारी से निभाया। वे कहती हैं - 'जीवन हो एक बूंद सा/मिटकर बनूं हजार/दिखूं छिपूं हर हाल में/मिले जगत का प्यार/......' दुःख-सुख के संघर्ष और सरोकारों से बनी सावित्री डागा की शब्द यात्रा 10 मार्च 1938 को बीकानेर से चलकर 13 अप्रेल 2020 को जोधपुर में समाप्त होती है.... सावित्री डागा की आज और कल में वही प्रासंगिकता है कि शब्द कभी मरते नहीं हैं और मनुष्य की मनुष्यता कभी हारती नहीं है।

कवयित्री डॉ. सावित्री डागा को याद करते हुए आज मैं फिर ये कहना चाहता हूं कि साहित्य, समाज और समय के इतिहास में जो भूमिका मीरां, महादेवी और महाश्वेता देवी ने स्थापित की। उसी परम्परा को डॉ. सावित्री डागा ने अपने जीवन सृजन में पूरी ईमानदारी से निभाया। वे कहती हैं - 'जीवन हो एक बूंद-सा, मिटकर बनूं हजार, दिखूं, छिपूं हर हाल में, मिले जगत का प्यार।' दु:ख-सुख के संघर्ष और सरोकारों से बनी सावित्री डागा की शब्द यात्रा 10 मार्च 1938 को बीकानेर में चलकर 13 अप्रेल 2020 को जोधपुर में समाप्त होती है। 84 साल के इस सफर में मैंने भी उन्हें कोई 50 साल तक चलते-फिरते, लिखते-पढ़ते और खुद से सवाल पूछते तथा उत्तर देते हुए देखा समझा है। इसलिए मैं उनके सामाजिक सरोकारों को एक विलक्षण विचार साधना मानता हूं। ये हमारा ही दुर्भाग्य है कि जो हम एक-दूसरे को आमने-सामने रहकर नहीं समझ पाते वो सत्य हमें कविता और सृजन के शेष रहे शब्दों में ही ढूंढना होता है।

डॉ. सावित्री डागा की जिस काव्य प्रतिभा को उनके जीवन में महाकवि निराला, राष्ट्रकवि दिनकर, सुमित्रानन्दन पंत, डॉ. रामकुमार, रामावतार त्यागी, रामनाथ सुमन सरीखे साहित्य प्रेरणाओं ने सराहा, उस कवयित्री को आज की नई पीढ़ी यदि पढ़ेगी, तो उसे पता चलेगा कि पूंजी और विज्ञान की इस 21वीं शताब्दी में एक कवि लेखक मिटकर हजार कैसे और क्यों बनता है। हमारे समाज की पुरुष प्रधान सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक व्यवस्था में विशेष कर महिलाओं के लिए समय और मन का सच कहना और लिखना कितना कठिन है।

डॉ. सावित्री डागा के पहले कविता संग्रह-अमिट निशानी(1959) से लेकर आखिरी कविता संग्रह अन्त: सलिला(2015) तक कोई 24 काव्य धाराओं को पढ़कर मैं आज भी ये कहूंगा कि कविता और प्रकृति का ये विविध संवाद ही जीवन और जगत का इन्द्रधनुष बनाता है तो समय की महाभारत भी रचता है और चेतना के चक्रव्यूह में मारा जाता है। सावित्री डागा की आज और कल में वही प्रासंगिकता है कि शब्द कभी मरते नहीं हैं और मनुष्य की मनुष्यता कभी हारती नहीं है। सावित्री डागा की प्रकाशनाधीन पुस्तक-सपनों की संघर्ष यात्रा उनके जाने के बाद, आगे फिर यही कहेगी कि सपनों का संघर्ष ही एक कवि लेखक की आत्मकथा है। फिर भी दीपशिखा हर हाल में जलती है और शब्दों की मशाल कभी बुझती नहीं है। डॉ. सावित्री डागा प्रदेश की पहली ऐसी लेखिका थीं जो राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा काव्यकृति से 'कटे हुए पर' के लिए 1977 में सम्मानित हुई तो आखिरी बार 2012 में साहित्य के सम्पूर्ण अवदान को लेकर जनार्दन राय नागर सम्मान से अलंकृत हुई। प्रगतिशील लेखक संघ उनकी वैचारिकता का पर्याय था तो महिला प्रतिभाओं को प्रोत्साहन और सृजन सरोकारों से जोड़ने का मंच था। जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के हिन्दी विभाग से आजीवन रिश्ता निभाते हुए उन्होंने अपने पति डॉ. मदन डागा की स्मृति में एक पुस्तकालय और वाचनालय भी नेहरू पार्क में स्थापित किया और यही कहती रही कि 'हृदय अगन, पानी नयन अधरों पर मुस्कान जानें कैसे जी रहा, अद्भुत यह इंसान।' आग और पानी की ये कहानी यदि आप विस्तार से पढ़ना चाहें तो डॉ. पदमजा शर्मा द्वारा सम्पादित पुस्तक कवयित्री डॉ. सावित्री डागा का रचना संसार(2019) जरूर पढ़ें, जिसमें उनके अनेक मित्र और समीक्षकों को पदमजा ने समझदारी से प्रस्तुत किया है। डॉ. सावित्री डागा ने अन्तर्जातीय विवाह डॉ. मदन डागा से उस समय किया था जब नारी मुक्ति, स्त्री शिक्षा, दहेज प्रथा, घूंघट प्रथा जैसी कुप्रथाओं से राजस्थान का उदय(1949) जूझ रहा था और मीरां बाई की तरह लक्ष्मी कुमारी चूंडावत जैसी लेखिकाएं भी अपने रजवाड़ों से बाहर आ रही थीं। सावित्री डागा और मदन डागा से मेरी पहली मुलाकात 1970 में राजस्थान लेखक संघ के सम्मेलन में हुई थी। जिसे कोमल कोठारी, विजयदान देथा, मरुधर मृदुल के प्रयासों से बोरून्दा(जोधपुर) में आयोजित किया गया था और वह प्रगतिशील साहित्य चेतना का प्रतीक था। मैं जब-जब राजस्थान साहित्य अकादमी का अध्यक्ष बना तो मैंने देखा कि डॉ. सावित्री डागा मुझे राजस्थान में महिला लेखन के व्यापक विस्तार और प्रोत्साहन की सलाह देती थीं। 1999 में वो हमारे साथ(डॉ. नामवर सिंह, नंदकिशोर आचार्य, नंद चतुर्वेदी, डॉ. साहेन दान चारण, नेमीचन्द जैन भावुक सहित) लंदन में आयोजित छठे विश्व हिन्दी सम्मेलन में गई थीं। आज सावित्री डागा हमारे बीच नहीं हैं। लेकिन उनकी बातें मुझे बार-बार याद दिलाती हैं कि साहित्य का सामाजिक सरोकार क्या होता है। डॉ. सावित्री डागा एक सम्पूर्ण कवयित्री थीं और आगे भी रहेंगी क्योंकि उनकी कविताओं का ताना-बाना राग-विराग और रंग, रस, रूप और शिल्प की प्रति छवि है। आज महिला लेखन के शिखर पर डॉ. सावित्री डागा का अभाव मुझे महसूस होता है। जोधपुर की हर यात्रा में उनसे मिलना भला कैसे भूल सकता हूं? मनुष्य के सभी सवाल उनकी सृजन चेतना में हर तरफ से बोलते हैं। जोधपुर और राजस्थान में तो वो घर का जोगी, जोगना, आन गांव का सिद्ध ही थी लेकिन हिन्दी कविता की दुनिया में उनका महत्व आज भी एक मशाल की तरह है। डॉ. सावित्री डागा की गद्य और पद्य में 32 पुस्तकें प्रकाशित हैं और अनेक मान-सम्मान उनके योगदान से अंकित हैं।

Mahesh Kumar Dodeja
Director

चेटीचंड की हार्दिक शुभकामनाएं

SHISHU RANJAN

Outside Delhigate, Udaipur - 313 001 (Raj.)
Tel. : 0294 - 2529504 (S), 0294 - 2413461 (R), Mob.: 9829887900

हमेशा बुरी नहीं होती आलोचना

सुषमा मारवाल

आलोचना करना मनुष्य का स्वभाव बन गया है। किसी को भी अच्छा काम करते अथवा किसी को कोई कार्य सही ढंग से नहीं करते देख वह आलोचना करने से बाज नहीं आता। यदि स्वभाव को दरकिनार कर भी दें तो भी आलोचना की वृत्ति जीवन में इस कदर रच बस गई है कि गाहे-बगाहे अपना रंग दिखा ही जाती है। हम कभी यह नहीं सोचते कि हमारे द्वारा की गई आलोचना संबंधित व्यक्ति के मन को कितनी पीड़ा पहुंचा सकती है। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसके कार्यों पर उसे अच्छी प्रतिक्रिया मिले, लेकिन जब यह प्रतिक्रिया आलोचना के रूप में सामने आती है तो आलोचक अपना सबसे बड़ा शत्रु दिखने लगता है, फिर तो हम भी उसकी आलोचना में लिप्त हो जाते हैं, ऐसा क्यों? क्या यह उचित है? दरअसल हम अपने द्वारा किए गए किसी भी कार्य पर दूसरों की आलोचना को हजम नहीं कर पाते, अपना धैर्य खो बैठते हैं। परिणामत: आलोचक को सबक देने के लिए वैसा ही अनुसरण करने लगते हैं। प्रश्न यह उठता है कि क्या हम सही करते हैं? नहीं, कतई नहीं। क्योंकि किसी भी व्यक्ति का मन जीतने के लिए उत्तर उसकी आलोचना में नहीं छिपा होता है। उत्तर होता है उसकी आलोचना में से अपनी कमी तलाश कर अपनी कमियों को दूर करने में। यह बात भी सही है कि ऐसा आमतौर पर नहीं होता कि हम प्रत्युत्तर में धन्यवाद कहें, लेकिन अगर हम खुद में बदलाव चाहते हैं तो हमें धन्यवाद कहना सीखना होगा। सही बात तो यह है कि यही आलोचक को जवाब देने का सही और बेहतर तरीका है।

कैसे टालें टकराव

आलोचना हर कहीं देखने को मिल जाती है। घर-परिवार हो या फिर हमारा कार्यस्थल। चाहे रास्ते से जा रहे हों या परीक्षा भवन? जहां संयुक्त परिवार होते हैं। सास-बहू का टकराव व आलोचना तो जगजाहिर ही है, वहीं दूसरी ओर बेटी और अपने परिवार की इतनी तारीफ की जाती है, सुनकर लगता है कि आवश्यकता से कही ज्यादा ही कहा जा रहा है। आवश्यकता से अधिक आलोचना खराब है। टकराव टालने के लिए आपको चाहिए कि आप उस व्यक्ति को नजरअंदाज करें जो आपकी आलोचना पर तुला हो। अन्यथा आलोचनात्मक रूख अपनाने से आप स्वयं एक न एक दिन हाशिये पर आ जाएंगे व आम लोगों में यह धारणा व्याप्त हो जाएगी कि फलां व्यक्ति के समक्ष कितना भी अच्छा कार्य किया जाए वह तो आलोचना ही करेगा।

निंदक नियरे राखिए

आप आलोचना करें, अवश्य करें, लेकिन वह भी स्वस्थ तरीके से न कि ओछेपन पर उतर कर। आलोचक बनना तो बड़ा आसान है पर दूसरों से अपनी आलोचना सुनना कितना मुश्किल है, यह हमारे व्यवहार में विचारणीय पहलू है। माना कि आलोचना सुनना किसी को भी पसंद नहीं है, लेकिन आपको मालूम होना चाहिए कि स्वभाव को सुधारने में आलोचक भी बड़ा मददगार साबित हो सकता है। वैसे कहा भी गया है कि 'निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटि छवाए।' मतलब यह कि अगर कोई आलोचक आपके आसपास रहता है तो आप अपने काम को दिन-प्रतिदिन सुधार कर और अच्छा कर सकते हैं।

घबराए नहीं

लोगों से अपनी आलोचना अवश्य सुनें। इससे हमारी कमजोरियां व खामियां आसानी से दूर हो सकेंगी। आलोचना से घबराए नहीं बल्कि आलोचना को स्वीकारने की हिम्मत जुटाएं ताकि हमारे भावी जीवन का मार्ग प्रशस्त हो सके। हमारी तुच्छ से तुच्छ आलोचना भी कभी-कभी हमें प्रगति के पथ पर ले जाती है व हम उनके आभारी हो जाते हैं। जिन्होंने हमारा मार्गदर्शन किया। आलोचना से हम अपनी क्षमता को पहचान सकते हैं। हम इससे जी न चुराएं। ऐसा भी न करें कि हम व्यवहार ही समाप्त कर दें। संतुलित प्रशंसा व उचित आलोचना होने से आपस में प्रगाढ़ता व स्नेह बना रहता है। बस इतना ध्यान अवश्य रखें कि आलोचक को दुश्मन न समझें तो हमेशा तारीफों के पुल बांधने वालों को अपना हितैषी भी न मान बैठें।

प्रत्यूष

प्रत्यूष पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें

75979 11992, 94140 77697

पं. चतुरलाल की स्मृति में सजी उदयपुर में शास्त्रीय संगीत की शानदार सुरमयी शाम

रोनू और मालिनी की जुगलबंदी का जादू

प्रांशु चतुरलाल के तबले के साथ मालिनी अवस्थी ने पेश किया लोक, शास्त्रीय और फ्यूजन म्यूजिक

भारतीय लोक कला मंडल के मुक्ताकाशी रंगमंच पर 5 मार्च की शाम एक तरफ बांसुरी वादक पंडित रोनू मजूमदार और लोक गायिका मालिनी अवस्थी की जुगलबंदी का जादू चला तो दूसरी ओर तबला वादक प्रांशु चतुरलाल ने लोक कलाकारों के साथ लोक, शास्त्रीय संगीत और फ्यूजन के इन्द्रधनुषी रंग बिखेरे। फाल्गुन की मद्धम ठंड के बीच इस सुरवर्षा से सराबोर होकर श्रोता झूम उठे। उदयपुर में जन्मे प्रख्यात तबला वादक पं. चतुरलाल की स्मृति में पं. चतुरलाल मेमोरियल सोसायटी, नई दिल्ली और वेदांता, हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड के साझे में यह आयोजन हुआ। शुरुआत में रेगिस्तानी प्रस्तुति में प्रांशु चतुरलाल एवं साथी कलाकारों ने लोक, शास्त्रीय और फ्यूजन से राग, ताल और छंद का मनमोहक संगम पेश किया। म्हारो बिछुड़ों नैणा रो लोभी... राग किरवानी में 'आवे हिचकी...' की पर्कशन के साथ सवाई खान के सूफी गायन ने श्रोताओं के दिल जीत लिए। ढोलक पर लतीफ खान, सारंगी पर मुदस्सिर खान तथा की बोर्ड पर सलीम बिलाड़ा ने संगत दी। राग देस में बालम जी म्हारा आप बसो परदेस... पर मुक्ताकाशी रंगमंच तालियों से गूंज उठा। इस धमाकेदार प्रस्तुति के बाद पं. रोनू मजूमदार की बांसुरी का सुरीला कंठ खुला। रोनू और मालिनी अवस्थी की जुगलबंदी ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इनके साथ प्रांशु ने तबले पर संगत की। रोनू ने मालिनी के साथ बनारसी ठुमरी, चेती की प्रस्तुतियों में 'झूला धीरे से झुलाओं बनवारी और सांवरिया' की प्रस्तुति दी। इससे पहले हिन्दुस्तान जिंक के सीईओ अरुण मिश्रा, आईजी हिंगलाज दान, हिन्दुस्तान जिंक के पूर्णकालिक निदेशक अखिलेश जोशी एवं ई कनेक्ट के एमडी मनोज अग्रवाल ने दीप जलाकर सुरसंध्या का आगाज किया।

> लोक संगीत अब धीरे–धीरे घरों से गायब होता जा रहा है। वे इसे मंच पर सहेजने का प्रयास कर रहे है। आज लोक कलाकारों को प्रोत्साहन कम हुआ है। आमजन को चाहिए कि जीवन के हर क्षेत्र से जुड़े लोकसंगीत को पोषित करें। लोकसंगीत को दोयम दर्जे का मानना या लोकसंगीत के कलाकार को हीन भावना से देखना लोककला के हित में नहीं है। पहले समय में आयोजक छोटे–छोटे आयोजनों में लोक कलाकारों को बुलाते थे, वो अब कम हो रहा है।
>
> **मालिनी अवस्थी**

> हर कोई कम मेहनत में ज्यादा और जल्दी प्रसिद्धि चाहता है, लेकिन सफलता के लिए साधना पर दृढ़ होना जरूरी है। नए लोगों को आसानी से अवसर नहीं मिलते थे, लेकिन आज सोशल मीडिया के जरिये खुद को प्रमोट करना आसान है। तकनीक के जरिये भी अपनी कला साबित कर मुकाम पा सकते हैं, लेकिन इसमें भी साधना की गहराई आवश्यक है। क्योंकि लंबी सफलता के लिए उसमें नयापन जरूरी है। वर्तमान में वैश्विक कोलाहल, रोष और बदले की भावना को संगीत से दूर किया जा सकता है क्योंकि संगीत प्रेम सिखाता है।
>
> **रोनू मजूमदार**

– प्रस्तुतिः सुधाकर पीयूष

एकता और भाईचारे का प्रतीक पर्व चेटीचंड

सुरेश जसवानी

हर जाति, समाज की अपनी पहचान उसकी परम्परा और महापुरुषों से होती है। उनमें से एक सिंधी समाज भी है। चेटीचंड इस समाज का प्रमुख त्योहार है। लगभग 1042 वर्ष पूर्व सिंध प्रदेश में बादशाह मिर्गशाह के जुल्मों से जनता बेहद दुखी थी। बादशाह धर्म परिवर्तन के लिए जनता पर जुल्म करता था। चारों ओर त्राहि-त्राहि मचने लगी। सिंधियों का अस्तित्व खतरे में पड़ने लगा। संकट की इस घड़ी में जनता ने तय किया कि वह मिर्ग बादशाह के अत्याचारों से मुक्ति पाने के लिए सिंधु नदी के पट पर वरुण देव की पूजा करे। इस दौरान लगातार सात दिनों तक वरूण देव की पूजा की गई। प्रार्थना और पुकार के सातवें दिन रात के समय सिंधु नदी की लहरों पर पाले मछली पर सवार होकर वरुण देव संत उदेरोलाल के रूप में प्रकट हुए। इसी समय आकाशवाणी हुई कि अत्याचारियों का नाश करने और धर्म की रक्षा के लिए वरुण देव नसीरपुर शहर में भाई रतनराय के घर जन्म लेंगे।

यह पवित्र दिन विक्रम संवत 1007 की चैत्र शुक्ला द्वितीया के दिन आया और जनता बेहद प्रसन्न हुई। इधर जैसे ही अत्याचारी मिर्ग बादशाह को यह खबर लगी तो उसने अपने एक मंत्री को नसीरपुर शहर में श्रीरतनराय के घर से बालक को उठा लाने का हुक्म दिया। मंत्री अपने रक्षकों के साथ रतनराय के घर पहुंचा और जैसे ही बालक को उठाने का प्रयास किया। वह बुरी तरह से डर गया और पांच कदम पीछे हटकर गिर पड़ा। मंत्री ने बालक के रूप में एक चक्रवर्ती सम्राट सिंहासन पर बैठा पाया। मंत्री तत्काल वहां से चला गया और सारी चमत्कारी कहानी बादशाह को सुनाई। मिर्ग बादशाह कुछ डरा जरूर, लेकिन अहंकार नहीं छोड़ा और बालक रूपी उस अवतार को गिरफ्तार करने का आदेश दिया। झूलेलाल देवता तो अंतरयामी थे। उन्हें मिर्ग बादशाह की सारी साजिश ज्ञात थी। बादशाह के सिपाही झूलेलाल को गिरफ्तार करें, उससे पहले ही भगवान झूलेलाल का गुस्सा आग में परिवर्तित होकर बादशाह के महल पर टूट पड़ा। देखते ही देखते बादशाह का शाही महल जलने लगा। इसी बीच भंयकर तूफान आया तथा आग सारे शहर में फैल गई। मिर्ग बादशाह यह सब देखकर डर गया और झूलेलाल के चरणों में सिर झुकाकर अपने गुनाहों व अत्याचारों की माफी मांगने लगा। सभी की पुकार और आराधना सुनकर भगवान झूलेलाल ने अग्नि देवता और तूफान को शांत किया। मिर्ग बादशह ने उसी स्थान पर पवित्र मंदिर निर्माण करवाया, जिसका नाम जिंद पीर रखा जो हिंदू और मुसलमान दोनों के लिए तीर्थ स्थल बन गया।

झूलेलाल जिन्हें उदेरोलाल के नाम से भी पुकारा जाता है, सिंधी समाज के संरक्षक माने जाते हैं। एकता और भाईचारे को अधिक सुदृढ़ करने के लिए सिंधी एक पूर्व मनाते हैं जिसे सिंधियत की संज्ञा दी गई है। यह दिन सभी सिंधियों के लिए पवित्र है। इस पावन अवसर पर सारे देश में जहां सिंधी हैं, मेलों का आयोजन किया जाता है। चेटीचंड यानी सिंधियों का त्योहार। यह पर्व भाईचारे और एकता

का संदेश देता है। भगवान झूलेलाल ने बुद्धिमानी और ज्ञान को प्राथमिकता दी एवं धर्म, जाति के बंधनों को तोड़कर एकता पर जोर दिया। भगवान झूलेलाल के जन्म दिवस को चेटीचंड के रूप में मनाया जाता है। वरूण देवता का उल्लेख रामायण में सुंदरकांड के अंत में आता है। भगवान राम को जब लंका जाने के लिए समुद्र पर सेतु बांधना था, तब वरूण देव बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण कर हाथों में हीरे, माणक, मोतियों का थाल लेकर श्रीराम के पास आए और उन्हें नल व नील दो भाइयों का पता बताया। जिनकी मदद से समुद्र पर पुल बांधा गया और भगवान राम लंका पहुंचे। भगवान झूलेलाल की दो रूपों में पूजा की जाती है। एक पानी में मछली पर सवार, पालथी मारकर बैठा हुआ। एक हाथ में पुस्तक, दूसरे में माला, ललाट पर तिलक, सफेद मूंछ और दाढ़ी, सिर पर ताज और मोर पंख। दूसरा घोड़े पर सवार। दाहिने हाथ में नंगी तलवार बाएं हाथ में झंडा, माथे पर टोपी पहनकर वीर के रूप में दिखाई देता है। वरूणावतार को तीन नामों से पुकारा जाता है। झूलेलाल, उदेरोलाल एवं अमरलाल। जन्म से पहले भाई रतनराय को बालक के झूलते हुए दर्शन हुए थे, इसलिए झूलेलाल कहा जाता है। मछली व घोड़े पर सवारी एवं झूले में झूलते व उनकी स्तुति हेतु ज्योति प्रज्जवलन के समय आयोलाल, झूलेलाल कहा जाता है। झूलेलाल भगवान ने वरुण पथ की स्थापना की, जिसमें जल और ज्योति पूजा को प्रमुखता दी गई है। सिंधी सभ्यता सिंधु घाटी की सभ्यता है। सिंधु संस्कृति अथवा वैदिक संस्कृति को यदि मानव जाति की संस्कृति कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

वैदिक संस्कृति तथा आर्य संस्कृति का जन्म सिंधु नदी के तट पर हुआ, इसलिए इसको सिंधु संस्कृति अथवा हिंदू संस्कृति कहा जाता है। परंतु इसका अभिप्राय यह कदापि नहीं है कि यह संस्कृति केवल सिंधी भाषा-भाषियों की संस्कृति है। सिंधी के कई अर्थ है। मूल अर्थ है सागर या दरिया। वेदों में सिंधु और सप्त सिंधु का वर्णन आया है। तद्नुसार सिंधु वह देश है, जहां सिंधु नदी बहती है। इस प्रकार सिंधु दरिया का अर्थ भी देता है और एक देश विशेष के का नाम भी। अब तो सिंधु प्रदेश की सीमाएं काफी सिकुड़ गई हैं क्योंकि वह एक देश के स्थान पर एक प्रांत रह गया है, परंतु प्राचीनकाल में सिंध का विस्तार दूर-दूर तक था। उसमें सप्त सिंधु अर्थात सात नदियों का समावेश था।

प्रसंगवश

कोरोना का शरीर से पूरी तरह निकलना मुश्किल

दुनियाभर में कोरोना संक्रमण की रफ्तार धीरे-धीरे कम होती दिख रही है। इसी बीच एक अंतरराष्ट्रीय शोध दल ने चौंकाने वाले खुलासे किए हैं। शोध दल के मुताबिक, कोरोना वायरस प्रतिरक्षा प्रणाली को चकमा देते हुए संक्रमित मरीजों के शरीर में छिपे रह सकते हैं। अध्ययन नेचर कम्युनिकेशंस नामक पत्रिका में प्रकाशित हुए। ब्रिटेन स्थित युनिवर्सिटी ऑफ ब्रिस्टल और जर्मनी के मैक्स प्लैंक इंस्टीट्यूट फॉर मेडिकल रिसर्च की अगुवाई वाली एक अंतरराष्ट्रीय टीम ने दो अध्ययनों में पाया कि कोरोना संक्रमित के शरीर से वायरस की पूरी तरह से निकासी काफी कठिन है। शोधकर्ताओं ने बताया कि कैसे कोरोना वायरस विभिन्न प्रकार की कोशिकाओं में विकसित हो सकते हैं।

शुरुआती वेरिएंट का विश्लेषण: यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिस्टल के प्रोफेसर इमरे बर्जर का कहना है कि कोरोना के विभिन्न वेरिएंट की एक निरंतर श्रृंखला ने मूल वायरस को पूरी तरह से बदल दिया है। उन्होंने कहा कि हमने ब्रिस्टल, ब्रिसडेल्टा में पाए गए शुरुआती वेरिएंट का विश्लेषण किया। इसने मूल वायरस से अपना आकार बदल लिया था। वहीं पहले अध्ययन के प्रमुख लेखक कपिल गुप्ता ने कहा कि शोध के निष्कर्षों से पता चला है कि कोरोना संक्रमित के शरीर में कई अलग-अलग वायरस हो सकते हैं।

वायरस म्यूटेशन से और खतरनाक : दूसरे अध्ययन के लेखक ऑस्कर और स्टॉफर ने बताया कि वायरस के शरीर में छिपे रहने के अलावा एक और चिंताजनक बात सामने आई है। कई लोगों को एक ही समय में अलग-अलग वेरिएंट से संक्रमित देखा जा रहा है। निष्कर्ष बताते है कि समय के साथ वायरस में होने वाला म्यूटेशन इसे और भी खतरनाक बनाता जा रहा है। प्रतिरक्षा प्रणाली से छिपते हुए वायरस का शरीर के अंगों में मौजूद रहना और लोगों में एक साथ एक या अधिक संक्रमण का पता चलना चिंताजनक है।

समाचार पत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से सम्बन्धित विवरण
घोषणा पत्र फार्म-4

1. प्रकाशन स्थल	उदयपुर
2. प्रकाशन अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम	आशीष बापना
क्या भारत का नागरिक है	हां
पता	पायोराईट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. पावर हाउस के पास एमआईए एक्सटेंशन, रिको, उदयपुर
4. प्रकाशक का नाम	पंकज शर्मा
क्या भारत का नागरिक है	हाँ
पता	रक्षाबंधन, धानमण्डी, उदयपुर
5. सम्पादक का नाम	विष्णु शर्मा हितैषी
क्या भारत का नागरिक है	हाँ
पता	हितैषी भवन, सूरजपोल अन्दर, उदयपुर
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते, जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों	पंकज शर्मा रक्षाबंधन, धानमण्डी, उदयपुर

मैं पंकज शर्मा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 25 मार्च, 2022 **पंकज शर्मा**

स्थान : उदयपुर **प्रकाशक**

क्रिकेट के दो दिग्गज खिलाड़ियों का निधन

चला गया लेग स्पिन और गुगली का बादशाह

4 मार्च का दिन क्रिकेट जगत विशेषकर ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट के लिए बेहद दुखद रहा। इस दिन अपने जमाने के दो दिग्गज क्रिकेटरों को दुनिया ने खो दिया। सुबह महान विकेटकीपर रोडनी मार्श के निधन की खबर आई तो शाम को स्पिन गेंदबाजी को नई परिभाषा देने वाले महान स्पिनर शेन वार्न ने अलविदा कह दिया। वार्न की लेग स्पिन, गुगली और फ्लिपर का सामना करना अच्छे से अच्छे बल्लेबाजों के लिए मुश्किल था। वार्न ने सुबह मार्श के निधन पर शोकाभिव्यक्ति की थी, क्या मालूम था कि शाम को वे भी साथ चले जाएंगे।

प्रशांत अग्रवाल

वक्त का चक्र कितनी जल्दी पलट जाए इसका कोई भी अनुमान नहीं लगा सकता। कौन जानता था कि 4 मार्च की सुबह हमवतन रोडनी मार्श की मौत के बाद दुखद ट्वीट लिखने वाले शेन वार्न कुछ घंटों बाद खुद उन ट्वीट्स में होंगे। किसे पता था कि कुछ ही घंटों बाद स्पिन का यह जादूगर, महान ऑस्ट्रेलियाई लेग स्पिनर महज 52 वर्ष की उम्र में अलविदा कह जाएगा।

शेन वॉर्न का निधन हार्ट अटैक की वजह से एक विला में हुआ। वॉर्न थाइलैंड के कोह सामुई स्थित एक रिजॉर्ट के विला में ठहरे थे।

जान बचाने की कोशिश

दोस्तों ने वॉर्न को सीपीआर दिया 20 मिनट तक। फिर एम्बुलेंस आने के बाद उन्हें थाई इंटरनेशनल हॉस्पिटल ले जाया गया। वहां डॉक्टर्स ने भी उन्हें सीपीआर दिया, लेकिन कुछ फर्क नहीं पड़ा और इस दिग्गज क्रिकेटर को मृत घोषित किया गया। तीन दोस्तों के साथ मौजूद शेन वॉर्न की मौत एक विला के कमरे में हुई। वह सभी अलग-अलग कमरों में सो रहे थे। दोपहर से शाम तक सोने के बाद जब बाकी दोस्त वॉर्न को करीब 5 बजे शाम को बुलाने गए तो उन्हें वहां अचेत पाया। वॉर्न का 20 मार्च को राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। मेलबर्न के सेंट किल्डा फुटबाल क्लब परिसर में अंतिम संस्कार हुआ। बेटे जैक्सन ने हाथ में क्रिकेट बॉल और पिता का फोटो लेकर अर्थी को कंधा दिया। इस मौके पर एलन बॉर्डर, मार्क

स्तब्ध। तुम्हारी कमी खलेगी वार्नी। मैदान से भीतर या बाहर तुम्हारे साथ कोई पल उबाऊ नहीं होता था। मैदान के भीतर हमारी प्रतिद्वंद्विता और बाहर हंसी मजाक को हमेशा याद करूंगा। भारत के लिए तुम्हारे मन में खास जगह थी और भारतीयों के मन में तुम्हारे लिए। बहुत जल्दी चले गए।

सचिन तेंदुलकर

जीवन कितना अप्रत्याशित और अस्थिर है। एक ऐसे महान खिलाड़ी जिन्हें मैं मैदान से बाहर भी जानता था, उनके जाने पर विश्वास नहीं कर पा रहा हूं। गेंद को टर्न कराने वाले सबसे महान खिलाड़ी।

विराट कोहली

स्पिन को कूल बनाने वाले दुनिया के महानतम स्पिनरों में से एक शेन वॉर्न नहीं रहे। जीवन बहुत नाजुक है। पर इस पर भरोसा करना मुश्किल है। परिवार, दोस्तों और प्रशंसकों को मेरी संवेदनाएं।

विरेन्द्र सहवाग

टेलर, ग्लेन मैकग्राथ और माइकल क्लार्क जैसे दिग्गज साथी खिलाड़ी मौजूद थे।

भारत के खिलाफ पदार्पण: वॉर्न ने भारत के खिलाफ सिडनी क्रिकेट ग्राउंड पर पहला टेस्ट मैच खेला। भारत में वह काफी लोकप्रिय थे और रवि शास्त्री उनका पहला टेस्ट विकेट थे। उन्होंने आखिरी टेस्ट जनवरी 2007 में इंग्लैंड के खिलाफ सिडनी में ही खेला

सदी की गेंद: वॉर्न ने 1993 में 24 वर्ष की उम्र में ओल्ड ट्रैफर्ड में जिस गेंद पर इंग्लैंड के माइक गैटिंग को आउट किया था उसे सदी की गेंद माना जाता है। गैटिंग उस लेग ब्रेक पर हैरान रह गए थे।

विवादों से नाता: वॉर्न विवादों से भी घिर जाते थे। 1998 में मार्क वॉ और उन्हें पिच और मौसम के हालात की जानकारी सटोरिये को देने और पैसा लेने पर क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया को जुर्माना देना पड़ा। 2003 विश्व कप से पहले वह प्रतिबंधित डायूरेटिक के सेवन के दोषी पाए गए।

एशेज में सर्वाधिक विकेट: वॉर्न 1999 विश्व कप जीतने वाली ऑस्ट्रेलियाई टीम के सदस्य थे। उन्होंने एशेज में सर्वाधिक कुल 195 विकेट लिए थे। मैदान के भीतर और बाहर बेहतरीन शख्सियत के मालिक वॉर्न ने

रोडनी मार्श

ब्रिस्बेन। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व दिग्गज विकेटकीपर बल्लेबाज रोडनी मार्श ने भी 4 मार्च को अंतिम सास ली। उन्हें एक हफ्ता पहले क्वींसलैंड में एक कार्यक्रम के दौरान दिल का दौरा पड़ा था। वह 74 वर्ष के थे। तेज गेंदबाज डेनिस लिली के साथ मार्श की जोड़ी शानदार थी। दोनों ने मिलकर टेस्ट क्रिकेट में रिकॉर्ड 95 शिकार किए। मार्श और लिली ने इंग्लैंड के खिलाफ 1970-71 एशेज सीरिज में टेस्ट पदार्पण किया और 1984 में पाक के खिलाफ टेस्ट के बाद सन्यास लिया। दोनों के नाम उस समय समान 355 शिकार थे, जो तब विकेटकीपर और पेसर दोनों के लिए रिकॉर्ड था। मार्श को 1985 में स्पोर्ट ऑस्ट्रेलिया हॉल ऑफ फेम में शामिल किया गया था।

कमेंटेटर के रूप में भी कामयाबी पाई। 1992 से 2007 के बीच क्रिकेट में उनकी अतुल्य उपलब्धियों के लिए विजडन ने उन्हें शताब्दी के पांच क्रिकेटरों में चुना। उन्हें 2013 में आईसीसी हॉल ऑफ फेम में शामिल किया गया था। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सर्वकालिक महान खिलाड़ियों में शुमार वॉर्न ने 1992 में ऑस्ट्रेलिया के लिए पदार्पण कर 145 टेस्ट खेले और 708 विकेट लिए। वहीं 194 वनडे में 293 विकेट चटकाए। आइपीएल के पहले सत्र में 2008 में राजस्थान रॉयल्स ने उनकी कप्तानी में खिताब जीता था। वॉर्न श्रीलंका के मुथैया मुरलीधरन (800 विकेट) के बाद सर्वाधिक विकेट लने वाले दूसरे गेंदबाज थे।

शहादत की स्मृति जलियांवाला बाग

अश्विनी अग्रवाल

1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के बाद से ही अंग्रेज बुरी तरह भयभीत थे। उनके शासन के खिलाफ क्रांतिकारी गतिविधियों की किसी भी पुनरावृत्ति की संभावना ने उन्हें बहुत डरा दिया था। 20 सदी की शुरूआत में लाला हरदयाल, लाला लाजपत राय और अजीत सिंह जैसे नेताओं को पंजाब से निर्वासित कर दिया गया था, लेकिन इससे भी अंग्रेजों का भय कम नहीं हुआ। कुछ नेताओं के अपेक्षाकृत नरम रवैये के आधार पर उन्होंने सोचा कि अत्यधिक प्रताड़ना से वे भारतीयों में राष्ट्रीय भावना के उदय को आसानी से दबा देंगे। लेकिन हर कदम पर विफलता हाथ लगी। जलियांवाला बाग हत्याकांड में लगभग एक हजार निर्दोष लोगों को ब्रिटिश ब्रिगेडियर-जनरल रेजिनाल्ड डायर ने बेरहमी से गोलियों से भून डाला था। ये लोग 13 अप्रैल 1919 को खुशी के त्योहार, बैसाखी को मनाने के लिए इकट्ठा हुए थे। इस नरसंहार ने भारतीयों के दिलों में एक दुखद छाप छोड़ी है।

इतिहास की इस त्रासदी को लेकर कई पुस्तकें लिखी गई। मार्च 1919 में रॉलेट एक्ट अधिनियम को लागू करना, पंजाब में मार्शल लॉ की घोषणा, पंजाब के तत्कालीन लेफ्टिनेंट- गवर्नर माइकल ओ डायर की भूमिका, रेजिनाल्ड डायर द्वारा हत्याकांड को अंजाम देना और उसके बाद गठित हंटर समिति द्वारा सभी दोषियों को दोषमुक्त करना आदि ऐसी घटनाएं हैं, जिनके बारे में सभी जानते हैं। यह अंग्रजों की एक सुनियोजित गहरी साजिश थी, जिसके तहत भारतीयों को कुचलने के लिए अमानवीय कृत्यों के माध्यम से आंतक का राज स्थापित किया गया। जो किसी भी सभ्य देश के लिए अकल्पनीय रूप से शर्मनांक स्थिति थी। अंग्रेजों के कार्यों के पीछे के कारणों का पता लगाने के लिए तत्कालीन ब्रिटिश प्रशासन के मनोविज्ञान को समझना होगा। तभी यह स्पष्ट हो पाएगा कि आकस्मिक रूप से होने वाली यह अकेली घटना नहीं थी, जो एक रूग्ण दिमाग के अविचारित कार्यों के कारण घटित हुई थी।

भारत के 1857 के पहले स्वतंत्रता आन्दोलन के बाद से अंग्रेज बुरी तरह भयभीत हो गए थे। उनके शासन के खिलाफ क्रांतिकारी गतिविधियों की किसी भी पुनरावृत्ति की संभावना ने उन्हें बहुत डरा दिया था। 20 वीं सदी की शुरूआत में लाला हरदयाल, लाला लाजपत राय और अजीत सिंह जैसे नेताओं को निर्वासित कर दिया गया था, लेकिन इससे भी अंग्रजों का भय कम नहीं हुआ। कुछ राजनीतिक नेताओं के अपेक्षाकृत नरम रवैये के आधार पर उन्होंने सोचा कि अत्यधिक प्रताड़ना के उपाय से वे राष्ट्रीय भावना के उदय को आसानी से दबा सकते हैं, ताकि उनका शासन निरंतर जारी रहे। भारतीयों में राष्ट्रीय भावना के जागृत होने से अंग्रेज पूरी तरह बेखबर रहे। प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) के दौरान ब्रिटेन तथा इसके सहयोगी देशों के पक्ष में भारतीय जनता और भारतीय सैनिकों की बहादुरी के प्रति भी अंग्रेज पूरी तरह कृतघ्न बने रहे। एक छोटा सा बहाना, यहां तक कि हड़ताल जैसा एक शांतिपूर्ण विरोध भी उनकी बर्बर कार्रवाई के लिए पर्याप्त था। अंग्रजों की भयावह साजिश की झलक पंजाब के तत्कालीन लेफ्टिनेंट- गवर्नर माइकल ओ डायर के कार्यों में दिखाई पड़ती है। जिसने लोगों के अधिकारों को दबाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। पढ़े-लिखे वर्ग का अपमान किया गया, सैकड़ों को सलाखों के पीछे डाला गया और प्रेस का गला घोंट दिया गया। अप्रैल, 1919 के शुरू होने के साथ ही घटनाओं की शुरूआत हुई। लाहौर और अमृतसर में शांतिपूर्ण हड़तालों को बलपूर्वक तोड़ा गया

और शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर गोलियां चलाई गई। प्रमुख स्थानीय नेताओं को गिरफ्तार निर्वासित कर दिया गया। लाहौर और अमृतसर के साथ-साथ कसूर और गुजरांवाला जैसी जगहों पर भी अत्याचार हुए। अंग्रेजों ने शांतिपूर्ण लोगों को भड़काने का काई मौका नहीं गंवाया। स्थिति तब तनावपूर्ण हो गई जब अमृतसर में हुई फ़ायरिंग के परिणामस्वरूप पांच यूरोपीय लोगों की मौत हो गई और कुछ भारतीय छात्रों को पढ़ाने जाते समय शेरवुड नाम की एक महिला को गली में पीटा गया। ऐसा लगता है कि इससे ब्रिटिश शासन को अपना सम्मान बुरी तरह आहत होता दिखा, क्यों कि इसके बाद गांवों में भी पुलिस द्वारा निर्दोष लोगों को क्रूर तरीके से पीटा और रेंगने के लिए मज़बूर किया गया।

घटना से ठीक एक दिन पहले ब्रिगेडियर जनरल रेजिनाल्ड डायर को जालंधर से अमृतसर स्थानांतरित किया गया था। यहां आने के बाद उन्होंने सार्वजनिक समारोहों पर प्रतिबंध लगा दिया। प्रतिबंध के बारे में आम लोगों को जानकारी नहीं मिल पाई। 13 अप्रैल को बैसाखी मनाने के लिए बड़ी संख्या में आस-पास के ग्रामीण इलाकों के किसान पहले ही अमृतसर में जमा हो गए थे। डायर दोपहर में अपने सैनिकों, जिनमें से कोई भी ब्रिटिश नहीं था, के साथ जलियांवाला बाग के मुख्य द्वार पर पहुंचा और बिना किसी चेतावनी के उसने गोली चलाने का आदेश दे दिया।

बैसाखी

बैसाखी (14 अप्रैल) पंजाब और उत्तर भारत का महान पर्व है। यह खुशियों का त्योहार है। खेत में खड़ी फ़सल पर हर्षोल्लास प्रकट करने का दिन है। धार्मिक चेतना और राष्ट्रीय जागरण का स्मृति दिवस है। विक्रमी संवत का उत्थान और मेष संक्रान्ति होने के कारण वैसाखी के दिन किसी सरोवर, नहर या नदी में स्नान का बहुत महत्व है। तरन तारन की बैशाखी प्रसिद्ध है क्यों कि 1768 ई. में सिक्खों के गुरू श्री रामदास की स्मृति में एक गुरूद्वारा बनाया गया जिसके साथ एक सरोवर भी है। इसमें स्नान करने से कुष्ठ जैसे असाध्य रोग दूर हो जाते हैं, ऐसा विश्वास है। दसवें गुरू श्री गुरू गोविन्द सिंह जी ने खालसा पन्थ की स्थापना सन् 1699 ई. में बैसाखी के दिन की थी। उन्होंने इस दिन ऐसे पांच व्यक्तियों को चुना जो धर्म के लिए अपनी जान न्योछावर कर सकते थे। ये पांच थे- लाहौर के दयाराम (खत्री), दिल्ली के धर्मदास (जाट), द्वारका के मोहकम चन्द (धोबी), जगन्नाथ पुरी के हिम्मत (रसोइया) तथा बेदर के साहब चन्द (नाई)। इन पांचों से गुरू गोविन्द सिंह ने बाद में स्वयं अमृत पान ग्रहण किया। अमृतसर के जलियावाला काण्ड में 1919 की वैशाखी में जनरल डायर की गोली से 1500 से अधिक व्यक्ति शहीद हुए थे।

जिस दिन प्रथम बार मानव के पृथ्वी से अन्न प्राप्त किया, वह दिन पर्व बन गया और इस प्रकार बैसाखी का त्यौहार मनाया जाने लगा। भारत में महीनों के नाम नक्षत्रों पर रखे गए हैं। बैसाखी के समय आकाश में विशाखा नक्षत्र होता है। विशाखा नक्षत्र युक्त पूर्णिमा मास में होने के कारण इस मास को बैसाखी नाम दिया गया। भारतीय ज्योतिष में चन्द्र गणना के अनुसार चैत्र की प्रतिपदा तिथि वर्ष का पहला दिन होता है और सौर गणना के अनुसार बैसाखी।

-पं. वेणीमाधव

पाठक पीठ

प्रत्यूष का मार्च 22 का अंक अच्छा लगा। मुख पृष्ठ एवं आवरण आलेख दिवंगत स्वर कोकिला 'भारत रत्न' लता मंगेशकरजी को समर्पित था। आलेख में लताजी के जीवन संघर्ष एंव उपलब्धियों का वर्णन प्रेरक था।

टी.आर. अग्रवाल
डायरेक्टर (फाइनेंस)

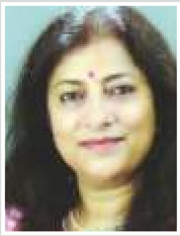

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के परिप्रेक्ष्य में स्त्री-विमर्श स्तंभ के अंतर्गत महिला सशक्तिकरण और समाज विश्लेषणात्मक आलेख मार्च के अंक की विशेषता थी। निश्चय ही महिला सशक्तिकरण में सरकार के साथ ही समाज की भूमिका भी महत्वपूर्ण है।

डॉ. कौशल चूंडावत,
संजीवनी हॉस्पीटल,
डायरेक्टर

विद्यालयी/विश्वविद्यालयी परीक्षाओं के दौर में मार्च के अंक में डॉ. रजनी नागदा का आलेख 'परीक्षा से डरे नहीं-तैयारी करें' परीक्षार्थियों के मनोबल को बढ़ावा देने वाला था। प्रत्यूष इसी तरह की जानकारियों को लेकर परिवार की पसंद है।

गजेन्द्र जैन,
उद्योगपति

प्रत्यूष के मार्च 22 के अंक में प्रकाशित भारत रत्न लताजी और रक्षा के क्षेत्र में भारत की बढ़ती आत्म निर्भरता से संबंधित आलेख काफी अच्छे और विश्लेषणात्मक थे। इसके अलावा कुरुक्षेत्र के बारे में दी गई जानकारी भी नई पीढ़ी के लिए उपयोगी रही।

अभिषेक सिंघवी,
उद्योगपति

प्रत्यूष

प्रत्यूष पत्रिका में विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें

75979 11992, 94140 77697

प्रत्यूष

आए कुल्फी के चटखारे के दिन

गर्मी में कुल्फी का नाम लेते ही स्वतः मुंह में पानी आ जाता है। कुल्फी वाले की घंटी सुनते ही बच्चे उसकी ओर दौड़ पड़ते हैं। केसर-पिस्ता कुल्फी के तो कहने की क्या? रबड़ी वाली कुल्फी का स्वाद तो छूटे से नहीं छूटता। अब तो कई फ्लेवर में कुल्फी उपलब्ध है। घर में भी स्वादिष्ट और लाजवाब कुल्फी बनाई जा सकती है।

पुष्पा शर्मा

मावा कुल्फी

सामग्री

- मावा: 3 बड़े चम्मच
- दूध: आधा लीटर
- कॉर्नफ्लोर: 1 छोटा चम्मच
- चीनी : 2 चम्मच
- इलायची पाउडर: 1/2 चम्मच
- बादाम व पिस्ता: 2 चम्मच
- सजावट के लिए: बादाम पिस्ता और मावा

विधि: एक भारी तले के बर्तन में दूध डालकर गैस पर रखें। आंच तेज कर दें। उबाल आने पर आंच को मध्यम करें और इसे तब तक चलाएं जब तक यह गाढ़ा न हो जाए। चम्मच की मदद से बर्तन के चारों ओर लगे दूध को छुड़ाते रहें ताकि यह बर्तन में न चिपके। अब पानी में कॉर्नफ्लोर डालकर ऐसे मिलाएं कि इसमें दाने (गांठ) न पड़े। इसे गाढ़े दूध में मिलाएं और चलाते रहें ताकि बर्तन में चिपके नहीं। अगर ऐसा नहीं किया तो आपको जले का स्वाद आएगा। अब इस मिश्रण में चीनी, बादाम, पिस्ता, खोया और इलायची पाउडर डालकर तकरीबन 5 मिनट तक चलाते हुए पकाएं। गैस बंद करके मिश्रण को ठंडा होने दें। मिश्रण को कुल्फी के सांचे में डालकर सेट होने तक या 6 घंटे के लिए फ्रीजर में रख दें। अब चाकू की मदद से कुल्फी को सांचे से निकालकर 3-4 हिस्सों में काट कर सर्व करें।

मलाई कुल्फी

सामग्री

- फूल क्रीम दूध- 1 लीटर
- पाउडर चीनी : 90 ग्राम
- काजू : 8-10
- छोटी इलायची : 4
- पिस्ते: 10-12

विधि: सबसे पहले दूध को गरम करने के लिए एक भारी तले वाले बर्तन में डाल दें और दूध में उबाल आने दें। काजू को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर लें। पिस्ते को पतले टुकड़ों में काट लें, छोटी इलायची को छील कर दरदरा पाउडर बना लें। दूध में उबाल आने के बाद दूध को हर 1-2 मिनिट में चम्मच को बर्तन के तले तक चलाते हुए गाढ़ा होने और दूध को आधा रहने तक पकाते रहे। दूध के आधा रहने के बाद कटे हुए काजू और पिस्ते डालकर मिला दें। दूध को थोड़ा और गाढ़ा होने दें। इलायची पाउडर और पाउडर चीनी डालकर मिक्स करें और दूध 1-2 मिनिट तक थोड़ा उबाल लें। दूध को गैस से उतार कर ठंडा होने के लिए रख दें। ठंडा हो जाने पर दूध को कंटेनर में डालकर ढंककर फ्रिजर में 6-8 घंटों के लिए जमने के लिए रख दें। कुल्फी जमने पर इसे फ्रिजर से निकाल लें और ठंडी-ठंडी कुल्फी को 10 मिनिट के अंदर ही सर्व करें।

केसर पिस्ता कुल्फी

सामग्री: ■ दूध: 1 लीटर ■ मलाई: 1 कटोरी ■ चीनी: 100 ग्राम ■ इलायची पाउडर : 1/2 छोटा चम्मच ■ केसर- 10 पत्तियां ■ पिस्ता: 20 ग्राम (कटा हुआ)

विधि: कुल्फी बनाने के लिए सबसे पहले कड़ाही में दूध गर्म करने रखे। दूध में जब एक उबाल आ जाए तो आंच कम करके इसमें सभी सामग्री डाल दें। चीनी घुलने तक इसे लगातार चलाते रहें। दूध को कम आंच पर तब तक उबलने दें, जब तक कि यह आधा न रह जाए। दूध जब गाढ़ा होकर आधा रह जाए तो इसे आंच से उतारकर कमरे के तापमान पर ठँडा होने के लिए रख दें। दूध ठंडा होने पर कुल्फी के सांचों में भरकर रातभर फ्रीजर में जमने के लिए रख दें। सुबह ठंडी-ठंडी मलाईदार केसर पिस्ता कुल्फी तैयार हो जाएगी।

मटका कुल्फी

सामग्री

- दूध: 1 लीटर
- ब्रेड: 2 पीस
- शक्कर: 1/2 कप
- कॉर्नफ्लोर: 1 चम्मच
- बादाम: 5-6 (बारीक कटे हुए)
- पिस्ता: 6-7 (बारीक कटे हुए)
- इलायची पाउडर: 1/2 चम्मच
- केसर: 4-5 धागे

विधि: मटका कुल्फी बनाने के लिए फुल क्रीम दूध को एक भारी तली वाली कड़ाही में दूध गरम करें। दूध को बीच-बीच में कलछी से चलाते रहें, जिससे वह तली में लगने न पाए। दूध में उबाल आने पर उसमें से 1 कप दूध एक बाउल में निकाल कर अलग रख लें। बाकी बचे हुए दूध को चलाते हुए गाढ़ा होने तक पकाएं। जब दूध गाढ़ा हो जाए, उसमें शक्कर मिला लें। शक्कर घुल जाने पर गैस बंद कर दें और दूध को ठंडा होने दें। अब ब्रेड के स्लाइस के भूरे किनारों को हटा दें और ब्रेड के छोटे-छोटे टुकड़ें कर लें। साथ ही दो चम्मच दूध में ब्रेड के टुकड़े और कॉर्नफ्लोर डालें और अच्छी तरह से घोल लें। अब कढ़ाई वाले दूध में ब्रेड का घोल, इलायची पाउडर, कटे हुए बादाम, पिस्ता डालें और अच्छी तरह से मिला लें। अब मटका कुल्फी बनाने का मिश्रण तैयार है। इस मिश्रण को मिट्टी के छोटे-छोटे कुल्हड़ या मटके में भर लें और 6-7 घंटे के लिए फ्रीजर में रख दें। अगर आपके पास मिट्टी के मटके नहीं है, तो इसके लिए आइसक्रीम के सांचों का इस्तेमाल कर लें। आपकी स्वादिष्ट मटका कुल्फी तैयार है। अब इसे फ्रीजर से निकालें और सर्व करें।

ज्योतिष

क्या कहते हैं ग्रहों के योग

वसुमति योग: यदि किसी जातक की कुंडली में लग्न से तीन, छह, दस और ग्यारह भावों में शुभ ग्रह विद्यमान हो तो वसुमति योग होता है। इस योग में जन्म लेने पर जातक अपना भाग्य स्वयं बनाता है। उसके जीवन में धन का अभाव नहीं रहता और सुख भोगता है।

गंधर्व योग: कुंडली में लग्न से केन्द्र में गुरु और शुक्र हो और लग्न स्थान शुक्र का घर हो तो 'गंधर्व योग' होता है। ऐसा जातक गायक अथवा गीतकार होता है और इसी माध्यम से प्रसिद्धि प्राप्त करता है। प्रसिद्धि के साथ-साथ धन भी खूब कमाएंगें और विदेश यात्रा भी होती रहेगी।

चतुस्सागर योग: सभी ग्रह (शुभ और क्रूर ग्रह) केन्द्र स्थानों में बैठे हो तो चतुस्सागर योग होता हैं। इस योग में जन्म लेने वाले जातक नेता होते हैं और ख्याति अर्जित करते

हैं। स्वस्थ जीवन और लम्बी आयु होती है। विदेश में प्रसिद्धि मिलती है और यात्राएं भी खूब करते हैं। इसलिए ऐसे जातकों को ऐसी नौकरी में विशेष लाभ होता है, जहां घूमने-फिरने का काम हो। पारिवारिक जीवन भी सुखद होता है।

पुष्कल योग: राशि के स्वामी चन्द्रमा के साथ यदि बलवान लग्नेश केन्द्र में या मित्र के भाव में बैठा हो तो 'पुष्कल योग' होता है। इस योग में जन्मा जातक मित्रों से सहायता प्राप्त करता और धनवान होता है। व्यक्ति व्यवसाय की अपेक्षा नौकरी में अधिक उन्नति करता है और उच्चाधिकारियों का प्रिय होता है।

वीर योग: तीसरा भाव पराक्रम का भाव है। इस घर में यदि दो पाप ग्रह किसी शुभ ग्रह के साथ बैठ जाएं या उन चन्द्रमा की दृष्टि हो तो वीर योग होता है। इसके परिणामस्वरूप जातक पुलिस या सेना में उच्च पद के साथ-साथ प्रसिद्धि भी प्राप्त करता है। शुभ ग्रह के साथ बैठने के साथ बैठने या चन्द्रमा की दृष्टि होने से व्यक्ति अपनी शक्ति का दुरुपयोग नहीं करता और दिल से भी मजबूत होता है।

महालक्ष्मी योग: लग्न का स्वामी त्रिकोण में हो, दूसरे घर का स्वामी ग्यारहवें घर में और दूसरे घर पर उसके स्वामी की या शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो 'महालक्ष्मी' योग होता है। इस योग में जन्मा व्यक्ति अकूत संपदा का स्वामी होता है।

अश्विनी कुमार

प्रत्यूष

ईश्वर है अनंत आनंद

ज्ञान के दुर्ग में स्वयं को सुरक्षित रखें। इससे अधिक और कोई सुरक्षा नहीं है। पूर्ण ज्ञान आपको ऐसी अवस्था में ले जाएगा, जहां आपको कोई भी वस्तु क्षति नहीं पहुंचा सकती। परंतु जब तक आपको ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ है और प्रलोभन होता है तो सर्वप्रथम आप उस कार्य अथवा लालसा को रोक दें और उसके बाद तर्क करें। यदि आप पहले तर्क करने का प्रयास करते हैं तो चाहे आप किसी कार्य को न भी करना चाहें तो भी आप उसे करने के लिए बाध्य हो जाएंगे, क्योंकि प्रलोभन तर्क पर हावी हो जाएगा। केवल कहें नहीं और उठ कर दूर चले जाएं। यही शैतान (माया) से बचने का सबसे अचूक तरीका है। प्रलोभन के आक्रमण के समय आप जितना अधिक इसी नहीं करूंगा, की शक्ति को विकसित करेंगे, उतना ही अधिक आप प्रसन्न रहेंगे। ऐसा इसलिए क्योंकि सम्पूर्ण आनंद उस काम को करने की सक्षमता पर निर्भर है, जिसे अंतरात्मा आपको अवश्य ही करने के लिए कहे।

स्वयं को अपने परिवेश और इंद्रिय इच्छाओं द्वारा नियंत्रित न होने दें। सद्‌गुण और आध्यात्मिक जीवन, इंद्रिय लिप्तता की अपेक्षा कहीं अधिक मनोहर है, लेकिन प्रलोभन की आदतों की कड़ियां लोगों को दृढ़ता से जकड़े रखती हैं। यदि एक बार ईश वर ने अपने प्रेम से आपको आकर्षित कर लिया तो आप और कुछ नहीं चाहेंगे। आपकी किसी भी वस्तु में रूचि नहीं रहेगी। जब आप विश्वस्त हो जाते हैं कि वे आपके लिए ही अत्यधिक वांछनीय हैं, निधि हैं, तो भौतिक जगत में कुछ भी, कभी भी पुनः आपको प्रलोभित नहीं कर सकता और आपके विवेक पर हावी नहीं हो सकता।

ईश्वर को जानना ही एकमात्र उचित अभिलाषा है, क्योंकि वे अनंत आनंद है। हमें उनको इसलिए चाहना चाहिए, क्योंकि वे हमारे समस्त दुखों के लिए रामबाण हैं। वे हमारी समस्त आवश्यकताओं के समाधान हैं। जिन वस्तुओं को पाने के लिए हमारे हृदय क्रंदन करते हैं- प्रेम, यश, ज्ञान अथवा प्रत्येक अन्य कोई भी वस्तु उन्हें हम उस पूर्ण ब्रह्म के सम्पर्क से पाते हैं। भले ही आप संसार में अत्यधिक प्रसिद्ध व्यक्ति हों, आपकी प्रसिद्धि के बोध का अंत मृत्यु होगी, तब लोगों के प्रेम का कोई अर्थ बचेगा ही नहीं।

परमहंस योगानंद

जीवन का सच्चा आनंद परमात्मा का ध्यान है, लेकिन सांसारिक व भौतिक प्रलोभनों के फेर में पड़कर व्यक्ति इस आनंद से वंचित हो जाता है। प्रलोभनों से बचने का एक मात्र विकल्प ज्ञान की शरण में जाना ही है। पूर्ण ज्ञान हमें हर प्रकार से प्रलोभनों से बचाते हुए ईश्वरीय आनंद की अनुभूति में लीन कर देता है।

तो ऐसी किसी वस्तु के लिए इतना कठिन परिश्रम क्यों करते हैं, जो मृत्यु के साथ ही खो जाएगी? धन, यश, प्रतिष्ठा, इंद्रिय लिप्तता, भौतिक सुख ये सब मिथ्या सुख है, जो माया रूपी शैतान ने ईश्वर संगति के सच्चे आनंद के बदले में दे रखे हैं। याद रखें कि प्रलोभन केवल इसलिए शक्तिशाली है कि आपके पास किसी अन्य अच्छी वस्तु के साथ तुलना करने की समझ नहीं है। जब आप प्रबलता से आकर्षित होते है तो आपका ज्ञान क्षण भर के लिए आपकी इच्छाओं और आदतों का कैदी बन जाता है, लेकिन स्वतंत्रता का उच्चतम मार्ग है- ईश्वर के अपार आनंद में इस प्रकार लीन हो जाना कि आप समस्त सुखों को एक क्षण में त्याग सकें।

प्रलोभन चीनी लगा विष है, यह स्वाद में रूचिकर लगता है, परंतु इससे मृत्यु निश्चित है। इस संसार में जिस सुख को लोग ढूंढ रहे हैं, वह स्थायी नही है। ईश्वरीय आनंद शाश्वत होता है। उसकी लालसा करें, जो चिर स्थायी है और जीवन के अस्थायी सुखों को त्यागने के लिए कठोर हृदय वाले बनें।

यदि आप इस जीवन में सच्चे आनंद को प्राप्त कर लेते हैं तो यह इस जीवन में और जीवन के बाद भी, आपके साथ रहेगा। आप क्या चाहते हैं-ईश्वर का शाश्वत आनंद, जो अभी थोड़े से सांसारिक सुखों को त्यागने से आपका हो सकता है या वर्तमान सांसारिक सुख, जो हमेशा नहीं रहेगा। तुलना करके, अपने हृदय को विश्वास दिलाएं। ईश्वर की ओर आगे बढ़ने वाले आपके प्रत्येक प्रयास को वे मान्यता देंगे।

शुद्ध हृदय से आरंभ करें और कहें मैं सदा अच्छा रहा हूं, मैं केवल स्वप्न देख रहा था कि मैं बुरा हूं। यह सत्य है कि बुराई एक खराब सपने की तरह है और आत्मा से इसका कोई संबंध नहीं है।

प्रलोभन चीनी लगा विष है, यह स्वाद में रूचिकर लगता है, परंतु इससे मृत्यु निश्चित है। इस संसार में जिस सुख को लोग ढूंढ रहे हैं, वह स्थायी नहीं है। ईश्वरीय आनंद शाश्वत होता है। उसकी लालसा करें जो चिरस्थायी है। जीवन के अस्थायी सुखों को त्यागने के लिए कठोर हृदय वाले बनें। आपको ऐसा बनना ही पड़ेगा। संसार को अपने ऊपर शासन न करने दें। कदापि न भूलें कि केवल ईश्वर ही एकमात्र सत्य हैं। आपके परमपिता का सच्चा प्रेम आपके हृदय में आपके साथ लुका-छिपी का खेल खेल रहा है। आपकी सच्ची प्रसन्नता, ईश्वर की अनुभूति में निहित है।

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

यह माह आशातीत परिणाम देगा, आत्मविश्वास से पूर्ण रहेंगे, दाम्पत्य जीवन में मजबूती आएगी, नौकरी, व्यापार और कर्म क्षेत्र में पूर्ण सफलता मिलेगी, न्यायिक एवं शासकीय पक्ष अपने हित में रहेंगे। महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। संतान पक्ष सुकून देगा। स्वास्थ्य सामान्य।

वृषभ

आर्थिक रूप से यह माह उतार–चढ़ाव वाला रहेगा, स्थाई सम्पत्ति में निवेश आगे लाभ देगा, प्रेम संबंध विवाह में परिणत होंगे, माह का उत्तरार्द्ध आर्थिक सम्बल देगा। परिवार में मांगलिक कार्य संभव। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, वरिष्ठजनों के सहयोग से कर्म क्षेत्र में निखार आएगा।

मिथुन

भाई–बहनों का सहयोग निजी जीवन में लाभदायक बनेगा, विवाहित जीवन में खटास एवं ससुराल पक्ष की ओर से समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, भाग्य पूर्ण रूप से साथ देगा। कर्म क्षेत्र में भी कुछ नया कर पाएंगे। माह का उत्तरार्द्ध आर्थिक पक्ष को मजबूत बनाएगा। शत्रु पक्ष हावी रहेगा।

कर्क

व्यावसायिक कारणों से लम्बी यात्राएं संभव, परिवार में मांगलिक उत्सव संभव एवं आपसी संबंधों को मजबूती मिलेगी। कर्म क्षेत्र में प्रतिष्ठा एवं पदोन्नति संभव। पैतृक संपत्ति संबंधी मामले पक्ष में बनेंगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

सिंह

इस माह में इच्छानुसार परिणामों की प्राप्ति होगी। स्थान परिवर्तन के भी योग बनेंगे। अनुभवी लोगों की सलाह काम आएगी, भाई–बहनों का सहयोग सकारात्मक परिणाम देगा। घर में कुछ नया काम करवा सकते हैं, श्वास से जुड़ी कोई बीमारी भी परेशान कर सकती है।

कन्या

स्थान परिवर्तन के योग हैं, काम–धंधों को लेकर यात्राएं करनी पड़ सकती है। व्यापार में लाभ तो मिलेगा, परंतु खर्चें भी बढ़ेंगे, मां के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें, शत्रु पक्ष पर प्रभावी ढंग से नियंत्रण कर पाएंगे, साझेदारी में धन एवं समय नष्ट नहीं करें।

तुला

बनते काम प्रतिद्वंद्वी के कारण बिगड़ सकते हैं। किसी से अपने विचार साझा न करें, व्यापार में लाभ तो मिलेगा, परंतु संतुष्टि नहीं। खर्च में वृद्धि संभव। मानसिक अवसाद संभव। संतान पक्ष से शुभ समाचार मिलेंगे। लम्बे समय से चल रही आधि–व्याधि से मुक्ति मिलेगी।

वृश्चिक

रुका हुआ पैसा मिल सकता है, माह के मध्य में चिंताएं बढ़ेंगी, कृषि कार्य से लाभ, सामाजिक मान–सम्मान में वृद्धि होगी। किसी संस्था से लाभ की उम्मीद कर सकते हैं। संतान आपकी खुशी का कारण बनेगी, व्यर्थ की बातों से तनाव संभव, शरीर में कमजोरी का अनुभव करेंगे।

इस माह के पर्व/त्योहार

2 अप्रेल	चैत्र शुक्ल प्रथम	नवरात्रि/वि.स. 2079 प्रारंभ/ चेटीचंड/गुड़ीपड़वा
3 अप्रेल	चैत्र शुक्ल द्वितीया	रमजान प्रारंभ
4 अप्रेल	चैत्र शुक्ल तृतीया	गणगौर पूजा
10 अप्रेल	चैत्र शुक्ल नवमी	श्रीराम नवमी
11 अप्रेल	चैत्र शुक्ल दशमी	ज्योति बा फुले जयंती
14 अप्रेल	चैत्र शुक्ल त्रयोदशी	महावीर जयंती/अम्बेडकर जयंती/वैशाखी
15 अप्रेल	चैत्र शुक्ल चतुर्दशी	गुड फ्राइडे
16 अप्रेल	चैत्र शुक्ल पूर्णिमा	हनुमान जयंती
27 अप्रेल	वैशाख कृष्णा द्वादशी	सेन जयंती

विवाह मुहूर्त

15 अप्रेल	चैत्र शुक्ल-14, नक्षत्र-उ.फा., दिवा लग्न-वृष, रेखा - 8
19 अप्रेल	वैशाख कृष्णा-3, नक्षत्र-अनुराधा, रात्रि लग्न- धनु, रेखा-7
20 अप्रेल	वैशाख कृष्णा -4, नक्षत्र-मूल, दिवा लग्न-मेष/वृष या रात्रि लग्न मीन, रेखा-7
21 अप्रेल	वैशाख कृष्णा-5, नक्षत्र-मूल, दिवा लग्न- मेष/मिथुन या गोधूलि या रात्रि लग्न-वृश्चिक/मीन, रेखा-7
22 अप्रेल	वैशाख कृष्णा-6, नक्षत्र- उ.षा., रात्रि लग्न-वृश्चिक/मीन, रेखा-7
23 अप्रेल	वैशाख कृष्णा-7, नक्षत्र- उ.षा., दिवा लग्न- मेष/वृष/मिथुन या नक्षत्र श्रवण, रात्रि लग्न-वृश्चिक/धनु/मीन, रेखा-7
24 अप्रेल	वैशाख कृष्णा-9, नक्षत्र-श्रवण, दिवा लग्न-मेष/मिथुन, रेखा-7

धनु

मित्रों से भरपूर सहयोग मिलेगा, जल्दबाजी में काम से बचे, सोच–समझकर निर्णय लेवें, भाई–बहनों से साथ यात्रा प्रसंग बन सकता है। आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी। खर्च भी बढ़ेगा, नए विरोधी प्रकट होंगे, पुराने मित्र व सहयोगी दूर हो सकते हैं, स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखें।

मकर

कार्य क्षेत्र में अपने सहयोगी या साझेदार से भरपूर सहयोग मिलेगा। उधारी से बचें। कार्य क्षेत्र में उन्नति तो मिलेगी, परंतु संतुष्टि नहीं मिलेगी, गहनों को बेचना पड़ सकता है। आपके स्वभाव से रिश्तों में दूरिया बढ़ेगी। सब कुछ ठीक होने पर भी घर में तनाव का माहौल रहेगा।

कुम्भ

लम्बी बीमारी से छुटकारा मिलेगा। व्यापार बढ़ाने का अवसर है, पहले से ज्यादा ऊर्जावान महसूस करेंगे। नौकरी में लाभ मिलने के संकेत है। व्यापार में बाजार आपके पक्ष में रहेगा। सभी आपके काम से प्रसन्न रहेंगे। माह का उत्तरार्द्ध आय को सुदृढ बनाएगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

मीन

पारिवारिक आर्थिक स्थिति मजबूत होगी, कार्यक्षेत्र में किसी से मनमुटाव, घर के सदस्यों को किसी न किसी बात की चिंता सताएगी एवं कोई नई समस्या आ सकती है। कार्य क्षेत्र में पदोन्नति हो सकती है, प्रतियोगी परीक्षार्थियों के लिए अभी नहीं तो कभी नहीं वाली बात चरितार्थ होगी।

अग्नि को साक्षी मान एक-दूजे के हुए 21 जोड़े

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान के दिव्यांग एवं निर्धन युवक-युवती सामूहिक विवाह समारोह में 6 मार्च को 21 जोड़ो ने पवित्र अग्नि को साक्षी मान जीवन भर एक-दुसरे को साथ निभाने का वचन दिया। समारोह में मुख्य अतिथि लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने नवविवाहितों को अशीर्वाद प्रदान किया। संस्थान के संस्थापक कैलाश मानव, कमलादेवी अग्रवाल, अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल, वंदना अग्रवाल के सान्निध्य में गणपति पूजन के साथ विवाह की विभिन्न रस्में हुई। मुख्य अतिथि लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ ने कहा कि सेवा भाव से किया गया कार्य हमेशा खुशी देता है। सेवा-भाव हमारे भारतीय समाज की विशेषता हैं। संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल ने राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश व गुजरात के सभी 21 जोड़ों को बधाई देते हुए कहा कि संस्थान की ओर से अब तक आयोजित 36 समारोहों में शामिल हुए 2130 दिव्यांग व निर्धन जोड़े आज खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

महेश सेवा संस्थान की रजत जयंती

उदयपुर। महेश सेवा संस्थान की स्थापना के 25 साल पूर्ण होने पर चित्रकूट नगर स्थित संस्थान भवन में उल्लास से रजत जयंती समारोह मनाया गया। सचिव बालमुकन्द मण्डोवरा एवं ट्रेजरार हितेष भदाद द्वारा वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। अध्यक्ष डॉ. कैलाश सोडाणी द्वारा संस्थान भवन के प्रथम तल पर महिला छात्रावास निर्माण का प्रस्ताव एवं भूतल पर कक्षा कक्षों के निर्माण का प्रस्ताव रखा जिसे सभी की सहमति मिली। मुख्य अतिथि माहेश्वर पब्लिक स्कूल के अध्यक्ष गोपाल राठी, सत्यप्रकाश काबरा, उपाध्यक्ष दक्षिणी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा एवं कैलाश ईनाणी, मंत्री माहेश्वरी सेवा समिति अहमदाबाद थे। इस अवसर पर स्मारिकार, 'धरोहर' का अतिथियों ने विमोचन किया। रक्तदाता ओम मूंदड़ा को भी सम्मानित किया गया।

बुजुर्गों से मिले उपमहापौर

उदयपुर। तारा संस्थान संचालित आनंद वृद्धाश्रम के 10 वर्ष पूरे होने पर आयोजित

कार्यक्रमों के क्रम के पहले आयोजन में उपमहापौर पारस सिंघवी और सेक्टर 14 के पार्षद महेश त्रिवेदी ने वृद्धाश्रम का अवलोकन कर बुजुर्गों का आशीर्वाद लिया। उपमहापौर पारस सिंघवी ने वृद्धाश्रम के बुजुर्गों से मिलकर कहा कि चाहे जिन भी परिस्थितियों में आपको यहां आना पड़ा हो, लेकिन आप सबको खुश देखकर अच्छा लगा। अतिथियों का स्वागत अध्यक्ष कल्पना गोयल व संचालन निदेशक विजय सिंह चौहान ने किया।

जैन समिति की परिचय निर्देशिका का विमोचन

उदयपुर. हिरणमगरी सेक्टर तीन स्थित श्री वर्धमान जैन श्रावक समिति के स्थाई सदस्यों के परिवार की परिचय निर्देशिका का विमोचन समाजसेवी भंवरलाल

बम्बोरिया, रोशनलाल कोठारी नाई वाला, रोशन लाल कोठारी कुंथवास वाला, भारमल पामेचा, चन्दन मल पामेचा, रोशन लाल कंठालिया, सुरेन्द्र सिंह पानगड़िया, व भूपाल सिंह खमेसरा ने किया। निर्देशिका में सेक्टर 3 में निवासरत करीब 400 से ज्यादा परिवार की संपूर्ण जानकारी का समावेश किया गया है। समारोह में भामाशाहों का भी सम्मान किया गया। इस दौरान सचिव जीवन सिंह मेहता, आनंद कुमार इन्टोदिया, दिलखुश सेठ, संजय अलावत, जीवन सिंह बापना, धनरूप मल बंबोरिया आदि उपस्थित थे।

आर्किटेक्ट व इंजीनियर सम्मेलन

उदयपुर। जे.के.लक्ष्मी सीमेंट द्वारा स्थानीय हावर्ड जोनसन होटल में आर्किटेक्ट व इंजीनियर सम्मेलन का आयोजन किया। समारोह में कम्पनी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष

(तकनीकी) एस.आर. चिटनिस ने मजबूत व टिकाऊ निर्माण पर तकनीकी प्रस्तुतिकरण किया। अजय दाधीच ने कहा कि बदलते तकनीकी युग में कम्पनियां भी अपने उत्पाद को और बेहतर बनाने के लिए नवीनतम तकनीकों का उपयोग कर रही हैं व हर समय तैयार रहती हैं। कम्पनी के वरिष्ठ महाप्रबन्धक डी.एन.नागर, राजेन्द्र मंत्री, विनीत सिंह, सिद्धार्थ वशिष्ठ व अमलेश श्रीवास्तव भी मौजूद थे।

लायंस क्लब, श्रीजी का पदस्थापना

उदयपुर. लायंस क्लब उदयपुर श्रीजी का पदस्थापना एवं पूर्व प्रांतपालों का अभिनंदन समारोह अंतरराष्ट्रीय निदेशक पीएमजेएफ लायन वी.के. लाड़िया के मुख्य अतिथ्य में गत दिनों संपन्न हुआ। प्रांतपाल एवं पदस्थापना अधिकारी एमजेएफ लायन संजय भंडारी ने क्लब सदस्यों को शपथ दिलाई। अध्यक्ष लायन राजेंद्र प्रसाद सनाढ्य ने क्लब द्वारा किए गए सेवा कार्यों का ब्यौरा देते हुए भविष्य के कार्यक्रमों के बारे में सदन को अवगत कराया। अंतरराष्ट्रीय निदेशक ने सदन को एलआईसीएफ के बारे में जानकारी दी। मुख्य अतिथि द्वारा लायन राजेन्द्र सनाढ्य को अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष के प्रमाणपत्र और लायन बाल कृष्ण सुहालका को अन्तर्राष्ट्रीय निदेशक के प्रमाणपत्र द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में पूर्व

प्रान्तपाल आर. एल. कुणावत, प्रान्तपाल एवं मल्टीपल चेयर पर्सन लायन अरविन्द शर्मा, पूर्व प्रान्तपाल अनिल नाहर, का सदन द्वारा अभिनंदन किया गया। लायन लाडिया ने लायन राजेन्द्र प्रसाद सनाढ्य के एमजेएफ बनने की घोषणा की। तत्पश्चात प्रांत-पाल ने 23 सदस्यों को शपथ दिलाई। अध्यक्ष लायन राजेन्द्र प्रसाद सनाढ्य के नेतृत्व में लायन बालकृष्ण सुहालका को उपाध्यक्ष प्रथम, लायन सुरेश किंगरानी को उपाध्यक्ष द्वितीय, लायन कृष्ण-कांत सनाढ्य को सचिव , लायन हेमेंद्र नागर को उप सचिव , लायन योगेश कुमार जैन को कोषाध्यक्ष , लायन मालिक कुमार राठौड़ को उप कोषाध्यक्ष, लायन विष्णु कुमार टेलर को टेमर, लायन दिनेश माली को टेल ट्विस्टर लायन महेंद्र शर्मा को सर्विस लायन पर्सन, लायन भंवर सिंह चौहान को मेंबर शिप ग्रोथ पर्सन, लायन नीलम सनाढ्य को एलआईसीएफ को-ऑर्डिनेटर एवं पांच निदेशकों को शपथ दिलाकर कार्यकारिणी पद स्थापित की गई। कार्यक्रम का संचालन लायन अर्जुन सनाढ्य ने व धन्यवाद ज्ञापन सचिव कृष्णकांत सनाढ्य ने किया।

हीरो मोटो कॉर्प का माइलेज जांच कार्यक्रम

उदयपुर। हीरो मोटो कॉर्प एवं शहर के तीनों स्थानीय डीलर रॉयल मोटर्स, मनामा मोटर्स एवं वीएसएस हीरो के तत्वावधान में हीरो गाड़ियों का माइलेज जांच कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सर्वश्रेष्ठ माइलेज देने वाले तीन वाहन मालिकों को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। कविता गांव में हीरो मोटो कॉर्प की 17 एचएफडीलक्स मोटर साइकिलों को मोटो कॉर्प के एरिया सेल्स मैनेजर भविक सरीन, स्थानीय डीलर रॉयल मोटर्स के शब्बीर के. मुस्तफा और वीएसएस हीरो के सतपालसिंह ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस मौके पर कम्पनी के प्रतिनिधि सेल्स ऑफिसर हरीश, सर्विस इंजीनियर मोहित लसोड, प्रियांश मलिक, विकास भामरे, हुसैन मुस्तफा आदि मौजूद रहे।

मारूति सुजुकी नेक्सा की न्यू एज बलेनो लॉन्च

उदयपुर। मारूति सुजुकी के अधिकृत डीलर नेक्सा नवनीत मोटर्स और टेक्नो मोटर्स के शो रूम पर न्यू एज बलेनो कार लॉन्च की गई। टेक्नो मोटर्स पर एंटी करप्शन ब्यूरो के डीआईजी राजेंद्र प्रसाद गोयल, एसबीआई डीजीएम दिनेश प्रतापसिंह ने अनावरण कर के कार को लॉन्च किया। लॉन्चिंग के अवसर पर 10 डिलीवरी की गई। इस अवसर पर कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर दिनेश जैन व निदेशक संपत कावड़िया भी मौजूद थे। इधर, नवनीत मोटर्स पर बैंक ऑफबड़ौदा के एजीएम अनिल माहेश्वरी ने कार को लॉन्च किया। इस अवसर पर नवनीत मोटर्स के मैनेजिंग डायरेक्टर एल.एन माथुर, डायरेक्टर प्रियांक माथुर व पूरी टीम उपस्थित थी। ललित माथुर ने बताया कि नई बलेनो बेहतर बिल्ड क्वालिटी और छह एयर बैग सेफ्टी के साथ आ रही है। 9 इंच स्मार्ट प्ले प्रो इंफोटेनमेंट सिस्टम वॉइस कमाण्ड के साथ आ रहा है। साथ ही 360 डिग्री व्यू केमरा एवं इनबिल्ट सुजुकी कनेक्ट सीरी व एलेक्सा के साथ दिया गया है। हेडअप डिस्प्ले के साथ इसमें 20 से भी ज्यादा सेफ्टी फीचर्स उपलब्ध हैं।

महिला अधिकारों की सुरक्षा के लिए करें प्रभावी प्रयास : भट्ट

उदयपुर। संभाग स्तरीय महिला समाधान समिति की त्रैमासिक बैठक पिछले दिनों संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट की अध्यक्षता में हुई। भट्ट ने महिला अधिकारों की सुरक्षा के लिए सतत प्रभावी प्रयास करने के साथ ही नियमित ब्लॉक स्तरीय महिला समाधान समिति की बैठकों के आयोजन पर बल दिया। उन्होंने जिला कलक्टर की अध्यक्षता में आयोजित होने वाली जिला महिला समाधान समिति में ब्लॉक स्तरीय समितियों की बैठकों की नियमित मॉनिटरिंग करने संबंधी निर्देश दिए। उन्होंने त्रिस्तरीय महिला समाधान समिति के प्रचारात्मक ब्रोशर का विमोचन किया। बैठक में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अंजना सुखवाल, संयुक्त निदेशक अर्चना रांका, संयुक्त श्रम आयुक्त पी.पी शर्मा, महिला अधिकारिता उप निदेशक संजय जोशी, उद्योग विभाग महाप्रबंधक मंजू माली, सीडीपीओ प्रताप सिंह, प्रो. गायत्री तिवारी एवं हेड एमपीयूएटी सलाहकार यूनिसेफ सिधु बिनुजीत उपस्थित थी।

डॉ. गायत्री तिवारी सम्मानित

उदयपुर। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिला अधिकारिता एवं बाल विकास विभाग, उदयपुर द्वारा महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए डॉ. गायत्री तिवारी को 'इन्दिरा महिला शक्ति प्रोत्साहन एवं सम्मान पुरस्कार-2022' प्रदान किया गया। उन्हें यह पुरस्कार पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास, संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट व जिला कलेक्टर ताराचंद मीणा ने प्रदान किया।

एमआरआई मशीन का लोकार्पण

उदयपुर। शिप्रा स्कैन्स एण्ड लैब पर दक्षिणी राजस्थान की प्रथम नई साईलेन्ट स्केनिंग डिजिटल एमआरआई मशीन का लोकार्पण किया गया। इसका शुभारम्भ चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के डॉ. जुल्फिकार काजी व इण्डियन मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. आनन्द गुप्ता ने किया। लैब की निदेशक रिंकू शर्मा ने बताया कि प्रथम ओटोमेटिक स्केन विद आर्टिफिशल इंटेलिजेन्स में काफी कम समय लगता है। रेडियोलोजिस्ट डॉ. भरत जैन ने बताया कि इस मशीन में सभी कोईल्स ली गई है। जिसमें शरीर के हर अंग का स्केन संभव है।

इण्डस्ट्रीयल एरिया में लगाए 3600 पौधे ट्री गार्ड के साथ

उदयपुर। यूसीसीआई के पीपी सिंघल सभागार में पौधरोपण अभियान का समापन कलक्टर ताराचन्द मीणा के सनिध्य में हुआ। बाद में उन्होंने पांच पौधे मेवाड़ औद्योगिक क्षेत्र के पर्यावरण मार्ग में लगाए। यूसीसीआई ने इस वर्ष वर्षा ऋतु में उदयपुर के आद्यौगिक क्षेत्र मेवाड़ इण्डस्ट्रीयल एरिया, सुखेर, अम्बेरी, गुडली, कलड़वास में करीब छह फीट उंचाई के 3600 पौधे मय ट्री गार्ड के लगाएं एवं उसके 2 साल के रख-रखाव के लिए अनुबंध भी किया। कलक्टर मीणा ने पर्यावरण के क्षेत्र में सिंगल यूज प्लास्टिक एवं ई-वेस्ट पर आयोजित सेमिनार में अपनी बात रखी।अध्यक्ष कोमल कोठारी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष संजय सिंघल, उपाध्यक्ष विजय गोधा, पर्यावरण कमेटी के कोर्डिनेटर जी.एस. सिसोदिया, रीको के वरिष्ठ क्षेत्रीय अधिकारी संजय नेनावटी ,विशेषज्ञ कपिल कुमार , डॉ. साक्षी जैन आदि ने विचार रखे।

कर्तव्य पराणयता की मिसाल

उदयपुर। आईएएस अखिल अरोड़ा की माता श्रीमती कमलेश अरोड़ा का 19 फरवरी को देहावसान हो गया। इन्ही दिनों राज्य के बजट को अन्तिम रूप दिया जा रहा था, और उसका दायित्व वित विभाग के प्रमुख सचिव होने के नाते अरोड़ा पर ही था। माताजी के निधन के बाद तीये की बैठक भी नहीं हुई थी उससे पहले ही वे मुख्यमंत्री निवास पर 22फरवरी को सीएम अशोक गहलोत के साथ बजट को अन्तिम रूप देते नजर आए। मां के निधन की खबर पर वे सीएम हाऊस से घर गए और मां की पार्थिव देह को कंधा देकर अन्तिम संस्कार की क्रियाएं सम्पन्न होने के बाद तुरन्त सीएम हाऊस पहुंच गए, बजट को अन्तिम रूप दिया। यह बजट मुख्यमंत्री ने राज्य विधान सभा में 23 फरवरी को पेश किया था। उनकी इस कर्तव्य निष्ठा ने मुख्यमंत्री सहित अन्य अधिकारियों ने प्रशंसा की। श्रीमती कमलेश अपने पीछे शोकाकुल पति डॉ. सी.एल.अरोड़ा, पुत्र संजय, अखिल अरोड़ा व उनका भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

कल्पना नर्सिंग की नई पैथलैब

उदयपुर। एमबी हॉस्पिटल रोड पर कल्पना नर्सिंग होम की नवीन शाखा कल्पना पैथलैब एवं डायग्नोस्टिक सेंटर का शुभारंभ पिछले दिनों विस में नेता प्रतिपक्ष गुलाब चंद कटारिया ने किया। विशिष्ट अतिथि स्वास्थ्य विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. जुल्फिकार काजी, आरएनटी मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. लाखन पोसवाल , पूर्व प्राचार्य डॉ. एस.के. कौशिक, एमबी चिकित्सालय अधीक्षक डॉ. आर.एल.सुमन थे। डॉ. सुनील चुघ ने बताया कि रियासती दर पर जांच कर मरीजों को रिपोर्ट भी सीधे मोबाइल पर भेजने की सुविधा की गई है। इस अवसर पर मुख्य रेडियोलॉजिस्ट डॉ.एन.सी. शर्मा, मुख्य पैथोलॉजिस्ट डॉ.एस.एस सुराना व मुख्य माइक्रोबायोलॉजिस्ट डॉ. एस. के मेहरा आदि उपस्थित थे। स्वागत डॉ. कल्पना चुघ ने किया।

ब्रेन हेमरेज पर 'नेक्सटेन्ट' का प्लेसमेंट

उदयपुर। पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल के पेसिफिक सेन्टर ऑफन्यूरो साइंसेस में ब्रेन हेमरेज मरीज की धमनी में दक्षिणी राजस्थान की पहली नेक्सटेन्ट डिवाइस लगाकर जीवनदान दिया गया। मरीज के नेक्सटेन्ट डिवाइस प्लेसमेंट में मस्तिष्क एवं लकवा रोग विशेषज्ञ डॉ. अतुलाभ वाजपेयी, डॉ. रमाकांत, डॉ. अखिलेश का सहयोग रहा। 62 साल की महिला को मस्तिष्क में तेज दर्द, उल्टी, घबराहट के चलते परिजन पेसिफिक सेन्टर ऑफन्यूरो साइंसेस लाए थे। डॉ. वाजपेयी को दिखाया तो जांच में रोगी के मस्तिष्क में ब्रेन हेमरेज पाया गया। डॉ. वाजपेयी ने स्पष्ट किया कि उपचार की नवीनतम तकनीक नेक्सटेन्ट डिवाइस से गुब्बारे को बंद किया गया।

नीरजा मोदी स्कूल में ग्लोबल कार्निवल

उदयपुर। नीरजा मोदी स्कूल में गत दिनों दो दिवसीय निशुल्क ग्लोबल कार्निवल सम्पन्न हुआ। चेयरपर्सन डॉ महेंद्र सोजतिया ने बताया कि इस कार्निवाल में भारत सहित इटली, इजिप्ट, जापान देशों की कला, संस्कृति, वेशभूषा, अध्ययन, अध्यापन, खानपान के साथ ही इन देशों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित किए गए। विभिन्न आयामों का सचीव चित्रण किया गया।

मंदिर मंडल में पालीवाल सदस्य

नाथद्वारा। राज्य सरकार ने श्रीनाथजी मंदिर मंडल के नए बोर्ड में मिराज समूह के चेयरमैन मदन पालीवाल को तीन वर्ष के लिए सदस्य मनोनीत किया है। बोर्ड में कुल 10 सदस्य नियुक्त किए गए हैं।

सर्वऋतु विलास पार्क में पौधरोपण

उदयपुर। सर्वऋतु विलास पार्क में डिप्टी मेयर एवं परामर्शदाता पारस सिंघवी के नेतृत्व में पौधरोपण हुआ। सर्व ऋतु विलास कॉलोनी के अध्यक्ष रविंद्र सुराणा ने बताया कि कॉलोनी के पार्क में 51 पौधे लगाए गए। इस मौके पर प्रिया कोठारी, उषा कोठारी, कोषाध्यक्ष अनीता हाथी, विकास समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ संपन कोठारी, डॉ संपत श्यामसुखा आदि उपस्थित थे।

चित्तौड़ा का सम्मान

उदयपुर। सूक्ष्म कृतिकार चंद्र प्रकाश चित्तौड़ा को लोकजन सेवा संस्थान द्वारा प्रमाण पत्र एवं पुस्तिका भेंट कर स्व: नंदलाल शर्मा लोकजन सूक्ष्मकला सम्मान से सम्मानित किया गया। सहसंयोजक जिग्नेश शर्मा ने बताया कि इस अवसर पर चित्तौड़ा द्वारा निर्मित महाराणा भूपाल सिंह की उपलब्धियों वाली सूक्ष्म पुस्तक का विमोचन भी किया गया।

दीक्षित प्रदेश महामंत्री नियुक्त

उदयपुर। विप्र सेना जोन 1 में प्रदेश अध्यक्ष दिनेश शर्मा ने गोविंद दीक्षित को संगठन में प्रदेश महामंत्री नियुक्त किया है। उन्होंने दीक्षित को उपरणा ओढ़ाकर उनका स्वागत करते हुए कहा कि संगठन को उनके सहयोग से मजबूती मिलेगी।

वाटिका संचालक संघ के चुनाव

उदयपुर। उदयपुर वाटिका संघ के गत दिनों भैरव बाग में सम्पन्न चुनाव में राजकुमार टाया व सुधीर चावत को संरक्षक मनोनीत किया गया। जब कि देवनारायण धायमाई अध्यक्ष विश्वजीत जैन सचिव व प्रवीण मेनारिया को सर्वसम्मति से कोषाध्यक्ष चुना गया। उप महापौर पारस सिंघवी को मुख्य संरक्षक मनोनीत किया गया।

देवनारायण धायभाई

विश्वजीत जैन

राजकुमार टाया

खिलवानी सवीना मंडी व्यापार मंडल के अध्यक्ष

उदयपुर। श्री सब्जी फरूट व्यापारी एसोसिएशन सवीना मंडी की वार्षिक बैठक में मुकेश खिलवानी को लगातार चौथी बार अध्यक्ष पद के लिए निर्विरोध चुना गया। बैठक में महासचिव धर्मवीर सलूजा, उपाध्यक्ष महेश नारवानी, नानक राम कालरा, कोषाध्यक्ष सुरेश रामेजा आदि मौजूद थे।

आजादी का अमृत महोत्सव

निम्बाहेड़ा (प्रब्यू) खान सुरक्षा महानिदेशालय के निर्देशन में गत दिनों जे.के.सीमेंट द्वारा माल्याखेड़ी में 'आजादी का महोत्सव' कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें स्वतंत्रता आन्दोलन में शहीदों व स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को याद करते हुए उन्हे श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। खदान प्रमुख मनीष तोषनीवाल के सानिध्य में गांव में करीब एक हजार फलदार पौधे भी किसानों के खेतों पर लगाए गए। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाप्रबंधक दिलीप कुमार धाकड़ ने की। इस अवसर पर जे.के.सीमेंट के उपमहाप्रबंधक पीयूष आमेटा, प्रबंधक राजेश जोशी, सुधीर नागोरी, भूपेंद्र लोधी, प्रबंधक सुधीर नागोरी, कुमारी खूशबू और बड़ी संख्या में खदान कर्मचारी भी उपस्थित थे।

हलवाई नगर के लिए ज्ञापन

उदयपुर। उदयपुर हलवाई केटरर्स विकास समिति ने उदयपुर में हलवाई नगर की स्थापना के लिए नगरविकास प्रन्यास सचिव अरूण हासिजा को एक मांग पत्र सौंपा। सभांगीय अध्यक्ष हरीश भट्ट ने बताया कि समिति संस्थापक देवीलाल गुर्जर के नेतृत्व में मुकेश माधवानी, विकास जोशी, संजय गुप्ता आदि मौजूद रहे।

सामोता अध्यक्ष, चित्तौड़ा महासचिव

उदयपुर. यूनिवर्सिटी रोड व्यापार परिषद के द्विवार्षिक चुनाव संस्थापक मदनलाल मूंदड़ा एवं चेंबर ऑफकॉमर्स उदयपुर डिवीजन के प्रचार प्रसार मंत्री राकेश जैन के सानिध्य में हुए। चुनाव अधिकारी मनोहर चांगवाल ने बताया कि कुंदन सामोता अध्यक्ष, सुभाष चित्तौड़ा महासचिव एवं महेंद्र बाबेल कोषाध्यक्ष पद पर निर्विरोध निर्वाचित हुए। साथ ही कमल भावसार, धर्मेंद्र चित्तौड़ा को उपाध्यक्ष एवं सुरेश रावत को सचिव मनोनीत किया गया।

शोक समाचार

उदयपुर। श्री सज्जन सिंह जी मेहता (एल.के.प्लास्टिक्स) का 7 फरवरी को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती कंचनदेवी, पुत्र वधू सारिका (स्व. ललित जी) पुत्री मनीषा जैन, पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र सहित सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती मदन देवी जी छाजेड़ धर्म पत्नी श्री तेजसिंह जी छाजेड़ का 20 फरवरी को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक विह्वल पति, पुत्र गोविंद, सीए महेन्द्र, पुत्रियां कौशल्या तलेसरा, ललिता कोठारी व निशा कोठारी तथा उनका समृद्ध व सम्पन्न परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। दी उदयपुर ट्रांसपोर्ट ऑर्गेनाइजेशन के पूर्व अध्यक्ष श्री इन्द्रसिंह जी मेहता का 26 फरवरी को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक विह्वल धर्मपत्नी श्रीमती ललिता देवी, पुत्र संजय, पुत्रियां कैलाश बाफना व श्रीमती करूणा बम्ब सहित सम्पन्न व समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री जीवन सिंह जी खमेसरा का 10 मार्च को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्र मनीष खमेसरा, पुत्री श्रीमती रंजना कोठारी, पौत्र, पौत्री, दोहित्र व भाई-भतीजों का समृद्ध एवं सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

आमेट। श्री विजय सिंह जी राव (91) का 10 मार्च को अपने पैतृक निवास अईड़ाना ग्राम में स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र नारायण सिंह, प्रेमसिंह, मदन सिंह, दिलीप सिंह व प्रह्लाद सिंह, पुत्री श्रीमती कृष्णा कंवर सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व भाई- भतीजों का वृहद परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री राजेन्द्र जी पालीवाल उथनोल वाला (अर्चना अगरबत्ती) का 21 फरवरी को अकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती इन्द्रा देवी, पुत्र सौरभ, लोकेन्द्र, पुत्रियां श्रीमती राखी, श्रीमती शीतल व श्रीमती मीनाक्षी सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। स्व. पालीवाल अपने पिता स्व. श्री रूप शंकर जी व भाई स्व. सुरेश जी की भांति समाज सेवा के कार्यों में सदा अग्रणी रहे। उनके निधन पर पालीवाल समाज सहित विप्र संगठन, विभिन्न राजनैतिक दलों व सामाजिक संगठनों ने गहरा दु:ख व्यक्त किया है।

वल्लभनगर। श्री देवीलाल जी वागावत का 2 मार्च को निधन हो गया। वे 87 वर्ष के थे। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती कजी बाई, पुत्र महेश, अरूण व यशंवत, पुत्रियां श्रीमती मंजू डांगी, श्रीमती कला कोठारी, राज कुमारी लोढ़ा, श्रीमती उषा खोखावत व रेखा सिंघवी तथा उनका सम्पन्न व समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती जतन देवी जी पोरवाल (92) का 21 फरवरी को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे शोक सन्तप्त पुत्र ललित कुमार, डॉ.हेमन्त व डॉ. विनोद पोरवाल, पुत्रियां श्रीमती शशि कोठारी, श्रीमती उषा गुप्ता एवं श्रीमती मंजू डूंगरपुरिया तथा उनका भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। राजस्थान विद्यापीठ के जनसम्पर्क अधिकारी श्री धनश्याम सिंह जी परिहार (50) का 21फरवरी को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती मधु, माता-पिता श्रीमती कंचन कंवर-भैरवसिंह, पुत्र कर्तिकेय, पुत्री सारा सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। वे अनेक समाज सेवी संगठनों से जुड़े थे। उनके निधन पर राजनैतिक दलों के कार्यकर्ता-नेताओं, विद्यापीठ विश्व विद्यालय के कुलपति प्रो. एस.एस सारंगदेवोत रजिस्ट्रार, हेम शंकर दाधीच, लेखाधिकारी हरीश शर्मा, कुल पति के निजी सचिव के.के.कुमावत, प्रत्यूष के सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी सहित पत्रकार संगठनों ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

उदयपुर। वयोवृद्ध (105) उद्योगपति समाज सेवी श्री कन्हैयालाल जी टाया का 20 फरवरी को देह परिवर्तन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय अमृतलाल टाया, राजकुमार, अनुराज, अभिराज टाया, धर्मपुत्री बाल ब्रम्ह चारिणी मधुकांता जैन, विनोद जैन, ऋषभ जैन, प्रधुम्न जैन सहित विशाल एवं समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। हाजीयानी कुलसुम बाई धर्मपत्नी हाजी कमरूद्दीन भाई मोटागाम वाला का 21 फरवरी को इन्तकाल हो गया। वे अपने पीछे गमजदा शब्बीर हुसेन, खुर्शीद अली, फिरोज अली, शुजाउद्दीन हबीब, एवं अब्बास अली सहित सम्पन्न मोटागाम वाला परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री देवीलाल जी मेहता का 26 फरवरी को निधन हो गया। वे 78 वर्ष के थे। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र उमेश मेहता, पुत्रियां श्रीमती उषा नलवाया, श्रीमती अरूणा भंडारी व श्रीमती अर्चना कच्छारा सहित भाई-भतीजों, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का सम्पन्न व समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती विमला जी शर्मा (दाधीच) का 9 फरवरी को अकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोक सन्तप्त पुत्र विनय कुमार, एडवोकेट विजय, पुत्री डिम्पल व पौत्र-पौत्रियों दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री बसन्तीलाल जी चावत का ।। फरवरी को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती कोमल देवी पुत्र दिलीप, मनीष, पुत्री कृति भण्डारी व भाई भतीजों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

JK Cement LTD.
Cementing the Nation since 1974
Happy Holi
JK SUPER CEMENT
JK SUPER STRONG
JK WHITE CEMENT
JK WALL PUTTY
GRIP
PrimaxX
JK Super Plast

चेटीचंड की हार्दिक शुभकामनाएं
VNP
vijeta
Namkeen
Perfect rising snacks.
VNP
VIJETA NAMKEEN PRODUCTS
Main Road Bhupalpura, Udaipur-313001, Rajasthan INDIA, Contact No. : 0294-2415817, Mob. : 09828555227
E-mail ID. : vijetanamkeen@gmail.com

(IS/ISO 22000:2005 प्रमाणित संगठन)

सरस

अजमेर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि.

राजस्थान प्रदेश के लोकप्रिय
गरीब मजदूर के मसीहा
एवं पशु पालक हितेषी

समस्त प्रदेशवासियों को
होलीका दहन, धुरेंडी, 'गुड़ी पड़वा, नववर्ष विक्रम संवत ', महावीर जयंती, शीतला सप्तमी, गणगौर पर्व, बाबा साहब अंबेडकर जयंती एवं गुड फ्राइडे की
हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

माननीय अशोक गहलोत जी
मुख्यमंत्री, राजस्थान

प्रदेश के दुग्ध उत्पादको की मांग पर
मुख्यमंत्री दुग्ध उत्पादक संबल योजना
के अंतर्गत आगामी बजट में 1 अप्रैल 2022 से 2 रुपए के स्थान पर 5 रुपए प्रति लीटर अनुदान देने की घोषणा पर अजमेर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ के चेयरमैन श्री रामचंद्र चौधरी के नेतृत्व में जिले सहित राजस्थान के अन्य क्षेत्रों से भी हजारों की संख्या में पशु पालक एवं किसानों द्वारा आभार व्यक्त करने हेतु जयपुर में मुख्य मंत्री निवास पर पहुंच कर सम्मान एवं आभार प्रकट किया

आभार में झलका आत्मीय भाव
मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत हुए अभिभूत

इस अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री जी ने श्री रामचंद्र चौधरी को सरस डेयरी उत्पादन में निरंतर दिए जा रहे सुझाव एवं मार्गदर्शन के लिए उनकी प्रशंसा की।

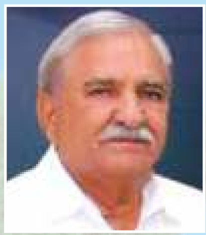

रामचन्द्र चौधरी
अध्यक्ष

उमेशचन्द्र व्यास
प्रबंध संचालक

सेहत और स्वाद ...
सरस के साथ...

सम्पर्क : विपणन विभाग, अजमेर डेयरी, अजमेर फोन : 0145-2440013/2440027

UNIQUE INFRA
ENGINEERING INDIA PVT. LTD.
Since 1994
'AA' CLASS CONTRACTORS
ABOUT US
Since 1994, we are working as Contractors in various fields of Civil Construction work i.e. Industrial Projects, Residential & Commercial Complex, Hotels & Resorts, Institution & Campus Development, Real Estate Projects, Road and Bridge Projects.
R.S YADAV GROUP
Recent Success
Successfully handed over 3 Medical College and Hospital Projects at Udaipur, Raj. during Covid-19 Pandemic.
R.S YADAV GROUP
UNIQUE INFRA ENGINEERING INDIA PVT. LTD.
Unique NRG RMC
मंगलमूर्ति Residency
Mount Litera Zee School UDAIPUR
2ND, FLOOR - MAHAVEER COMPLEX, 5-C MADHUBAN, UDAIPUR (RAJ.)
www.uniqueinfra.co.in

Rajasthan State Mines and Minerals Limited

(A Premier PSU of Government of Rajasthan)

CIN U14109RJ1949SGC000505
GSTIN 08AAACR7857H1Z0

Mining Prosperity from Beneath the Surface

OUR PRODUCTS

Rock Phosphate

- + 30% P_2O_5 Crushed Chips (-12mm size)
- + 31.5% P_2O_5 Crushed Chips (-12mm size)
- + 31.54% P_2O_5 Beneficiated Concentrate (200 mesh size)
- + 18% P_2O_5 Powder (RAJPHOS) An Organic Direct Application Fertilizer

Lignite

- Lignite with calorific value of 2800-3200 Kcal/Kg.
- GOI has allotted Lignite blocks having reserve of more than 400 million tons

Gypsum

- Run Of Mine (ROM) Gypsum-used in Cement industries and land reclamation
- Run of Mine (ROM) Selenite- used for manufacture of Plaster of Paris & Ceramics

Limestone

- +95% $CaCO_3$ Low Silica<1.5%, Steel Melting Shop (SMS) grade Limestone

Power

- 106.3 MW capacity Wind Energy Project in operation, with generating capacity of 1650 Lac KWH (units) grid quality clean power per year.
- Projects registered under CDM, UNFCCC (Kyoto Protocol) for CERs earnings.
- 5 MW Solar project also in operation at Gajner, Bikaner

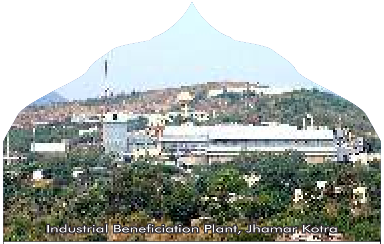
Industrial Beneficiation Plant, Jhamar Kotra

Panoramic View of Giral Lignite Mines, Barmer

Ariel View of Solar Plant at Bikaner

Limestone Crushing Plant at Sanu Mines, Jaisalmer

Wind Energy Farm at Bada Bagh, Jaisalmer

OUR STRENGTHS

- Consolidating leadership in Fertilizer, Steel, Cement, and Power Sector.
- One of the Biggest Revenue Contributing PSU to state exchequer.
- Only Producer of SMS grade Limestone & largest producer of natural Gypsum & High Grade Rock Phosphate in the country.
- Achieved unprecedented growth in Productivity, Turnover, Revenue and Commanding Share in Industrial Mineral Sector of India.
- Established rare distinction of being the first PSU in India to earn foreign exchange by successfully trading Carbon Credit in International Market.
- Taking care for society under CSR. Contribution for Health & Medical, Education, Water Supply, Infrastructure and Community Development, Environment Protection and Plantation in Project Districts.

OUR PROJECTS

Petroleum & Natural Gas

- Wholly owned subsidiary company formed in the name of Rajasthan State Petroleum Corporation Limited for carrying out activities in Petroleum & Natural Gas Sector in Rajasthan.
- A joint venture Company in the name of Rajasthan State Gas Limited with joint venture partner GAIL Gas Ltd has been incorporated for developing City Gas Distribution network in Rajasthan.

Venture to mine out Lignite & Sand

- A joint venture company M/s Barmer Lignite Mining Company Limited has been incorporated with joint venture partner Rajwest Power Limited wherein RSMML hold 51% equity.
- A newly formed strategic business unit has been established to explore business opportunities in sand.

CORPORATE OFFICE

4, Meera Marg, Udaipur - 313 004, Tel. : +91-294-2428763-67, Fax : +91-294-2428770, 2428739, e-mail: info.rsmml@rajasthan.gov.in

REGISTERED OFFICE

C-89/90, Janpath, Lal Kothi Scheme, Jaipur - 302 015, Tel. : 0141-2743734, Fax : 0141-2743735

Visit us at www. rsmm. com